





मुनि श्री बल्लभ विजयजी जन्म स० १९२६,

जन्म-वन्नादा, तालि-श्रीमाली, पीना-दीपवन्, माना-उन्नाडा  
दीपा, स ४४ म गधणपुर

श्रीम मन्नापायाय श्री लक्ष्मीविजयजीके पित्र्य - श्री हयविजयजीके पित्र्य

पञ्चम इनके उपदेशमे पुस्तक भटार आत्मानन्द जन पत्रिका, आत्मानन्द जन पाठशाला,  
पाइ फन् आदिकी स्थापना हुइ

पञ्चादेश तीर्थस्तवनावली आदिके कर्ता  
इस ग्रंथके सशोधन कर्ता





॥ उपाध्याय श्री मोहनलालजी महाराज  
 श्री वीकानेर जैन लक्ष्मी मोहन पाठशाळा ॥  
 अधिपति





॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

॥ खरतरगद्य, तपगद्यादि सर्व जैन उपयोगी ॥

॥ ❀ ॥ पांच प्रतिक्रमण ॥ ❀ ॥

मूल सूत्र जूदी जूदी विधिसहित

॥ कलकत्ता ॥ ॥ बीकानेर ॥ ॥ मुम्बई ॥

॥ ❀ ॥ जैन लक्ष्मीमोहन शाखा तरफसें ॥ ❀ ॥

पुज्य महोपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानजी गणीकेशिष्य

उपाध्याय श्री मोहनलालगणीनं

संशोधन करके

मुंबईमें

‘ज्ञानसागर’ मुद्रायंत्रमें उपाके

प्रकाशित कियाहै

बीर स। २९३०

विक्रम स। १९६०

सं। १९०३

कलकत्ता		सुंवाई
जैनलक्ष्मी	॥ पांच प्रतिक्रमण सूचीपत्र ॥	मोहन
विद्याशाला.		पाठ शाला.

॥❀॥ संख्या ॥❀॥      ॥❀॥ प्रकरण ॥❀॥      ॥ पत्रांक ॥

॥ १ ॥ लँकार वर्णन पंच परमेष्ठी नमस्कार । ....	१
॥ २ ॥ गुरु नमस्कार, दीर्घाक्षरै सरस्वती नमस्कार । ....	२
॥ ३ ॥ स्वर, व्यंजन, युक्तादि वर्ण माला । ....	३
॥ ५ ॥ शिख्यावाक्य दूहा. ( वाक्यमंजरी ) ....	४
॥ ६ ॥ संधिसुत्र, सिद्धोवर्णः समाम्नायः । ....	५
॥ ७ ॥ हितोपदेश, अर्जुनो जगवंतं अर्थसहित ....	६
॥ ८ ॥ त्रिंशुं जिन नाम । ....	८
॥ ९ ॥ श्री नवकार मंत्र, जयजुसामि० प्रतिक्रमण सर्वपाठ ....	९
॥ १० ॥ माधु प्रतिक्रमण, चत्तारि मंगल सूत्र । ....	२०
॥ ११ ॥ श्रावक प्रतिक्रमण, बंदित्तू सूत्र । ....	२५
॥ १२ ॥ नवकारस्यादि १० पञ्चक्खाण । ....	२८
॥ १३ ॥ दश पञ्चक्खाण आगारार्थः । ....	३३
॥ १४ ॥ दश पञ्चक्खाण आगारसंख्या गाथा ....	३६
॥ १५ ॥ मुहपत्ती पम्पिलेहण, सुत्र अर्थ साचो सरदहुं । ....	३६
॥ १६ ॥ थापनाचार्यकी १३ पम्पिलेहण बोल । ....	३७
॥ १७ ॥ आलोयण, आजूणा चौपहर रात्री तथा दिवश । ....	३७
॥ १८ ॥ पक्खी, चौमाशी, संवत्तरी, वृद्ध अतीचार । ....	३८
॥ १९ ॥ जयतिहुण वत्तीशी, श्रीअजय देवसूरी कृत । ....	४९
॥ २० ॥ परकीसूत्र, तित्थंकरेय तित्थे । ....	५३
॥ २१ ॥ पाक्षिक खामणा पाठ । ....	६९

॥ २३ ॥ ( साते स्मरण ) अजियंजिय सब्जयं ?	....	...	७१
॥ २३ ॥ उल्लासिकम नक्ख निग्गय पहा० २....	....	...	७४
॥ २४ ॥ नमिज्जण पणय सुरगण, स्तोत्र ३ ।	..	...	७५
॥ २५ ॥ तंजयत्त जए तित्थं० ॥ ४ ॥	...	...	७६
॥ २६ ॥ मय रहियं गुण गण स्यण सायरं ५	...	...	७८
॥ २७ ॥ सिग्घ मवहरत्त विग्घं० स्तोत्र ६ ।	....	...	७९
॥ २८ ॥ उवसग्ग हरं पासं० स्तोत्र ७ ।....	....	...	७९
॥ २९ ॥ लघुशांति, शांतिं शांति निशांतं ।	....	...	८०
॥ ३० ॥ बन्नी शांति, भोभो भव्याः शृणुतवचनं० ।	....	...	८१
॥ ३१ ॥ दूजकीथुई, ( महीमंणं पुन्नसोवन्नदेहं )	....	...	८४
॥ ३२ ॥ पंचमीस्तुतिः, ( पंचानंतकसु प्रपंच० ) ।	..	....	८४
॥ ३३ ॥ अष्टमी स्तुतिः, ( चण्डीशे जिनवर० ) ।	....	...	८५
॥ ३४ ॥ सर्वदिन स्तुतिः ( मूरति मनमोहन० ) ।	....	...	८५
॥ ३५ ॥ दशमीस्तुतिः, ( अश्वशेन नरेसर० ) ।	....	...	८५
॥ ३६ ॥ एकादशी स्तुतिः, ( अरस्य प्रब्रज्या० ) ।	....	...	८६
॥ ३७ ॥ चतुर्दशी स्तुतिः, ( द्वे द्वे कि धपमप० ) ।	....	...	८६
॥ ३८ ॥ चैत्री पूनम स्तुतिः, ( सेजुंगगिरिनमियै० ) ।....	...	...	८७
॥ ३९ ॥ नवपदजंजी स्तुतिः, ( निरुपम सुखदायक० ) ।	...	...	८७
॥ ४० ॥ पर्युषणापर्व स्तुतिः, ( बलि बलि हृध्याजं० ) ।	....	...	८८

॥ ❀ ॥ तिथोंकास्तवन ( सरू ) ॥ ❀ ॥

॥ ४१ ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधरस्वामि ।	...	....	८८
॥ ४२ ॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेसर जेटियै ) ।...	...	....	८९
॥ ४३ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं ।	....	...	९०
॥ ४४ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय ( पंचमी वृक्षस्तवन ) ।	...	....	९१
॥ ४५ ॥ पांचमि तप तुमे करोरे प्राणी ।	....	...	९३
॥ ४६ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजे ।	...	...	९३
॥ ४७ ॥ पास जिनेसर जगति लोए ।	....	...	९४

॥ ४८ ॥ समवसरण बैठा भगवंत । ....	....	....	....
॥ ४९ ॥ तुं मेरे मनमें प्रभु तुं मेरे दिलमें । ....	....	....	....
॥ ५० ॥ सास्वता असाधता जिन विबनमस्कारस्तवन	....	....	....
॥ ५१ ॥ चूलो मन जलराकांई जये ( सिझाय )	....	....	९८
॥ ५२ ॥ कनवा फलने क्रोधना ( क्रोध सिझाय	....	....	९८
॥ ५३ ॥ जगचूनामणिचूल ( पोसह सिझाय ) ।	....	....	९९
॥ ५४ ॥ निस्सिहीर ( राई संथारा सिझाय ) ।	....	....	१०१
॥ ❀ ॥ सामायक पोशादि श्राद्ध अहोरात्रकृत्य ॥ ❀ ॥			
॥ ५५ ॥ प्रजात सामायक विधि: । ....	....	....	१०२
॥ ५६ ॥ राई प्रतिक्रमण विधि: । ....	....	....	१०३
॥ ५७ ॥ सामायक पारण विधि: । ....	....	....	१०७
॥ ५८ ॥ संध्याकाल सामायक ग्रहण विधि: । ....	....	....	१०८
॥ ५९ ॥ देवशी प्रतिक्रमण विधि: । ....	....	....	१०९
॥ ६० ॥ अठ पुहरी पोसह विधि: । ....	....	....	१११
॥ ६१ ॥ पांचशक्रस्तवे देव वंदन विधि: । ....	....	....	११३
॥ ६२ ॥ पंचरकाण पारण विधि: । ....	....	....	११४
॥ ६३ ॥ राई संथारा विधि: । ....	....	....	११७
॥ ६४ ॥ पोसह पारण विधि । ....	....	....	११७
॥ ६५ ॥ दिवश चौपुहरी पोसह विधि: । ....	....	....	११८
॥ ६६ ॥ रात्रि संबंधी चौपुहरी पोसह विधि: । ....	....	....	१२०
॥ ६७ ॥ चौबीश २४ थंमिजा पहिलेहण पाठ । ....	....	....	१२१
॥ ६८ ॥ चौबीश थंमिजा कहां २ करना । ....	....	....	१२१
॥ ६९ ॥ परकी ( चौमाशी ) संबन्धरी प्रतिक्रमण विधि: ....	....	....	१२२
॥ ७० ॥ राई प्रतिक्रमणमें ढम्माशीतप चिंतवन विधि: ....	....	....	१२४
॥ ७१ ॥ साधू श्रावक ( प्रतिक्रमणहेतू ) अर्थ ( कारण ) ....	....	....	१२६
॥ ७२ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्यवंदन ( जय २ त्रिजुवन ) । ....	....	....	१२९
॥ ७३ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तवन ( पूर्व विदेह पुख लावती ) ।	....	....	१२९

॥ ७४ ॥ श्री सीमंधर साहिबा वीनतनी० स्तवन	...	....	१२९
॥ ७५ ॥ जय जय नाजिनरिंदनंद । सिद्ध गिरी चैत्य०	....	....	१३०
॥ ७६ ॥ आज पुंर गिरि जेटिया ( सिद्धगिरीस्त०	....	...	१३०
॥ ७७ ॥ सिद्धाचल गिरी जेट्यारे ) धन्यजागहमारा	..	...	१३०
॥ ७८ ॥ श्री आदिजिन चैत्यवंदन	..	.. ....	१३१
॥ ७९ ॥ श्री शांतिजिन दोचैत्यवंदन	....	... ....	१३१
॥ ८० ॥ श्री नेमिजिन चैत्यवंदन	..	.. ....	१३१
॥ ८४ ॥ श्री पार्श्वजिनका चार चैत्यवंदनजूदा २	...	....	१३२
॥ ८६ ॥ श्री महावीरस्वामीका दोचैत्यवंदन	...	...	१३३

### ॥ ❀ ॥ अथ तपगठ विशेष विधिसंग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ८७ ॥ पंचेदियसंवरणो० स्थापनागाथा ।	...	..	१३३
॥ ८९ ॥ इत्तामि खमासमणो ( इठकारसुहराई ) ।	....	....	१३३
॥ ९० ॥ सामाडय वयजुत्तो । सामायक पारवागाथा ।	...	...	१३३
॥ ९१ ॥ जगचिंतामणिचैत्यवंदन ( जयवीरराय )	...	...	१३४
॥ ९४ ॥ कखाणकंदं ( विशाल लोचन ) ( जगवानहं )	...	...	१३५
॥ ९५ ॥ अतीचारकी आठगाथा ।	...	....	१३५
॥ ९८ ॥ सुत्रदेवता ( खेत्रदेवता ) ( स्तुति ) ( अट्टाईजेसु ) ।	...	...	१३६
॥ १०० ॥ वरकनक ( सागरचंदो० ) पोसहपारवागाथा	..	...	१३६
॥ १०१ ॥ जरहेसर बाहुबली, अजैकुमारो० सिंहाय ।	....	....	१३७
॥ १०२ ॥ मन्ह जिणाणं आणं, सिंहाय ।	..	...	१३७
॥ १०३ ॥ सकल तीर्थ वंदुं कर जोरु० ।	..	...	१३८
॥ १०४ ॥ सकलार्हत् प्रतिष्ठान, ( पख्खी वृद्ध स्तोत्र ) ।	..	...	१३९
॥ १०५ ॥ शांतिकरं शांतिजिणं ( शांतिकरस्तोत्र ) ।	....	...	१४०
॥ १०६ ॥ सीमंधर परमात्मा० ( श्री सीमंधर जगधणी ) ।	..	...	१४१
॥ १०९ ॥ श्री परमात्मा० ( विमल कमल ) श्रीशेठुंजय चैत्य० ।	...	...	१४२
॥ १११ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर० ( आंखनियै रेमें आज ) ।	..	...	१४३
॥ ११३ ॥ सेठुंजा द्वितीय स्तवन ( पंचतीर्थ स्तुति ) ।	...	...	१४४

॥ ११४ ॥ पिनुजीर रै नाम जपुंदिनरातियां, नेमराजुल सि० ।	१४५
॥ ११५ ॥ आजुखो तूयानें सांधोको नहीरे, सि० । ....	१४५
॥ ११७ ॥ पंचतीर्थ चै० ( २ तिथको चै० ) । ....	१४६
॥ १२० ॥ पंचमी अष्टमी ( तथा ) एकादशीको चैत्यवंदन । ....	१४७
॥ १२२ ॥ श्रीसीमंधर जिनकी ( २ ) दोय स्तुति । ....	१४८
॥ १२३ ॥ दिन सकल मनोहर०, बीजकीस्तुति । ....	१४९
॥ १२४ ॥ श्रावण सुदि दिन०, पंचमी स्तुति । ....	१४९
॥ १२५ ॥ मंगल आठकरी०, ( ८ ) अष्टमी स्तुति । ....	१५०
॥ १२६ ॥ एकादशी अतिरुवनी । ( ११ ) एकादशी स्तुति । ....	१५०
॥ १२७ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरु शिखरे०, ( १४ ) स्तुति । ....	१५१
॥ १२८ ॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, स्तुति । ....	१५१
॥ १२९ ॥ महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी०, स्तुति । ....	१५२
॥ १३० ॥ सत्तर जेदी जिनपूजा०, पर्यूपण स्तुति । ....	१५२
॥ १३१ ॥ सामायक लेवा विधि । ....	१५२
॥ १३२ ॥ सामायक पारवा विधि । ....	१५३
॥ १३३ ॥ संध्याकाल, देवशी प्रतिक्रमण विधि १ । ....	१५३
॥ १३४ ॥ प्रजातकाले रात्रीप्रतिक्रमण विधि २ । ....	१५५
॥ १३५ ॥ पक्खी प्रतिक्रमण विधि ३ । ....	१५७
॥ १३७ ॥ चौमाशी ४ ( संबद्धरी प्रतिक्रमण विधि५ ) ....	१५८
॥ १३८ ॥ पमिलेहण करवानो विधि । ....	१५९
॥ १३९ ॥ पच्चक्खाण पारवानो विधि । ....	१५९
॥ १४० ॥ पांच शक्रस्तवे देववंदन विधि । ....	१७३
॥ १४१ ॥ ( २४ ) जिनचै०, थुई, स्त०, ( चौमाशी देव वंदन )	१७३

### ॥ ❀ ॥ अथ ढंद स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १४२ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां० । महावीर ढंद । ....	१५९
॥ १४३ ॥ वंजित पैर विविधपरें, श्री नवकार ढंद । ....	१६१
॥ १४४ ॥ सुखकारण नवियण०, श्री नवकारढंद । ....	१६२

॥ १४५ ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं आत्मरक्षाबंद । ....	१६३
॥ १४६ ॥ सेवो पास शंखेसरो ० । श्री पार्श्व जिन बंद । ...	१६३
॥ १४७ ॥ वीरजिनेसर केरोसीस, श्री गौतम बंद । ....	१६४
॥ १४८ ॥ आदिनाथ आदै०, शोलसतीनो बंद । ....	१६४
॥ १४९ ॥ शेहुंजरूपन समो सरया ( तीर्थमाला स्त० ) । ....	१६५
॥ १५० ॥ श्री राणपुरो रजियामणोरे राणपुरास्त० । ....	१६६
॥ १५१ ॥ पुख्खलवइ विजये जयोरे० सीमंधर स्त० । ....	१६७
॥ १५२ ॥ माता त्रिशला कूलावे पुत्र पालणे ( हालरियो ) ।	१६७
॥ १५३ ॥ निंदा मकरजो कोर्डनी पारकीरे ( सि० ) । ...	१६९

॥ ❀ ॥ आनंद घनजी कृत स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १५५ ॥ रूपन जिनेसर प्रीतम० ( पंथनो निहालुं बीजा ० ) ।	१६९
॥ १५७ ॥ संचव देवत धुर० ( अजिनंदन जिन० ) । ....	१७०
॥ १५९ ॥ सुमति चरणकज० ( शीतल जिनपति ० ) । ...	१७१
॥ १६० ॥ मनहुं किमही न वाजैहो कुंधुजिन म० । ....	१७२
॥ १६१ ॥ शाश्वता अशाश्वता जिन वृद्ध चैत्य० । ...	१८६
॥ १६२ ॥ शाश्वता २ जिनस्तुति ( तथा ) विधि । ...	१८८
॥ १६४ ॥ श्रीसिद्धगिरी स्त० ( श्री गिरनारजी स्तवन ) । ....	१८९
॥ १६५ ॥ आवो २ नें राज श्री अर्बुद गिरवर जइयै । ...	१९०
॥ १६७ ॥ श्री अष्टापदजी स्त० ( समेत सिखरजी स्त० ) । ....	१९१
॥ १६८ ॥ तोरणथी स्थ फेरियोरे लाल ( बारमाशो ) । ....	१९२
॥ १६९ ॥ ( अजीमगंजे ) श्रीनेमी नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ।	१९३
॥ १७० ॥ जीया चतुर सुजाण, नवपदके गुणगायरे । ....	१९४
॥ १७१ ॥ सद्गुण्या देवलोके रविशशि० । शाश्वता० । ....	१९४
॥ १७२ ॥ अपठराकरती आरती जिन आगे । ...	१९५
॥ १७३ ॥ मंदर जाणेंकी पूजन करनेकी विधि: ....	१९६



॥ कलकत्ता ॥

॥ बीकानेर ॥

॥ मुम्बई ॥

॥ ❀ ॥ श्री जैन लक्ष्मीमोहनशाला ॥ ❀ ॥

॥❀॥ विज्ञापन ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सर्व गुणग्राही धर्मरागी जैन सज्जनोंकों मालुम रहै कि में बहुत श्री संघके आग्रहसे यह पांच प्रतिक्रमण पुस्तक ठपाके प्रसिद्ध कराहै । इसमें खरतरगह तपगहका पांच प्रतिक्रमण परकीसूत्रादि संपूर्ण मूलपाठ जूदी जूदी विधि सहितहै । ( यद्यपि ) ( रत्नसागर मोहनगुणमाला प्रथमभाग ) अजी फेर मुम्बईमें तीसरी बेर ठपाके प्रसिद्ध कियाहै ( उसमें ) सर्व जैन साधु श्रावकोंके बारे मास, रात दिन, उपियोगमें आवै । ऐसा पोसा, पणि कमणा स्तवन, सिआयां, लावण्यां, पूजायां, आदि संपूर्ण रत्नवस्तुवोंका संग्रह किया हुवाहै ( जिसमें ) साढी आठसै पृष्ठ बीसहजार आसरे ग्रंथहै ॥ सर्वोपयोगी पुस्तक होनेसे, थोमे दिनोंमें दोयसे अठाईसे पुस्तक खपचूकीहै ( तथापि ) यह बनी पुस्तकहै ॥ पांचरुपिया लगताहे मा० म० १२ आ० ( इससेती ) सर्व पाठशालादिकमें प्रथम शिक्षक पाठकगणके पढने पढानेमें यह ठोटी पुस्तक बहुत उपियोगीहै निठरावल सवारुपियो मा० आ० ४

३ ( रत्नसागर दूसराभाग ) ठपा हुवा तैयारहै इसमें जैन लोकका जन्म विवाहादि मरण पर्यंत शोलै संस्कारादि सर्व जैनाचार ( तथा ) जैनइति हासहै ॥ निठरावल रु० १२।८। मा० ४

४ श्री जिनपूजा संग्रह—( इसमें ) विप्रज्जन पाठकोंकी बनाई जई अनेक राग रागणी सहित बारेमाश अठाई महोत्तवादिकमें अवश्य कराने लायक रसीली पूजावोंका संग्रह कियाहै रु० आ० मा०

११।४।४

५ स्तवन संग्रह ( इसमें ) ऊरती प्रजाके मनलायक रागरागणी सहित लक्ष्मी मोहन स्तवनमालाहै १०।४।॥

६ राई देवशी प्रतिक्रमण खरतर १०।६।॥

इत्यादि बहुतसी जैनपुस्तकपण ऊपर लिख्ये तीनों ठिकाणोंमें मिलतीहै जिसकों जहां सुबीता होय उहां लेकर अपना प्रथममंगलधर्म कृत्य करै करावै अनुमोदना करै ( तो ) अक्षय लक्ष्मी संपदा मुक्तिपदप्राप्तहोय श्री रस्तु ॥❀॥

॥श्रीः॥



( वा )

॥ मोहनगुणमाला ॥

॥ प्रथम ज्ञाग ॥

॥ मंगलाचरण ॥

॥ उँकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।

कामदं मोहदं चैव । उँकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ उँकार उदार अगम्म अपार संसारमें सार पदारथ नामी,  
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूपज्ञयो सबही सिरभूप सुधामी,  
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें जाकुं कियो धुर अंतरजामी, पंचही-  
इष्ट वसे परमिष्ट सदा ध्रमसी करे ताहि सिलामी ॥ १ ॥

नमो निसदीश नमायकेशीश जपो जगदीश सही सुखदाता,  
जाकी जगत्तमें कीरति जागत ज्ञागतिहे सब ईति असाता  
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद नमाएहें वृंद आनंद विधाता, धोरी  
धरम्मको धीर धराधर ध्यान धरे ध्रमसी गुणध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहमा नमस्कार ॥

॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय । सर्वज्ञोष्ठार्थ दायिने ।

सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ १ ॥

॥ महिमा जिणकी महिमें महिमें जिन दीनो महा इक  
ग्यान नगीनो, दूरजग्यो भ्रमसोतम देषत पूरजग्यो परकास  
नवीनो, देतहि देतहि दूनोवधै अरु खायोहि खूटत नाहिं खजीनो,  
ऐसो पसाय कियो गुरुराय तिणें ध्रमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥

॥ सरस्वती महानागे । बरदे कामरूपिणी । विश्वरूपी विशा-  
लाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । बीणा-  
पुस्तक धारिणी । हंसबाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरं सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा रागे आए  
लागे पाए जागे मोटी माई है, चंगी रंगी बीणा वावे रागे सारे  
रागे गावे हावे नावै सोनापावे ग्याता जाकुं गाई है, हंसी  
कैसी चाली चाले पूजी बंदी पीडा टाले लीला सेती लालेपाले  
सुद्धी बुद्धी दाई है, सोहेवानी नीकी बानी जाकुंग्यानी प्राणी  
जानी ऐसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याई है ॥ १ ॥

( स्वरवर्णः )

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ  
ए ऐ ओ औ अं अः

( व्यञ्जनवर्णः )

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड  
ड म ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ

म । य र ' ल व । श ष स ह । कः झः  
क का कि की कु कू के कै को कौ कंकः

कृ गृ तृ दृ ए मृ वृ शृ सृ ह

क्य ख्य ग्य ध्य च्य व्य ज्य व्य व्य एय त्य द्य  
ध्य न्य प्य भ्य म्य स्य ल्य स्य प्य स्य ह्य क्ष्य

क्र ग्र व्र ज्र त्र द्र प्र भ्र म्र व्र श्र ख्र झ

कृ ग्व एव त्व द्व ध्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्वं कृ

अ घ्न त्न प्र म्न श्र ण्न स्न क्म ग्म ध्म च्म

एम अ न्म इम ण्म स्म ह्य क्ष्म ॥ कं खं गं घं

अडक डख श्र उछ एट एठ एम एढ एण न्त न्थ न्द

न्ध न्न म्म ण्क स्क स्ख श्व इछ ए छ स्त स्थ स्प

ण्प स्फ क्क क्त्व ग्ग च्च छ व्र ज्ञ ज्ञ दृ त्त

त्थ दृ डु प्प ल्क ल्प ल्म ल्ल द्र द्र ग्द न्ध व्द

व्य ल्म क्त त्त त्क त्प त्स ॥

न्य न्ध न्ध्य न्य क्ष्य न्ह्य म्भ्य ल्क्य ष्य व्य

व्य स्त्य स्त्य न्त्य क्त्य ज्य स्त्व ।

त्क च्छ न्त न्द्र छू ख्र त्र ज्व पृ त्व स्त्व

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ( १० १०० १००० १०००० )

—॥ स्वस्ति श्री कृष्णब्रह्मस्था, णिन्द्रावहा स्युश्च स्वस्करा,  
—पृथ्वीभृद्वल्गु श्रेष्ठात्म, त्रम्पास्ते हृद्यज्ञप्तिदा ॥ १ ॥

( शिक्षा वाक्य )

॥ गुरु शुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं  
नैव कारणं ॥ १ ॥ विद्वत्त्वं नृपत्वं च । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे  
पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ पाण्डिते च गुणाः सर्वे । मूर्खे

दोषाहि केवलं । तस्मान्मूर्खे सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥  
 नक्षत्रचूषणं चन्द्रो । नारीणां चूषणं पतिः । पृथिव्या चूषणं राजा । विद्या  
 सर्वस्यचूषणं ॥ ४ ॥ माताशत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः । न  
 शोभते सज्जा मध्ये । हंस मध्ये बको यथा ॥ ५ ॥ लालयेत्पंच वर्षाणि ।  
 दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रं वदाचरेत् ॥ ६ ॥  
 वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खे शतान्यपि । एकचन्द्र स्तमो हन्ति । न च  
 तारागणादपि ॥ ७ ॥ अविद्यं जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा ।  
 पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वं शून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥ न च विद्या समो बंधु  
 न च व्याधि समो रिपुः । न चापत्य समः स्नेहो । न च दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥  
 किं तया क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन ।  
 यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥ उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न  
 शान्तये । पयः पानं जुजंगानां केवलं विषवर्धनं ॥ ११ ॥ मातृवत्परदारां-  
 श्व । परद्रव्याणि लोभ्रवत् । आत्मवत् सर्वचूतानि । विह्वलं धर्मबुद्ध्यः ॥ १२ ॥

## ॥ अथ वाक्यमंजरी ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिभ्यो नमः ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं  
 चिन्तयेत् । तदनन्तरं, हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं ।  
 परमेश्वरस्य पूजा विधेया ( देवः पूज्यः ) ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं  
 नास्ति, धर्मशास्त्रे सर्वं वर्तते । धर्मशास्त्र मृत्युंतं समीचीनं ॥ सरस्वती स्तोत्रं  
 सर्वीर्यं भवति । सद्यः प्रीतिजनकं भवति । इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः  
 प्रत्यय कारकं भवति ॥ कविता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरु-  
 समीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं भवति । तदा कवित्वमायाति ।  
 तस्मादादौर्गुण्यं ज्ञानं सम्पादनीयं । सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्वस्य  
 प्रियो भवति । विद्याहि परमं धनं । यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन  
 कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विद्या भवति । तस्मात् विद्यालाभाय श्रमो  
 यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ आलस्यं सर्वेषां दोषाणामा-  
 करः । अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति । धनं न लभन्ते । अलसानां  
 चिरमेव दुःखं । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ॥ योऽस्मानध्यापयति ।

सोऽस्माकं परम गुरुः । सहि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता ज-  
न्मदाताच द्वावेव समानौ । समं माननीयो च ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत् ।  
क्रोधवशेन परुषं प्रापते । ततः प्रहरेत् । क्रोधोहि महान् शत्रुः ॥ सर्वे पर-  
वशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ परहिं-  
सायां परापकारेच बुद्धिर्नकार्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ यथाशक्ति-  
परेषा सुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्मः ॥ अहंकारं परिहरेत् ।  
नाहंकारात् परोरिपुः ॥ संतुष्टस्य सदा सुखम् । आत्मनः सुखमन्विजेत् ।  
सन्तोषमूलं हि सुखम् ॥

## ॥ अथ सन्धिसुत्र ॥

सिद्धो वर्णः । समान्नायः । तत्र चतुर्दशादौ स्वराः दशसमाना । तेषां  
द्वौ द्वावन्यो । अन्यस्य सवर्णौ । पुर्व्वो ऋस्वः । परो दीर्घः । स्वरोवर्णः  
वर्ज्जोनामी । एकारादीनि सन्ध्यहाराणि । कादीनि व्यञ्जनानि । ते वर्गाः ।  
पञ्च पञ्च । वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ । शपसाश्च घोषाः । घोषवन्तोऽन्ये । अ-  
नुनासिकाः ङणनमाः । अन्तस्थाः यरलवाः । उष्माणः शपसहाः । अ-  
इति विसर्जनीयः । कः इति जिह्वा मूलीयः । पः इत्युपध्मानीयः । अं इ-  
त्यनुस्वारः । पूर्वपरयो रथोपलवधौ पदम् । अस्वरं व्यञ्जनं । परं वर्णनयेत् ।  
अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहण सिद्धिः ॥ इति संधौ-  
सूत्रतः प्रथमश्रवणः समाप्तः ॥

## ॥ हितोपदेसः ॥

—अर्कन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता । आ-  
चार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसि-  
द्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राधकाः । पञ्चेते परमेष्ठिनः  
प्रति दिनं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

## ॥ अर्थः ॥

( एते पञ्चपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः शुष्माकं मंगलं कुर्वन्तु ) । यह  
पञ्चपरमेष्टि निरन्तर श्रीसंवप्रते मंगलकरो । ( कैसे है पञ्चपरमेष्टि ) ( अ-

ज्ञानतो जगवंत इन्द्रमहिता ) । प्रथम परमेष्ठि । श्रीअरिहंत देवः । अष्ट-  
 कर्म शत्रुकुंहरणं ( सो ) अरिहंत कहियै । अरिहंत कैसे है । ( जगवंत-  
 ज्ञानवंत है । केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है । ( तथा ) जगशब्द-  
 के १४ अर्थ है ॥ जगोर्क ( सूर्य ) १ । ज्ञान २ । महात्म ३ । यश  
 ४ । वैराग्य ५ । मुक्ति ६ । रूप ७ । वीर्य ८ । प्रयत्न ९ । इडा १० ।  
 श्रीलक्ष्मी ११ । धर्म १२ । ऐश्वर्य १३ । योनि १४ । यह चवद्वै अर्थोंमेंसे ।  
 सूर्य १ योनि २ । दो अर्थ वर्जकर । १२ अर्थ जग शब्दका मिलै ( जि-  
 ससे ) जगवंत कहियै ( पुनः किंविशिष्ट ) फेर अरिहंत कैसे है ( इन्द्र-  
 महिता ( चौसठ इन्द्रोंके पूजनीक । द्वादशगुणें करी विराजमान है ( सो  
 द्वादश गुण कैसे ) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप । रोगादि रहित । प्र-  
 स्वेद मलादि रहित । सुगंध शरीर होय ॥ १ ॥ सासोस्वासकी कमलजैसी  
 सुगन्ध होय ॥ २ ॥ लोही मांस गायके दूध जैसा सपेद होय ॥ ३ ॥ आ-  
 हारनीहारकी विधि अदृश्यहोय । प्राणी देख सक्ते नहिं ॥ ४ ॥ ए च्यार  
 अतिसय गुणतो जन्मथकासे होय । ( शेषआठगुण ) केवल ज्ञान उत्पन्न  
 होणेंसे प्रगट होय । ( अशोकवृक्षः ) जगवन्तके शरीरमें । चारै गुणो  
 नंचो अशोकवृक्ष होय । जिसकी ढायां बैठणेंसे रोगसोकादिक दूर होय ॥ १ ॥  
 ( सुरपुष्पवृष्टिः ) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानूपर्यंत वर्षा करै । आका-  
 समें पडता सीधापडै विटनींचै रहै । पंषडी ऊपर रहै ॥ २ ॥ ( दिव्य-  
 ध्वनि ) योजनपर्यंत । देवता । मनुष्य । तिर्यच । सब जीव । अपणी २  
 जाषामें । यथावस्थित समजै ( जाणें ) जगवंत मेरी जाषामें उपदेस देते  
 है ॥ ( कहावी है ) एगाइं गिराणेंगे । संदेह देहिणं समंजित्ता । तिहुअण  
 मणुंसा संता । अरिहंता हुंतिमे सरणं ॥ १ ॥ ३ ॥ ( श्रामर ४ ) जग-  
 वंतके दोनुं पासे इन्द्रचामर ढालता रहे ॥ ४ ॥ ( आसनंच ५ ) जगव-  
 न्तके बैठणेंको । इन्द्रादिक रचित । फिटक रत्नमई सिंहासण रहे ॥ ५ ॥  
 ( जामंडलं ६ ) जगवन्तके पिठाडी जामंडल रहे ( जिसमें ) जगवंतके  
 च्यार मुख । च्यारुंदिश तरफ मालुम होय जगवंत तो पूर्वदिशा मुख  
 कर बैठे । आरे तीन दिशमे । जगवन्तके प्रतिबिंब इन्द्रादिक स्थापन

करे । परंतु जगवन्तके अतिशयसे । च्यारुंदिशे । वारेई परपदाकों । अ-  
पणोसन्मुख उपदेश देता मालूम होय ॥ ६ ॥ ( डुंडुजी ७ ) आकाशमें देव  
डुंडुजी बाजित वाजे ॥ ७ ॥ ( रातपत्रं ) जगवन्तके विहार काले । वा-  
स्थिति काले । हमेसां मस्तकपर । तीन ठत्र रहै ॥ ८ ॥ ( यह आठ  
गुण देवगणके किये होय ) ऐसे अरिहंत । देवाधिदेव । चौतीस अतिशय  
विराजमान । पैंतीस वचनगुण शोजित । एक हजार आठ लक्षणां-  
कृत । अठारै दूषण रहत । शांत दांत । कृपासागर । त्रैलोक्यनाथ । जग-  
त्रयके गुरु ( वर्तमानकाले ) महाविदेह खेत्रे । केवलज्ञान । केवलदर्शनसे ।  
लोकालोकका ज्ञाव देखते थके । पृथ्वीमंडलपर जव्य जीवुंके मनोरथ  
पूरण करते थके । विचरते है ( ऐसे ) अनंतगुणें सुसोजित । अरिहंत  
देव श्रीसंवमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ ( तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता )  
( दूसरे पदे ) सिद्ध महाराजको नमस्कार हुवो । ( सिद्ध महाराज कैसे है )  
अष्ट कर्म काष्टकों । शुक्लध्यान रूप अग्निसें जस्मकर सिद्धगतिकों प्रा-  
प्तजये ( ऐसे ) अनंत ग्यान । अनंतदर्शन । अनंत चारित्र । अनंत तप ।  
अनंत वीर्यसंयुक्त । जन्म जरा मरण रोग सोक जयादिकसे विप्रसुक्त ।  
चवठे राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत ज्ञाव । एक समयमें जाणते  
थके । देखते थके पिण आत्मगुणां में मग्न रहे है ( ऐसे ) सिद्ध महा-  
राज श्रीसंवमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ ( आचार्या जिनशासनोन्नति  
कराः ) ( तीसरा परमेष्टि ) श्रीआचार्य महाराजकों नमस्कार हुवो । ( सो  
कैसे है ) ( उत्तीस गुण करी विराजमान । मुक्तिमार्गके साधक । कर्म श-  
त्रुके विराधक । अबुध जीव प्रतिबोधक । कृमागुण जंडार । समदृष्टी ।  
तरण तारण । धर्मके धोरी । जिन सासनकी उन्नतिके करण हार ( ऐसे )  
पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंव में सदा मंगलकरो ॥ ३ ॥ ( पुज्या  
उपाध्यायका । श्रीसिद्धांत सुपाठका ( चौथा परमेष्टि । श्रीउपाध्याय महा-  
राजकों नमस्कार हुवो । ( सोकैसे है ) द्वादशांगी सुत्रार्थके जाणकार । नय  
निक्षेपा गमां पर्याय युक्त । सिद्धांतको पढाणेंवाले । ज्ञानचक्र देणेंवाले ।  
( ऐसे ) २५ गुण करी विराजमान । श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंवमें



सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ ( मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः ) ( पंचम परमेष्ठि )  
 सब साधु मुनिराज ( सो कैसे है ) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन  
 रत्नके आराधक है । पांचे सुमते सुमता । तीने गुप्तेगुप्ता । ढक्कायके पीहर  
 कुक्खी संबल । चारित्रपात्र । मोहमार्गके साधक । ( ऐसे ) सब साधु  
 मुनिराज । सत्ताईस गुणें करी सोजित । श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥  
 इति हितोपदेशः उन्नय श्रेयार्थम् ॥

## ॥ विभूजिन नामः ॥

( अतीत चौबीसी. )

- |                        |                        |                      |
|------------------------|------------------------|----------------------|
| १॥ श्रीकेवलज्ञानीजी ।  | ९॥ श्रीदामोदरजी ।      | १७॥ श्रीअनिलनाथजी ।  |
| २॥ श्रीनिर्वाणीजी ।    | १०॥ श्रीसुतेजनाथजी ।   | १८॥ श्रीयशोधरजी ।    |
| ३॥ श्रीसागरजी ।        | ११॥ श्रीस्वामीजी ।     | १९॥ श्रीकृतार्धजी ।  |
| ४॥ श्रीमहायशजी ।       | १२॥ श्रीमुनिसुब्रतजी । | २०॥ श्रीजिनेश्वरजी । |
| ५॥ श्रीविमलदेवजी ।     | १३॥ श्रीसुमतिनाथजी ।   | २१॥ श्रीशुद्धमतीजी । |
| ६॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । | १४॥ श्रीशिवगतीजी ।     | २२॥ श्रीशिवकरजी ।    |
| ७॥ श्रीश्रीधरजी ।      | १५॥ श्रीअस्तागजी ।     | २३॥ श्रीस्पन्दनजी ।  |
| ८॥ श्रीदत्तस्वामीजी ।  | १६॥ श्रीनमीश्वरजी ।    | २४॥ श्रीसंप्रतिजी ।  |

॥ इति अतीत चतुर्विंशति तिर्थ करेभ्यो नमः ॥

( वर्तमान चौबीसी )

- |                         |                       |                        |
|-------------------------|-----------------------|------------------------|
| १॥ श्रीरुषभदेवजी ।      | ९॥ श्रीसुविधिनाथजी ।  | १७॥ श्रीकुंथुनाथजी ।   |
| २॥ श्रीअजितनाथजी ।      | १०॥ श्रीशीतलनाथजी ।   | १८॥ श्रीअरनाथजी ।      |
| ३॥ श्रीसंभवनाथजी ।      | ११॥ श्रीश्रेयांसजी ।  | १९॥ श्रीमल्लिनाथजी ।   |
| ४॥ श्रीअग्निनन्दनजी ।   | १२॥ श्रीवासुपुज्यजी । | २०॥ श्रीमुनिसुब्रतजी । |
| ५॥ श्रीसुमतिनाथजी ।     | १३॥ श्रीविमलनाथजी ।   | २१॥ श्रीनमिनाथजी ।     |
| ६॥ श्रीपद्मप्रभुजी ।    | १४॥ श्रीअनन्तनाथजी ।  | २२॥ श्रीनेमनाथजी ।     |
| ७॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी । | १५॥ श्रीधर्मनाथजी ।   | २३॥ श्रीपार्श्वनाथजी । |
| ८॥ श्रीचंद्राप्रभुजी ।  | १६॥ श्रीशान्तिनाथजी । | २४॥ श्रीमहावीरजी ।     |

## ( अनागत चौवीसी )

- १॥ श्रीपद्मनाभजी । ९॥ श्रीपोष्टिल प्रनुजी । १७॥ श्रीसमाधिनाथजी ।  
 २॥ श्रीसूरदेवजी । १०॥ श्रीशतकीर्तिजी । १८॥ श्रीसंबरनाथजी ।  
 ३॥ श्रीसुपार्श्वजी । ११॥ श्रीसुब्रतनाथजी । १९॥ श्रीयशोधरजी ।  
 ४॥ श्रीस्वयंप्रनुजी । १२॥ श्रीअममनाथजी । २०॥ श्रीविजयनाथजी ।  
 ५॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । १३॥ श्रीनिष्कपायजी । २१॥ श्रीमहिप्रनुजी ।  
 ६॥ श्रीदेवश्रुतजी । १४॥ श्रीनिष्पुलाकजी । २२॥ श्रीदेवप्रनुजी ।  
 ७॥ श्रीउदयप्रनुजी । १५॥ श्रीनिर्ममनाथजी । २३॥ श्रीअनन्तजी ।  
 ८॥ श्रीपेढालप्रनुजी । १६॥ श्रीचित्रगुप्तिजी । २४॥ श्रीअद्रंकरजी ।

॥ इति अविष्यच्चतुर्विंशति तिर्यकरेभ्योनमः ॥

## ( बीसविहरमांन नामानि )

- १॥ श्रीसीमन्धरजी । ८॥ श्रीअनन्तवीर्यजी । १५॥ श्रीनेमप्रनुजी ।  
 २॥ श्रीयुगमन्धरजी । ९॥ श्रीसुरप्रनुजी । १६॥ श्रीईश्वरजी ।  
 ३॥ श्रीबाहुजी । १०॥ श्रीविमलजी । १७॥ श्रीवयरसेनजी ।  
 ४॥ श्रीसुबाहुजी । ११॥ श्रीवज्रधरजी । १८॥ श्रीमहाअद्रजी ।  
 ५॥ श्रीसुजातजी । १२॥ श्रीचंद्राननजी । १९॥ श्रीदेवजसजी ।  
 ६॥ श्रीस्वयंप्रनुजी । १३॥ श्रीचंद्रबाहुजी । २०॥ श्रीअजितवीर्यजी ।  
 ७॥ श्रीरूपज्ञाननजी । १४॥ श्रीअनुजंगजी ।

॥ इति विंशति विहरमानतिर्यकरेभ्योनमः ॥

## ( च्यार सास्वतानामः )

- १॥ श्रीरूपज्ञाननजी । ३॥ श्रीवारिपेणजी ।  
 २॥ श्रीचंद्राननजी । ४॥ श्रीवर्द्धमानजी ।

॥ इति चत्वार सास्वता जिनवरेभ्योनमः ॥

## ॥ पांच प्रतिक्रमणसूत्र विधि ॥

श्रीपंचपरमेष्ठिने नमः ॥ एमो अरिहंताणं ॥ एमो सिद्धाणं ॥  
 एमो आयरियाणं ॥ एमो उवज्जायाणं ॥ एमो लोए सब-  
 साहूणं ॥ एसौ पंच एमुक्कारो ॥ सबपाव प्पणासणो ॥ मंग-  
 लाणंच सबेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥ १ ॥ पद ९ ॥ संपदा ८ ॥  
 अक्षर ६८ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६९

## ॥ अथ सकल तिर्थेकर नमस्कार लि० ॥

॥ ❀ ॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥ ❀ ॥ जयउसामिहि ॥ २ ॥ रिस-  
 ह सेत्तुंजि उज्जित पढू नेमिजिण । जयउ बीर सच्चउरमंरुण ।  
 न्नरवच्चहि मुणि सुवय । महुरिपास दुह डुरिअ खंरुण । अवर  
 विदेहजि तित्थयर । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय  
 संपयं । वंडुं जिण सब्बेवि ॥ २ ॥ कम्मभूमिहि ॥ २ ॥ पढम  
 संघयण उक्कोसन सत्तरिसन । जिणवराण विहरंतलप्पइ । नव-  
 कोडी केवल्लिण । कोडिसहस नवसाहु संपय । संपइ जिणवर  
 वीसमुणि । डुइकोडीवरणाणि । समणाकोडीसहसडुइ । थुणिजइ  
 निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लक्खा उप्पन्न अठको-  
 डीआो । चउसय गायसीआ । तिळुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव-  
 कोडिसयं । पणवीसंकोडि लक्खतेवन्ना । अठ्ठावीससहस्सा  
 चउसय अठ्ठासिआ पडिमा ॥ ३ ॥ जंकिंचि नामतित्थं । सग्गेपा-  
 यालेमाणुसेलोए । जाइंजिणविंबाई । ताइं सब्बाइं वंदामि ❀ ॥ ४ ॥  
 एमोत्थुणं अरिहंताणं न्नगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थग-  
 राणं सयंसंवुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरसोत्तमाणं पुरस सीहाणं पुरसवर  
 पुंरुरीआणं पुरसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोग-  
 नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अजयदयाणं चक्रुदयाणं मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहि-  
दयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्म देसिआणं धम्मनायगाणं ।  
धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतं चक्रवटीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिह-  
यवरणाणं दंसणधराणं विअट्ठउत्तमाणं ॥ ७ ॥ जिन्नाणं जा-  
वयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणंमोअ-  
गाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं सबदरिसीणं सिव मयल मरुअ मणंत  
मक्खय मद्वावाह मणुणरावत्ति सिद्धिगइ नामधेयं द्वाणंसंपत्ताणं  
णमोजिणाणं जिअजयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआसिद्धा जेअ  
जविस्संति अणागएकाले संपइअ वट्टमाणा सबे तिविहेण  
वंदामि ❀ ॥ १ ॥ ❀ पद ॥ ३३ ॥ संपदा ॥ ९ ॥ अक्षर ॥ २९७ ॥  
गुरु ॥ ३३ ॥ लघु ॥ २६४ ॥ ❀ ॥ जावंति चेइआइं । उट्ठेअ अ-  
हेअतिरिअलोएय । सब्बाइंताइंवंदे । इहसंतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥  
इच्छामिखमा० इत्थाका० जगवन् । जावंति केविसाहू । जरहे  
रवए महाविदेहेअ । सबेसि तेसिपणओ । तिविहेण तिदंरु  
विरआणं ॥ २ ॥ अक्षर ॥ ९२ ॥ ❀ नमो क्तं सिद्धाचार्योपा  
ध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ ❀ ॥ उवसग्ग हरंपासं । पासं वंदामि  
कम्मघण मुक्कं । विसहर विसनिन्नासं । मंगल कल्लाण  
आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं । कंठे धारेइ जो सया  
मणुओ । तस्सगहरोगमारी । दुठ्ठजराजन्ति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठ  
दूरे मंतो । तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिए सुवि जीवा ।  
पावंति नदुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्ते लद्धे । चिंतामणि क-  
प्पपाय वप्पहिए । पावंति अविग्घेणं । जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥  
इअ संथुओ महायस । जत्तिअरनिअरेण हिअण्ण । तादेव दिज्ज  
बोहिं । जवे जवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तुतिः ॥

❀ ॥ जय वीयराय जगगुरु । होचममं तुहपन्नावओ । नयवं  
 नवनिब्बेओ । मग्गाणुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोण  
 विरुद्ध चाओ । गुरुजण पूआ परत्थकरणंच सुह गुरुजोगो  
 तब्बयण सेवणा आनवमखंमा ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ अरिहंत  
 चेइयाणं । वंदणवत्तिया । अनत्थूकही । एक नवकारनोका-  
 वसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहै ॥ इतिचैत्यवंदनकं ॥ ❀ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहि आए  
 मत्थएणवंदामि ॥ इतिक्षमाश्रमणदंसकः ॥ गुरु ३ लघु २५ ॥  
 ( इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ) इरिआवहिअं पम्किमामि,  
 इच्छं इच्छामि पम्किमित्तं । इरिआवहियाए विराहणाए ।  
 गमणा गमणे पाण क्कमणे वीअक्कमणे हरिअ क्कमणे । उसा  
 उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्कडा । संताणा संकमणे । जेमे जीवा  
 विराहिआ । एगिंदिआ वेइंदिआ तेइंदिआ चउरिंदिआ पं-  
 चिंदिआ अजिहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघट्ठिआ ।  
 परिआविया किलामिआ उदविआ ठाणा उठाण संकामिआ  
 जीवियाओववरोविआ । तस्समिच्छामिदुक्कमं ❀ ॥ ७ ॥ ❀ तस्स  
 उत्तरी करणेणं । पायच्छित्त करणेणं । विसोही करणेणं । विसल्ली  
 करणेणं । पावाणं कम्माणं । णिग्घायणठाए । ठामिकानसग्गं  
 ॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु १७५ ॥ एवं ॥ १९९ ॥ ❀ ॥  
 अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं  
 उड्डुएणं वाय निसग्गेणं जमलिए पितमुढाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं  
 अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेल संचालेहिं । सुहुमेहिं दिठि  
 संचालेहिं ॥ २ ॥ एव माइएहिं आगारेहिं । अजग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे कानसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं ज-  
गवंताणं एमोक्कारेण नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणे-  
णं अप्पाणं वोसरामि ॥ ४ ॥ ॥ लोगस्स उज्जोअगरे । धम्म  
तित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइसं । चत्तवीसंपि केवली ॥ १ ॥  
उसन्न मज्झिअं च वंदे । संजव मज्झिनंदणं च । सुमइअ पत्तम  
प्पहं सुपासं । जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहं च पुप्फदंतं ।  
सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमल मणंतं च जिणं । धम्मं  
संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं न  
मि जिणं च । वंदामि रिठ्ठनेमि । पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥  
एवं मए अज्झिअ । बिहुअ रयमला पहीण जर मरणा ।  
चत्तवीसंपि जिणवरा । तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ  
वंदिअ महिअ । जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरोग्ग वोहि  
लाजं । समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ।  
आइच्चेसु अहिअं पयासयरा । सागर वर गंजीरा । सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥ ७ ॥ ॥ पद २८ संपदा २८ गुरु २८ लघु २२८  
[ एवंसर्वअक्षर ॥ २५६ ] सबलोए अरिहंतचेइआणं करेमिका  
उस्सग्गं ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ पुक्खरवर दीवट्ठे । धायइ  
समैअ जंबुदीवेअ । जरहे रवय विदेहे । धम्माइगरे नमंसा-  
मि ॥ १ ॥ तम तिमिर पक्खल विद्धंसणस्स । सुरगण नरिद  
महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे । पुप्फोमिअ मोह जालस्स ॥ २ ॥  
जाई जरा मरणसोग पणासणस्स । कल्लाण पुक्खल विसाल सुहा  
वहस्स । को देव दाणव नरिद गणाच्चिअस्स । धम्मस्ससार मुवल  
प्रकरेपमायां ॥ ३ ॥ सिद्धेज्जोपयत्त एमोजिणमए नंदीसयासंजमे । देव  
न्नाग सुवन्न किन्नरगण स्सब्भुअ जावच्चिए । लोगो जत्थ पयट्ठिओ

जगमणं तेलोक्क मच्चासुरं । धम्मो वढ्ढुत्तसासओ विजयत्त धम्मो  
त्तरं वढ्ढुओ ॥ ४ ॥ सुअस्सत्तगवत्तं करेमि कान्तसग्गं ॥ \* ॥ ( पद  
१६ संपदा १६ गुरुअ ३४ लघुअ १८२ एवं २१६ ) ॥ \* ॥ वंद-  
णवत्ति आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए  
बोहिलान्नवत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए  
धारणाए अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामिकान्तसग्गं ॥ १ ॥ अन्न  
त्थक्कससिएणं नीससिएणं इत्यादि ॥ \* ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लोगग्ग  
मुवगयाणं । एमो सया सब सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणविदेवो  
जंदेवा पंजली नमंसंति । तं देव देवमहिअं । सिरसावंदे म-  
हावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि एमुक्कारो । जिणवर वसहस्स वद्धमा-  
णस्स । संसार सागराओ । तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जित  
सेल सिहरे । दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्म  
चक्कवट्ठिं । अरिठ्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस  
दोअ वंदिआ । जिणवरा चत्तवीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा । सि-  
द्धा सिद्धिं ममदिसंतु ॥ ५ ॥ \* ॥ वेयावच्चगराणं । संतिग-  
राणं । सम्महिट्ठि समाहिगराणं । करेमिकान्तसग्गं ॥ १ ॥  
अणत्थक्कससिएणं इत्यादि ( संपदा २० पद २० गुरु अक्षर  
३१ लघु १६७ एवं १९८ ) ॥ \* ॥ संसार दावानल दाह  
नीरं । समोहधूली हरणे समीरं । मायारसा दारण सार सीरं ।  
नमामि वीरं गिरिसार धीरं ॥ १ ॥ ज्ञावावनाम सुर दानव मा-  
नवेन । चूला विलोल कमलावलि मालितानि । संपूरिता त्रि-  
नत लोक समीहि तानि । कामं नमामि जिनराज पदानि  
॥ २ ॥ बोधा गाधं सुपद पदवी नीर पूरान्निरामं । जीवा

हिंसाविरल लहरी संग मागाहदेहं । चूलावेलं गुरु गम मणी  
संकुलं दूरपारं । सारं वीरागम जलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥  
आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढ लोलालिमाला ।  
जंकारा राव सारा मलदलकमला गारभूमी निवासे । ठाया  
संभारसारे वरकमलकरे तारहारान्निरामे । वांणीसंदोहदेहे जव-  
विरहवरं देहिमे देविसारं ॥ ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

## ॥ वांदणां ॥

॥ ❀ ॥ इवाभिखमासमणो बंदिउंजावणिज्जाए निसीहिआए ।  
अणुजाणह मेमिउग्गहं निसीही । अहो कायं काय । संफासं  
खमणिज्जो नेकिलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुणेणने दिवसो-  
वइकंतो । जत्ताने जवणि जंचने । खामेमि खमासमणो देव-  
सिअं वइकमं । आवसिआए पक्कमामि खमासमणाणं । देव  
सिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचिमिआए । मणउक्क-  
डाए वयउक्कडाए कायउक्कडाए । कोहाए माणाए मायाए लोनाए ।  
सबकालिआए सबमिठोवयाराए सबधम्मइकमणाए आसाय  
णाए । जोमेअईयारोकओ तस्सखमासमणो पडिक्कमामि  
निदामि गरिहामि अप्पाणं बोसरामि ॥ ❀ ॥ ॥ अक्षर ॥ १९८ ॥

## ॥ साध्वालोयणा ॥

—❀॥ इवाकारेण संदिसह जगवन् देवसिअं आलोएमि ।  
इवंआलोएमि । जोमेदेवसिओ अईआरोकओ । काईओ वा  
ईओ माणसिओ नस्सुत्तो उम्मग्गो अक्कप्पो अकरणिज्जो  
उज्जाओ उव्विचिंतिओ । अणायारो अणव्वियव्वो । असम-  
णपावग्गो । नाएतहदंमणेचरित्ते । सुएसामाइए तिएहंगुत्तीणं-  
चउएहंकसायाणं । पंचएहं महवयाणं । उएहं जीवनि कायाणं ।



सत्तएहंपिमेसणाणं अठ्ठएहं पवयणमाईणं । नवएहं वंजचेर  
गुत्तीणं दसविहेसमणधम्ममे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं  
जं विराहिअं । तस्समिठ्ठामिडुकमं ॥❀॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥❀॥ इठ्ठाकारेण संदिसह जगवन् । देवसियं आलोएमि  
इठ्ठं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ  
वाईओ माणसिओ । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो  
डुज्जाओ डुविचिंतिओ । अणायारो अणवियवो । असावग-  
पावग्गो । नाणेत्तह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए  
तिएहंगुत्तीणं । चउएहंकसायाणं । पंचएहंमणुवयाणं । तिएहं  
गुणवयाणं । चउएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-  
म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिठ्ठामिडुकडं ॥❀॥

॥❀॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणानत्ते हरिअकाय  
संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे । सबस्स  
वि देवसिअ । डुच्चिंतिय डुप्पासिय डुच्चिठ्ठिअ । इठ्ठाकारेण  
संदिसह । इठ्ठंतस्समिठ्ठामिडुकडं ॥ १ ॥❀॥ संथाराउवट्टण-  
की । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । उप्पइयासं  
घट्टणकी । अच्चक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराइअ । डुच्चिं  
तिअ डुप्पासिअ डुच्चिठ्ठिअ । इठ्ठाकारेणसंदिसह । इठ्ठं-  
तस्स मिठ्ठामिडुकमं ॥ १ ॥❀॥ इठ्ठाकारेणसंदिसह जगवन्  
अभूठ्ठिओमि अण्णितर । देवसिअंखामेउं । इठ्ठंखामेमि देव-  
सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । जत्ते पाणे विणए वेया-  
वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे अंतरजासाए  
उवारिजासाए । जंकिंचि मज्जविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुभ्रेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिच्चामिडुक्कं ॥ ❀ ॥  
॥ इति गुरुवंदणा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करेमि जंते सामाइयं । सावळंजोगं पच्चक्खामि ।  
जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए  
काणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स जंते । पडिक्कमामि । निंदामि  
गरहामि । अप्पाणं बोसिरामि ॥ ❀ ॥ करेमि जंते पोसहं । आहार  
पोसहं, देसउ । सबउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सबउ वंजचेर  
पोसहं । सबउ अवावार पोसहं । सबउ चउबिहे पोसहे । साव  
ळंजोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि ।  
दुविहं तिविहेण । मणेणं वायाए काणं । न करेमि न कारवेमि ।  
तस्स जंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं बोसिरामि  
॥ ❀ ॥ आयरियउवज्जाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-  
कसाया । सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समणसंघस्स । जग  
वउ अंजलिं करिय सीसे । सब्वं खमावइत्ता । खमामि सबस्स अहि-  
यंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीव रासिस्स । जावउ धम्मनिहियनिय-  
चित्तो । सब्वं खमावइत्ता । खमामि सब्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥ ❀ ॥  
सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा-  
मह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंधाय । देवी जवन-  
वासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमकृतं ॥ २ ॥ यासां  
क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता ।  
रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय महायश २ जय महाजाग जय चिंतिय  
सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु  
गरिम गुरु । जय पुहत्तसत्ताणताणय । थंजणयाठिय पासजिण ।

नवियहन्नीमन्नवत्थु । नय अवणिंताणंतगुण । तुज्जतिसंज  
नमोत्थु ॥ १ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ सामायक पोसहपारवागाथा ॥

॥ ❀ ॥ नयवं दसन्नन्नदो । सुदंसणो थूलन्नद्वयरोय । सफ-  
लीकय गिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंद-  
णेणं । नासइ पावं असंक्रियान्नावा । फासुअदाणे निज्जर ।  
अग्निग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ उन्नमत्थो मूढ मणो । कित्ति-  
मित्तंपि संनरइजीवो । जंचन संनरामि अहं । मिठामेदुक्कडं  
तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चिंतिय । मसुहं वायाइन्नासियं  
किंचि । असुहं काएणकयं । मिठामे दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥  
सामाइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो  
बोधवो । सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ सामायकविधै लीधी  
विधै कीधी विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय  
दसमनका दस वचनका बारै कायाका । बत्तीस दूषणां मांह  
जो कोई दूषण लागो होय सो सहू मनकर वचनकर कायायेंकरी  
मिठामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरिथंनणयठियपाससामिणो । सेसतित्थसामीणं ।  
तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सबेसिं ॥ १ ॥ एसमहं  
सरणत्थं । कानसग्गं करेमि । सत्तीए नत्तीए गुणसुठियस्स ।  
संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ ❀ ॥ नमोस्तु वर्द्धमा-  
नाय । स्पर्द्धमानाय कम्मणा । तज्जया व्याप्त मोहाय ।  
परोहाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्यायः  
कमकमलावल्लिं दधत्या । सदृशै रिति संगतं प्रशस्यं ।

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्हित  
जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोद्भूतः । सशुक्रमासोद्भव  
वृष्टिसन्निभो । ददातु तुष्टि मयि विस्तरा गिरां ॥ ३ ॥  
श्वसितसुरजिगंधा लीढभृंगीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्रविभ्रती  
याविज्जर्ति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचित्यप्रज्ञावा । सकल  
सुखविधात्री । प्राणज्जाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ❀ इति वीरस्तुतीः ॥

॥ ❀ ॥ परसमयतिमिरतरणिं । जवसागरवारितरणवरत-  
रणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्ध  
संसारविहारकारी । दुरन्तजावारिगणानिकामं । निरन्तरं  
केवलि सत्तमावो । जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि  
कुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । ससार-  
सागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥  
परिमलजरलोचा लीढलोलालिमाला । वरकमलनिवासे हार-  
नीहारहासे । अविरलजवकारा गारविधित्तिकारं । कुरुकम-  
लकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भ  
समगौरी । कमलेस्थिता जगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं  
॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां ।  
विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्व साधूनां ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं  
समाश्रित्य । साधुभिः साध्यते क्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं ।  
भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंजनेस्वर्गिरौ ।  
श्रीपूज्याजयदेवसूरिविवुधा धीशैः समारोपितः । संसक्तः स्तुति  
भिर्जलैः शिवफल स्फूर्त्यतफणापल्लवः । पार्श्वः कल्पतरुः समे

धणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि तिहिंदंमेहिं । मणदंमेणं  
 वयदंमेणं कायदंमेणं । पडिक्कमामि तिहिंगुत्तीहिं । मणगु-  
 त्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए । पडिक्कमामितिहिंसल्लेहिं ।  
 मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं । मित्रादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि  
 तिहिंगारवेहिं । इट्ठीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं ।  
 पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं । नाणविराहणाए दंसणविरा-  
 हणाए चारित्तविराहणाए । पडिक्कमामि चउहिंकसाएहिं । कोह-  
 कसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं । पडि-  
 क्कमामि चउहिंसल्लाहिं । आहारसल्लाए नयसल्लाए मेहुणसल्लाए  
 परिग्गहसल्लाए । पडिक्कमामि चउहिंविगहाहिं । इत्थिकहाए  
 नत्तकहाए देसकहाए रायकहाए । पडिक्कमामि चउहिंजा-  
 णेहिं । अट्ठेणंजाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेणंजाणेणं सुक्केणंजा-  
 णेणं । पडिक्कमामि पंचहिं किरिआहिं । काइयाए । अहि-  
 गरणियाए पाउसिआए पारितावणीआए पाणाइवायकि-  
 रिआए । पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं । सद्देणं रूवेणं  
 रसेणं गंधेणं फासेणं । पडिक्कमामि पंचहिं महवएहिं । पाणाइ  
 वायानुवेरमणं मुसावायानुवेरमणं अदिन्नादाणानुवेरमणं मेहु-  
 णानुवेरमणं परिग्गहानुवेरमणं । पडिक्कमामि पंचहिंसमई-  
 एहिं । इरिआसमिईए नासासमिईए एसणासमिईए आयाणन्नं  
 रुमत्तनिकखेवणासमिईए उवारपासवणं खेलजल्लसंधाणं पारिष्ठा  
 वणिआसमिईए । पडिक्कमामि षहिं जीवनिकाएहिं । पुढविका-  
 एणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सइकाएणं तसका-  
 एणं । पडिक्कमामि षहिंलेसाहिं । किन्हलेसाए नीललेसाए कानु  
 लेसाए तेउलेसाए पउमलेसाए सुक्कलेसाए । पडिक्कमांसत्तहिं

नयछाणेहिं । अछहि मयछाणेहि । नवाहिं वंनचेरगुत्तीहिं ।  
 दसविहेसमणधम्म । एगारसहिं उवासगपमिमाहि । वारसहिं  
 निक्खुपमिमाहि । तेरसहिंकिरिआछाणेहि । चउसदसहिं  
 भूयगामेहि । पन्नरसहि परमाहम्मिएहिं । सोलसएहिंगाहाहिं  
 सतरसविहे असंजमे । अछारसविहे अवंजे । इगुणवीसाए-  
 नायज्जयणेहिं । वीसाए असमाहिछाणेहिं । इकवीसाएस-  
 र्वलेहिं । वावीसाएपरीसहेहि । तेवीसाएसुअगरुज्जयणेहि ।  
 चउवीसाएअरिहंतेहिं । पचवीसाएजावणाहि । षव्वीसाएदसा-  
 कप्पववहाराणं उदेसणकालेणं । सत्तावीसाएअणगारगुणेहि ।  
 अछावीसाए आयारपकप्पेहिं । एगुणतीसाए पावसुअप्पसं-  
 गेहिं । तीसाएमोहणिअ छाणेहिं । इगतीसाएसिद्धाइगुणेहिं ।  
 वत्तीसाएजोगसंगहेहिं । तित्तीसाएआसायणाए । अरिहंता-  
 णंआसायणाए । सिद्धाणंआसायणाए । आयरिआणंआसाय-  
 णाए । उवज्जायाणंआसा० । साहुणंआसा० । साहुणीणंआ-  
 सा० । सावयाणंआ० । सावियाणंआ० । देवाणंआसा० ।  
 देवीणंआ० । इहलोगस्सआ० । परलोगस्सआसायणाए ।  
 केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ० । सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० ।  
 सब पाण भूअ जीव सत्ताणं आसायणाए । कालस्सआ० ।  
 सुअस्सआसा० । सुयदेवयाएआसा० । वायणारिअरसआ० ।  
 जंवाइदं । वच्चाभेलिअं । हीणक्खरिअं । अच्चक्खरिअं । पयहीण ।  
 विणयहीणं । जोगहीणं । घोसहीणं । सुद्धुदिन्नं । दुद्धुपमिन्नियं ।  
 अकाले कउ सज्जाउ । कालेनकउ सज्जाउ । असज्जाइए ।  
 सज्जाइअं । सज्जाइए नसज्जाइयं । तस्समिठामिदुक्कडं ॥  
 एमोचउवीसाए तित्थयराणं । असज्जाइ महावीरपज्जवसाणाणं ।

इणमेव निग्गंथं पावयणंसच्चं । अणुत्तरं । केवलियं पप्पिपुन्नं ।  
 नेआणुयं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । नि-  
 ज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सबडुक्खपही-  
 णमग्गं । इत्थंठिआजीवा । सिज्जंति । बुज्जंति मुच्चंति । परि  
 निव्वायंति । सबडुक्खाणमंतंकरंति । तंधम्मं सदहामि । पत्ति-  
 आमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तंधम्मंस-  
 दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालिंतो अणुपालिंतो ।  
 तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अम्भुठिउमि । आराहणाए ।  
 विरउमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उवसं-  
 पज्जामि । अवंनं परिआणामि । वंनं उवसंपज्जामि । अकप्पं  
 परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अन्नाणं परिआणामि ।  
 नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उव-  
 संपज्जामि । मिष्ठत्तं परिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि ।  
 अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परि-  
 आणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जंसंजरामि । जंचन संजरामि ।  
 जं पप्पिक्कमामि । जंचन पप्पिक्कमामि । तस्ससवस्स ।  
 देवसिअस्स । अइआरस्स पप्पिक्कमामि । समणोहं संजय  
 विरय पप्पिहय पच्चक्खाय । पावकम्मो । अनियाणो । दिठ्ठि  
 संपन्नो । मायामोसविबज्जिउ । अट्ठाइज्जेसु दीव समुद्देसु ।  
 पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरण गुह-  
 पप्पिग्गहधारा । पंचमहवयधारा । अठारसहस्स सीलांगधारा ।  
 अक्खयायारचरित्ता । तेसब्बे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदा-  
 मि ॥ खामेमि सब जीवे । सब्बे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे स-  
 वभूएसु । वेरंमज्ज न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ नंदिअ ।

गरहिअ डुगुंभिअं सम्मं । तिविहेण पम्किंतो । वंदामि जिणे  
चउवीसं ॥ २ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सच्चित्त १ । दव २ । विगई ३ ॥ वाहण ४ । तंबो-  
ल ५ । बत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विले  
वण १० ॥ बंज ११ । दिसि १२ । एहाण १३ । जत्तेसु १४ ॥  
इति चउद नियम गाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वंदित्सूत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदित्सु सबसिद्धे । धम्मायरिएअ सबसाहूअ । इठा-  
मि पम्किमिउं । सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमे वया इआ-  
रो । नाणे तह दंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ वायरोवा । तंनिंदे  
तंच गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहम्मी । सावज्जे बहुविहे-  
अ आरंजे । कारावणे अकरणे । पम्किमे देसिअंसवं ॥ ३ ॥  
जंबव्व मिंदिएहिं । चउहिं कसाएहि अप्पसत्थेहिं । रागेणव  
दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे  
ठाणेचंकमणे अणाजोगे । अनिउगे अनिउगे । पम्किमे ॥ ५ ॥  
संकाकंखविगंगा । पसंसतहसंथवो कुलिगीसु । सम्मत्तस्सइ  
आरे । पम्कि० ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे ॥ पयणेअ पयावणेअ  
जेदोसा । अत्तछाय परछा । उज्जयछाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंच-  
एहमाणवयाणं । गुणवयाणंचतिएहमइआरे । सिक्खाणंच  
चउएहं ॥ पम्किमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयम्मी । थूलगपा-  
णाइवायविरईउं । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं  
॥ ९ ॥ बहबंधउविठेए । अइजारेजत्तपाणवुठेए । पढम वयस्स  
इआरे । पम्किमे० ॥ १० ॥ बीए अणुवयम्मी । परिथूलग  
अलिअवयण विरइओ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमाय



प्ससंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे । मोसुवएसेअ कूलेहे-  
 अ ॥ बीअवयस्सइआरे । पम्किमे० ॥ १२ ॥ तइएअणवय  
 म्मी । थूलगपरदब्बहरणविरइत्त । आयारिअमप्पसत्थे । इत्थ  
 पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरप्पत्तगे । तप्पमिरूवे विरुद्ध  
 गमणेअ । कूस्तुल्लकूमाणे । पम्कि० ॥ १४ ॥ चत्तथेअणवय  
 म्मी । निच्चं परदारगमण विरइत्त । आयारिअमप्पसत्थे । इत्थ-  
 पमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर । अणंग वीवाह तिव-  
 अणुरागे । चत्तथवयस्सइआरे । पम्कि० ॥ १६ ॥ इत्तोअ-  
 णव्वए पंचमम्मी । आयारिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिहेए ।  
 इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तवत्थु रुप्पसुवणेअ कुविअ परि-  
 माणे । दुप्पएचत्तप्पयम्मी पम्कि० ॥ १८ ॥ गमणस्सय परि-  
 माणे । दिसासुत्तद्धं अहेयतिरिअंच । वुद्धिस्सइ अंतरद्धा ।  
 पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्झमिअ मंसंमिअ । पुप्फे-  
 अ फलेअ गंधमल्लेअ । उवन्नोग परीन्नोगे । बीअम्मिगुणव्वए  
 निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पम्बुद्धे । अप्पोलदुप्पोलिएअ आहारे ।  
 तुब्बोसहिन्नक्खणया । पम्कि० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी ।  
 ज्ञामी फोमीसु वज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत लक्ख । रस  
 केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खुज्जंतपिल्लणंकम्मं । निल्लंठ-  
 णंच दवदाणं । सरदह तलावसोसं । असईपोसंच वज्जिज्जा  
 ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमूसल जंतग । तणकठेमंतमूलत्तेसिज्जे ।  
 दिस्सेदिवावएवा । पम्कि० ॥ २४ ॥ एहाणवट्ठण वन्नगविलेवणे  
 सह्रूवरसगंधे । वत्थासणआन्नरणे । पम्कि० ॥ २५ ॥ कंदप्पे  
 कुक्कइए । मोहारि अहिगरण नोगअइरित्ते । दंमंमिअण्ठाए  
 तईअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । अणवठा

एतहासइ विहुणे । सामाइय वितहकए । पढमे सिक्खा  
 वएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे । सदेरूवेअ पुग्गलक्खेवे ।  
 देसाविगासिअम्मी । वीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-  
 विही । पमायतह चेव ज्ञोयणाज्जोए पोसहविहिविवरीए । तइ  
 एसिक्खावएनिंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्तेनिकखमणे ॥ पिहणेववएस-  
 मवरेचेव । कालायक्कमदाणे । चउत्थेसिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥  
 सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुक्कंपा । रागेणव-  
 दोसेणव । तंनिदेतंचगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविजागो । नक  
 उ तव चरण करण गुत्तासु । संतेफासुअदाणे । तंनिदे तंचगरिहा-  
 मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए । जीविअमरणेअ आससपउगे ।  
 पंचविहो अइआरो । मामझं हुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएण  
 काइअस्स । पम्भिकमे वाइअस्सवायाए । मणसा माणसिअस्स ।  
 सबस्सवयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सणा  
 कसाय दंभेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरो तंनिंदे ॥  
 ॥ ३५ ॥ सम्मदिठीजीवो । जइविहुपावं समायरेकिचि । अप्पो  
 सिहोइवंधो । जेणननिद्धंधसंकुणइ ॥ ३६ ॥ तंपिहुसपम्भिकमणं ।  
 सप्परिआवंस उत्तरगुणंच । खिप्पं उवसामेई । वाहिव सुसि  
 विखउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसं कुठगयं । मंतमूल विसारया ।  
 विज्जाहणंत मंतेहि । तोतं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अछविहं  
 कम्मं । राग दोस समाज्जिअं । आलोअंतोअ निदंतो । खिप्पं  
 हणइसुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणुस्सो । आलोइअनिदिअ  
 गुरुसगासे । होइअइरेगलहुउ । उहरिअन्नरुवन्नारवहो ॥ ४० ॥  
 आवस्सएण एएण । सावउ जइवि बहुरउ होइ । उक्खाणमंत  
 किरिअं । काही अचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा

सह० । पठ० । दिसा० । साहु० । सब० । एकासणं व्यासणं (वा)  
 पच्चक्खाइ । उविहं । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं ।  
 साइमं । अण्ण० । सह० । सागारि आगारेणं । आनट्टणपसारेणं ।  
 गुरुअण्णुठाणेणं । पारि० । मह० । सब० । बो० । देसावगासियं ।  
 इत्यादिपूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण व्यासण पच्चक्खाण ॥  
 आगार ॥ ८ ॥ ॥ \* ॥ ॥ \* ॥ ॥ \* ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ पोरसिं साढपोरसिं ( वा ) पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउ  
 विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० ।  
 सह० । पठ० । दिसा० । साहु० । सब० । एकासणं एगठाणं  
 पच्चक्खाइ । उविहं । तिविहं । चउविहंपि आहारं । असणं ।  
 खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० । सागारि आगारेणं । गुरुअ  
 ण्णुठाणेणं । पारि० । मह० । सब० । वोस० । देसाव० । इत्यादि  
 पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकठाणा पच्चक्खाण । आगार ॥ ७ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ पोरसिं साढपोरसिं ( वा ) पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउ  
 विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० ।  
 सह० । पठ० । दिसामो० । साहु० । सब० । आयंबिलं पच्चक्खाइ ।  
 अण्णत्थ० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खित्तवि  
 वेगेणं । पडुच्चमक्खियेणं पारिठा० । मह० । सब० । एकासणं  
 पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं ।  
 अण्ण० । सह० । सागारिआगारेणं । आनट्टणपसारेणं । गुरुअण्णु  
 ठाणेणं । पारिठा० । मह० । सब० । वोसरइ ॥ ६ ॥ \* ॥

इति आंबिल पच्चक्खाण । आगार ॥ ८ ॥

॥ \* ॥ पोरसिं साढपोरसिं ( वा ) पच्चक्खाइ उग्गएसूरे । च  
 उविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण

त्थ० । सह० । पढ० । दिसा० । साहु० । सब० ॥ निविगइयं  
पञ्चखाइ । अन्न० । सह० । जेवाजेवेणं । गिहत्थसंसिछेणं ।  
उक्खित्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारि० । मह० । सब० ॥  
एकासणं पञ्चखाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं ।  
साइमं । अन्न । सह । सागा० । आनट्ट० । गुरु० । पा० । मह० ।  
सब० । वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥

इति निवीपञ्चखाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ सूरु उग्गए अप्रत्तठं पञ्चखाइ चउविहंपि आहारं ।  
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । मह० । सब० ।  
वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥  
इति चउविहार उपवास पञ्चखाण ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरु उग्गए अप्रत्तठं पञ्चखाइ । तिविहंपि आहारं ।  
असणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । पाणहार पोरसिं ।  
साढपोरसिं । पुरमट्टं । अवट्टंवा । पञ्चखाइ । अण० । सह० ।  
पढण० । दिसा० । साहु० । सब० । वोसरइ । देसावगासियं इत्या  
दि पूर्ववत् ॥ ❀ ॥ इति तिविहार उपवास पञ्चखाण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं साढपोरसि पुरमट्टं अवट्टं वा पञ्चखाइ । उग्ग  
एसूरु चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अ  
ण० । सह० । पढ० । दिसा० । साहु० । सब० । एकासणं एगछाणं  
दत्तियं पञ्चखाइ तिविहं चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं ।  
खाइमं । साइमं । अण० । सह० । सागा० । गुरु० । मह० ।  
सब्ब० । वोसरइ । विगइउ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥  
इति दत्तिपञ्चखाण ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिवसचरमं पञ्चखाइ चउविहंपि आहारं । अस

एणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । मह० । सब्ब० ।  
वोसरइ ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १० ॥ \* ॥

॥ \* ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ डुविहंपि आहारं । असणं ।  
खाइमं । अण० । सह० । मह० । सब्ब० । वोसरइ ॥  
इति दिवसचरमडुविहार पच्चक्खाण ॥ \* ॥ ॥ \* ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ पाणहारदिवसचरमं पच्चक्खाइ अण० । सह० ।  
मह० । सब्ब० । वोसरइ ॥ \* ॥ इति पाणहार पच्चक्खाण० ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जवचरमं पच्चक्खाइ । तिविहं चउविहंपि आहारं ।  
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । मह० ।  
सब । वोसरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ ( जवचरम दोआगार का पिण  
होय ) ॥ इति जवचरमपच्चक्खाण ॥ \* ॥ ॥ \* ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ तथा गंठसहि । मुंठसहि । अंगुठसहि । प्रमुख अ  
ज्जिग्रह पच्चक्खाणके पिण यह च्यार आगार । अण० । सह० ।  
मह० । सब्ब० । वोसरइ । पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके  
होय ॥ \* ॥ इति अज्जिग्रह पच्चक्खाण ॥ \* ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अहसं जंते । तुम्माणं समीवे । देसावगासियं पच्च  
क्खामि । दवउ । खित्तउ । कालउ । जावउ । दव्वउणं देसा  
वगासियं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं महुत्तधा  
रणापमाणे । जावनियमं पच्चक्खामि । जावउणं जावगहेणं  
नगहिज्जामि । ठलेणं नठलिज्जामि । अण्णकेविरायंकेणवा ।  
एसो परिणामो नपन्निवज्जइ । ताअज्जिग्रह । अणत्थणाज्जो  
गेणं सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सबसमाहिवत्तियागारे  
णं । वोसराइ ॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण ॥ \* ॥

॥ \* ॥ तथा साधु पच्चक्खाणकरै । तवदेसावगासी नहिं

पचखै । अरुतिबिहार उपवासमें । आबिलमें निवीमें एकासण  
प्रमुखमें पाणस्सका ६ आगारपच्चेखै (सो दिखावेहै) पाणस्सं॥  
लेवाडेणवा ॥ अलेवाडेणवा अत्थेणवा वहलेणवा ससित्थेणवा  
असित्थेणवा दोसरइ ॥ ॐ ॥ ❀ ॥ ॐ ॥ ❀ ॥ ॐ ॥

॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थं लिख्यते ॥

॥ उग्राणं सूरे नमोकार 'सहियं पञ्चखाइ' चतुर्विहंपि आहारं । ( अर्थ )  
इहां गुरु कहै पञ्चखाइ शिष्य कहै पञ्चखामि ॥ पञ्चखाइका अर्थ सर्व-  
विकाणें अंगीकार वाचक । जाणनो ( जैसे ) सूरज उदय हुवांवाद । नवका  
रसी व्रत अंगीकार करं । यह पञ्चखाण ( 'महुत्त' ) दोघडी काल उपरांत  
जहां तक नवकार गुणकर पारं नहि । तहां तक ( चतुर्वि० ) चारुं आहारनो  
त्यागरूप व्रत अंगीकार करं ॥ ( चार प्रकारको आहार लिखते हैं ) ।  
असणं ॥ पाणं ॥ खाइमं ॥ साइमं । ( असणं व्याख्या ) असण कहता  
अन्न । चोपा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहुं प्रमुख सर्वधानं । सत्तु गहुंको  
आदिलेके सर्व तरैको आदो ॥ सर्व तरैका साग । लाइ  
प्रमुख सर्वपकवानं । सूरणादिक सर्वकंद । दूध दही मांसादिक । सर्वक-  
वली वस्तु । हींग विरहाली । लूण सेंधवादिक । इत्यादिक सर्व  
अश्राणमांहि जाणना ॥ १ ( पाणं । व्याख्या ) आण जवोदक  
तुषोदक तंडुलोदक उष्णोदक शुधोदक सर्वतरैकाजल पाण आगारमें  
जाणना ॥ २ ॥ ( खाइमं । व्याख्या ) खादिम । सूखनी नालेर  
खजूर द्राख सेक्योधानं आंबा केला काकनी अखरोट खारक विदाम  
प्रमुख सर्व जातनोमेवो । सर्व जातनाफल ॥ खादमजाणना ॥ ३ ॥  
( साइमं । व्याख्या ) स्वादिम । तंबोल सूठि मिर्च पीपूर हरै बहेना  
तुलसी कसेजो काथो जेष्ठीमधु तज । तमालपत्र डलायची लवंग वायवि-  
डंग अजमो अजमोद कुलिंजण चिणकवोवा कचूर नागरमोथ पान  
सुपारी पुहकरमूल जवासामूल वावची बांउलगालि धवंगालि खैर  
गाल खयरमार ए सर्वस्वादिम जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार लिखतेहैं ॥  
नांवगालि मूल पान सिली गोमुत्र गिलोय किरायतो अतिविष कूडन सुक

डिराख रोहिणीभाल पीपलामूल बच धमासज रीगणी एलियो चिणोठी कयर  
 बोरिनामूल ( इत्यादि ) अणाहार पिण इच्चासंयुक्त जेम्ना ( यहजो ) इच्चा  
 विना अनिष्ट पणें लीजै । जबतो अनाहारहै । जो इच्चासंयुक्त आवता ली-  
 जै तो आहार को दूषण लगै । ( अबपञ्चक्खाणके आगारोंका अर्थ लिखते  
 हैं ) जिस पञ्चक्खाणमें जितने आगार होय ॥ सो आगार रखके पञ्चक्खाण  
 नियम करै ॥ अन्नत्थणा जोगेणं ॥ १ ॥ ( व्याख्या ) अनाजोगटाजी ।  
 अनाजोग कहियै अत्यन्त विस्मृत होणेंसें ) किया जो ( पञ्चक्खाण  
 यादनरहै । चूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय वा खाणेंमें आई होय  
 पिण जाण्यां पीठे तत्काल नाख देवै तो पञ्चक्खाण जाजै नही । जाण्यां  
 पठे प्रहण करै तो पञ्चक्खाण जाजै ॥ १ ॥ पवन्न कालेणं ।  
 ( व्याख्या ) कालकी प्रवन्नता । आकाशै गई नडतीहोय । वा  
 आकाशै बढ़लगाया होय । तथा पर्वत प्रमुखकी ओट आजावे । सूरज  
 न दीसै । तब प्रमसुं पञ्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर जोजन  
 करै तो व्रत जंग न होय ॥ ३ ॥ सहस्सागारेणं । ( व्याख्या ) सहसा-  
 कार कहियै अत्यन्त उतावलकै जोगे । अथवा । अकस्मात् विलोवतां  
 तोलतां घृत प्रमुखनो ठांटो मुखमें । पमे तो । व्रतजंग न होय ॥ २ ॥ दि-  
 सा मोहेणं ( व्या० ) दिशकों अजाणतो वैसे । जो दिशा चूल मनुष्य ।  
 पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिशि जाणें । इस कारणसें । पञ्चक्खाण काल पूर्ण-  
 हुवा विनां जोजन करै तो व्रतजंग न होय ॥ ४ ॥ साहुवयणेणं ( व्याख्या )  
 साधूकै बचनसे उग्याडा पोरिसी आदिक प्रमसंयुक्त सुणके । पञ्चक्खाण  
 काल पूरण हुवो जाणि कर जोजन करै तो व्रतजंग न होय ॥ ५ ॥ सब  
 समाहि बत्तिया गारेणं ( व्याख्या० ) पञ्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथम  
 हीज अकस्मात् शूलादिक रोग नृपजै । तिससें कदास परिणामोंकी थिरता  
 नरहै । आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तब उसरोगीकुं रोग मिटावन वावत  
 औषधादिक देवै । वा आपलेवै । तो पञ्चक्खाण जंग नही होय ॥ ६ ॥  
 महत्तरागारेणं ( व्या० ) पञ्चक्खाण पालणेंसें । जितनी कर्मोंकी निर्जरा  
 होती है । उसनिर्जरासें अधिक निर्जरा होनेका कारण । और कोई

पुरुषसें वन नहीआवे । औसा जो । चैत्यसंधादि प्रयोजन होनेसें । पञ्चखाण काल पूरण हुवा विनां जोजन करै तो व्रत जंग न होय ॥ ७ ॥ सागारी आगारेणं ( व्या० ) गृहस्थ देखतां साधु जोजन न करै । औसी जिनराजकी आज्ञाहै । इसीसें कोई साधुनें एकासनादिक पञ्चखाण किया है । जोजन करनेकुं बैठाहै । तिस वखत कोईक गृहस्थ साधु पास आय बैठे । तब साधु उस ठिकाणेंसुं उठ कर ओर-ठिकाणें जायके जोजन करै तो व्रत जंग नहोय ॥ और गृहस्थकों यह आगार ऐसें है ) कि जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आयां ठठि कर ओर ठिकाणें जोजन करै तो पञ्चखाण जंग नहोय ॥ ८ ॥ आनु-दण पसारेणं ( व्या० ) पगप्रमुख जो एकठे करनेसें । तथा पसारनेसें । थोनासा आसन चल जाय । तो व्रतजंग नहोय ॥ ९ ॥ गुरु अञ्जु-छाणेणं ( व्या० ) आपका गुरु आपोंसें । तथा आपसें । कोई वना पुरुष आपोंसें । विनय निमित्तै । एकासणादि व्रतमें । जोजन करतो पिण आसन ठोरु उठ खडो होय । तोपिण व्रत जंग नहोय ॥ १० ॥ पारिछाव-णियागारेणं ( व्या० ) ( सर्व पञ्चखाणां मे यह आगार साधुका है ) जो आहार नाखणेंसें बहुत जीव विराधना होती जाण कर ( गुरु कहै ) वह सरस आहार है परलोमति । ऐसी आज्ञा देवे ( तो ) एकासणादि व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करै । तो पिण व्रतजंग नहोय ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं ( व्या० ) जोजन करनेका थाल प्रमुख जाजन । तिसकै मांहि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लगाहै । तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंठगेरा । परंतु किंचित वेमालुमसा रह गया होय । उस जाजनमें आयंविजादि व्रतधारी जोजन कर लेवे । तो व्रत जंग नहोय ॥ १२ ॥ उक्खित्तविवेगेणं ( व्याख्या ) आयंविजादि पञ्चखाणमें ॥ नही खार्णें जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख । ( तिसका फरस ) खार्णें जोग्य द्रव्यसें किंचित होगया होय । वहखार्णें में आजावे । तो व्रत जंग नहोय । ॥ १३ ॥ गिहत्य संसिद्धेणं ( व्या ) जोजन पुरुषे जिस सेती । औसा कुडडा आदि जाजन । विगय प्रमुख द्रव्य सें वेमालुम खरडा होय । प्रत्यरु निजरसें कदाचित्माजुम न होय । जो उस वासणसें जोजन पुरसे



तो व्रत जंग न हो ॥ १४ ॥ पञ्चमुखिखण्णं ( व्या० ) सर्वथा लूखी  
रोटी खाखराप्रमुख द्रव्य किंचिन्मात्र घृतादिकसुं वेमालुम चोपडनें में आया  
होय । परंतु घृतादिक का सवाद मालुम नही पडता होय । जो ( नीवी )  
पञ्चखण्ण मध्य ऐसा द्रव्यकुं खाणेंमें आज्ञावेतो व्रतजंग न होय ॥ १५ ॥

॥ इति पंचदशा गाराणां लेशतोऽर्थ संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ दोचेव नमुकारो । आगारात्तद्धंति पोरमिए । सत्तेवय पुरमहे । एगास  
णंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग छाणस्सओ । अठे वय आयंविजंमि आगारा । पंचे  
वयजत्तठे । षण्णाणे चरिमचत्तारी ॥ २ ॥ पंचचत्तरो अज्जिग्गहे । निवीए  
अठ नवय आगारा । अण्णावरणे पंचज । हवंति सेसेसु चत्तारी ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इति आगार संख्यागाथा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण ॥ ❀ ॥

॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १ ॥ सम्यक्तमोहनी २ ॥  
मिथ्यात्वमोहनी ३ ॥ मिश्रमोहनी ४ ॥ परिहरुं ४ ॥  
( यहच्यार पडिलेहण मुहपत्तीखोलतीवखत कही जै ) काम  
राग १ ॥ स्नेहराग २ ॥ दृष्टिराग ३ ॥ परिहरुं ( यह  
सातेबोल प्रथम कही जै ) । सुगुरु १ ॥ सुदेव २ ॥ सुधर्म ३ ॥  
आदरुं ॥ कुगुरु १ ॥ कुदेव २ ॥ कुधर्म ३ ॥  
परिहरुं ॥ ज्ञान १ ॥ दर्शन २ ॥ चारित्र ३ ॥  
आदरुं । ( यहनवपडिलेहणमावै हाथे करीजै ) । ज्ञानविरा-  
धना १ ॥ दर्शनविराधना २ ॥ चारित्रविराधना ३ ॥  
परिहरुं ॥ मनोगुप्ति १ ॥ वचन गुप्ति २ ॥ कायगुप्ति ३ ॥  
आदरुं ॥ मनोदंरु १ ॥ वचनदंरु २ ॥ कायदंरु ३ ॥  
परिहरुं ॥ ( यह नव पडिलेहण जीमणै हाथे करीजै ।  
यह पचवीस बोल मुहपत्तीका जाणना ॥ अब पचवीस पडिलेहण  
अंगनी कहतेहैं ॥ कृष्णलेस्या १ ॥ नीललेस्या २ ॥

कापोतलेस्या ३ ॥ परिहरुं ॥ माथै निजाडै ॥ रुद्धिगारव  
 १ ॥ रसगारव २ ॥ सातागारव ३ ॥ मुखै परिहरुं  
 मायाशल्य १ ॥ नियाणाशल्य २ ॥ मिठादंशणशल्य  
 ३ ॥ हीयै परिहरुं ॥ क्रोध १ ॥ मान २ ॥ ( जीमणैकांधै  
 काखे परि० ) ॥ माया १ ॥ लोभ २ ॥ ( मावे कांधै वगले  
 परि० ) ॥ हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ ( मावे हाथे परिहरुं ) ॥  
 जय १ ॥ शोक २ ॥ दुर्गंठा ३ ॥ ( जीमणे हाथे परिहरुं ) ॥  
 पृथ्वीकाय १ ॥ अप्पकाय २ ॥ तेऊकाय ३ ॥ ( मावे पगे परि  
 हरुं ) ॥ वाऊकाय १ ॥ वनस्पतीकाय २ ॥ व्रसकाय ३ ॥ ( जी  
 मणैपगे परिहरुं ) ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणसंपूर्णम् ॥ \* ॥  
 ॥ \* ॥ थापनाचार्यनी पम्फिलेहणकरतां ॥ १३ ॥ बोलचिंतवी  
 जै सो लिखिते हैं ॥ सुद्धस्वरूपधारुं १ ॥ ज्ञान २ ॥ दर्शन  
 ३ ॥ चारित्रसहित ४ ॥ सरदहणासुद्धि ५ ॥ प्ररूपणासुद्धि ६ ॥  
 दर्शनसुद्धि ७ ॥ सहित पंचाचारपालुं ८ ॥ पलावुं ९ ॥ अनु  
 मोडुं १० ॥ मनोगुप्त ११ ॥ वचनगुप्त १२ ॥ कायगुप्त १३ ॥  
 एवं १३ ॥ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥ \* ॥

॥ \* ॥ आजूणा चार पहर दिवसमें । जोमें जीव विराध्या  
 होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अप्पकाय । सातला  
 ख ते ऊकाय । सातलाख वाऊकाय । दशलाख प्रत्येक वनस्प  
 ती काय । चवदौलाख साधारण वनस्पतीकाय । दोयलाख  
 वेन्द्री । दोयलाख तेंद्री । दोयलाख चउरिद्री । चारलाख देव  
 ता । चारलाख नारकी । चारलाख पंचेन्द्रीतिर्यच । चवदौला  
 ख मनुष्य । एवं चारगती । चौरासीलाख जीवायोनिमें । जो

कोई जीवहण्यो होय । हणायो होय । हणतां प्रते जलोजा  
 एयो होय । तेसहू । मन । वचन । कायाइंकरी । मिठामिडुक्कडं ॥  
 प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । अदत्तादांन ३ । मैथुन ४ ।  
 परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मांन ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग  
 १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरीवा  
 द १४ । पैशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायामृषावाद १७ ।  
 मिथात्वशल्य १८ । एअद्धारहपापस्थानक सेव्या होय । सेवा  
 या होय । सेवतांप्रते जलाजाण्यां होय । ते सहू मन वचन  
 कायाइं करी । मिठामि डुक्कडं ॥ ❀ ॥ ज्ञान । दर्शन । चारित्र  
 पाटी । पोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली । देवगुरुधम्म  
 नी आसातनाकरी होय । पनरैकर्मादाननी आसेवनाकरी होय  
 राजकथा । देशकथा । स्त्रीकथा । जोक्तकथा । करी होय ।  
 और जो कोई परनिंदा ये करी । पाप कियो होय । करायो होय  
 करतांप्रते अणुमोद्युं होय । ते सर्व । मन । वचन । कायाये  
 करी । दिवसअतीचार आलोयणेंकरी । पम्किमणा माहें  
 आलोचं । तस्स मिठामि डुक्कडं । इति लघुअतीचार ॥

॥ ❀ ॥ अथ पाखी चौमासी संवठरी वृद्धअतीचार ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेय तहयविरयंमि ।  
 आयरणंआयारो । इह एसो पंचहाज्जणिउ ॥ १ ॥ अर्थः ॥ ज्ञाना  
 चार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥  
 वीर्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जोअतीचार ।  
 पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर । जाणतां अजाणतां । हुओ  
 होय तेसहू मन वचन कायाइंकरी मिठामिडुक्कडं ॥ ❀ ॥ (तत्र

ज्ञानाचारना आठअतीचार ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहाणे  
तहयनिन्नवणे । वंजण - अत्यतजुजए । अछविहो नाणमायारो  
॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहि पढिउंगुणिउं नही । अकालेपढिउं ।  
विनयहीन । बहुमानहीन । उपधानहीन । श्रीउपाध्यायकर्ने ।  
नहीपढिउं । अथवा अनेराकर्ने पढिउं । अनेरो गुरु कह्यो ।  
व्यंजन अर्थ तजुजय कूडोपढ्यो । देववांदणें । पढिक्कमणें ।  
सिज्झाय करतां पढतां गुणतां । कूडोअक्षर कानेंमात्रें । अधिको  
उठो । आगलपाठलजण्यो । सूत्र अर्थ कूडाजण्यो । जणीनें  
वीसारयो । तपोधनतणेंधर्मे । काजो अणऊधरयें । दांभीअण  
पमिलेही । वसती अणसोधी । असिझाई अणोजकालवेला  
मांहि । दसवैकालिक प्रमुख । सिद्धांतजण्यो गुण्यो । योगव  
ह्यांपखें जण्यो ॥ ज्ञानोपगरण ॥ पाटी पोथी उवणी कवली  
सांपना सांपनी वहीदस्तरी उलियाकागलप्रमुख प्रतें । आसातना  
हुई । पगलागो । थूकलागो । उसीसैमूंक्यो कनेंठतां आहार  
नीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य नक्षणउपेक्षणकीधो । प्रज्ञापराधे  
विणास्यो । विणसतोउवेख्यो । ठतीसक्तें सार संजाल नकीधी । ज्ञान  
वंत प्रतें मठरवह्यो । अवज्ञा आसातना कीधी । कोईप्रतें जणतां  
गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघातकीधो । मतिज्ञान ।  
श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पांच  
ज्ञानतणी । असद्वहणाकीधी । कोई तोतलो वोवमोहस्यो वितक्यो ।  
आपणा जाणपणातणो गर्वचित्तव्यो ॥ ❀ ॥ अष्टविधज्ञा  
नाचारविषय जोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्मवादर  
जाणतां अजाणतां हुवोहोय । तेसहू मन वचन कायाइंकरी  
मिठामिडुकरं ॥ ❀ ॥ दशनाचारनाआठअतीचार ॥ ❀ ॥

निस्संकिय निक्कंखिअ । निवितिगिढा अमूढ दिठीअ । उववू  
 हथिरीकरणे । वल्लपप्पावणे अठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेंविषै  
 निस्संकपणोनकीधो । तथाएकांत निश्चयधरयो नही । सगलाई  
 मत जलावे । एहवी श्रद्धाकीधी । धर्मसंबंधियाफलतणें विषै ।  
 निःसंदेहबुद्धिधरीनही । चारित्रिया साधु साधवीतणा मलिमली  
 नगात्रदेखी । दुगंगाजपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रप्पावना  
 देखी । मूढदृष्टि पणोकीधो । संघमांहि गुणवंततणी । अनुप  
 वृंहणा । अस्थिरीकरण । अवात्सल्य अप्रीति अजक्ति चिंतवी ।  
 संघमांहि थिरीकरण । वात्सल्यशक्तिठतें प्रप्पावनानकीधी ।  
 देवद्रव्यविणासिउ । विणसतुं उवेषीउ । ठतीशक्तें सारसं  
 जाल नकीधी । साधर्मिकस्युं कलहकर्मकीधो । जिनजवनतणी  
 चौरासी आसातनाकीधी । गुरुप्रतें तेतीस आसातना कीधी ।  
 अधौत वस्त्रे देवपूजाकीधी । त्रिहुंठामपाखै देवपूज्या । वासकूपी  
 कलसतणो ठबकोलागो । मुखतणीवाफलागो । ठवणारिय  
 हाथ थकी पमिउ । पमिलेहवो वीसारयो । नवकरवालीनें पगलागो  
 ॥ ❀ ॥ दर्शनाचार विषय जोअतीचार० ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चारित्राचारना आवअतीचार ॥ पणिहाणयोगजुत्तो ।  
 पंचहिंसमईहिं तिहिंगुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अवविहो होइ  
 नायवो १ ॥ इरियासुमती १ ॥ ज्ञाषासुमती २ ॥ एषणासुमती  
 ३ ॥ आयाणजंरुमत्तनिकखेवणासुमती ४ ॥ उच्चारपासवणखे  
 लजल्लसंधाणपारिठावणियासुमती ५ ॥ मनोगुप्ती १ ॥ वचनगुप्ती  
 २ ॥ कायगुप्ती ३ ॥ एवं पंचसुमती तीनगुप्ती । रूमीपरें पाली  
 नही ॥ ❀ ॥ साधुतणेंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईउजिको  
 अतीचार० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्तमूल बारहव्रत  
 श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संका कंख विगंठा । पसंत  
 तहसंथवो कुलिगीसु ॥ संका श्रीअरिहंत तणी । बल अति  
 सय ज्ञानलक्ष्मी गांजीर्यादिकगुण । सास्वतीप्रतिमा । चारित्रि  
 याना चारित्र । जिनवचनतणो संदेहकीधो । ( आकांक्षा ) ब्रह्मा  
 विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रहपूजा विणायग ।  
 हनुमंत । इत्येवमादिक । ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ । देव  
 देहराना प्रजावदेखी । रोगि आतंकै । इहलोक । परलोकार्थे पू  
 ज्या मान्या । बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी । जरमा । जगत ।  
 लिगिया । योगी । दरवेश । अनेराई दर्शनियानो । कष्टमंत्र  
 चमत्कारदेखी । परमार्थ जाण्यांविन चूल्या । अनुमोद्या ।  
 कुशास्त्रसीख्या । सांजल्या । सराध । संवठरी । होली ।  
 बलेव । माहीपूनिम । अजापडिवा । प्रेतबीज । गोरबीज ।  
 विनायगचोथ । नागपांचम । जूलणाठठ । शीलसातम । द्रो  
 आठम । नठली नवम । अहवदसम । व्रतइग्यारस । वठ  
 बारस । धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उत्तराइन ।  
 नवोदक । ज्यागजोगजतारणा कीधा । पीपलपाणीघाल्या । घ  
 लाव्या । घरबाहिर । कूई तलाव नदी समुद्र कुंभपुन्यहेतु  
 स्नानकीधा । दांनदीधा । ग्रहण शनीश्वर माहमास नवरात्रि  
 नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीधा कराव्या  
 विचिकिठा । धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो । जिणअरि  
 हंत । धर्मनाआगर । विश्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग दातार ।  
 देवाधिदेवबुद्धै सुद्धजावै नपूज्या नमान्या । महातमाना जात  
 पाणीतणी दुर्गंठाकीधी । कुचारित्रिया देखी । चारित्रियाऊप

रि अज्ञावहुन । मिथ्यात्वीतणी प्रज्ञावना देखी । प्रसंसाकीधी ।  
 प्रीतिमांसी । दाक्षिण्यलगे तेहनोधर्म मान्युं ॥ \* ॥ श्रीसमकित  
 विषय । जो अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म वादर  
 जाणतां अजाणतां हुन होय ते सहू मन वचन कायाइंकरी मि  
 ष्ठामिदुक्कडं ॥ १ ॥ \* ॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच  
 अतिचार ॥ \* ॥ वह बंध ठविष्ठेए । अइजारेजत्तपाणबुष्ठेए० ।  
 द्विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघान प्रहारघाल्यो । गाढे बंध  
 नवांध्या । घणें नारपीड्या । निर्लाभन कर्मकीधा । चारपांणी  
 तणी वेला सारसंज्ञालनकीधी । लहिणेंदेणें किणही प्रतें लंघा  
 व्युं । तेणें चूखै आपणजीम्या । अणगलपाणी वावरयो । रूमै  
 गल्यो नही । गलाव्योनही । अणगलपांणीजील्या । लूगमा  
 धोया । ईधण अणसोध्योजाल्युं । साप कानखजूरा । सुलह  
 ला । माकर । जूआं । गोगिंमा । साहतां मूआंदूषव्यां । रूडै  
 थानकनमूंक्या । कीडी । मकोमी । उदेही । घीवेली । कातरा  
 चूमेलि । पतंगिया । मेरुका । अलसिया । ईली । कूति ।  
 मांस । मसा । बगतरा । माखीप्रमुख । जेकेईजीव । विणठा  
 चांपिया । दूहव्या । माला हलावतां । पंखी काग चिरुकला  
 ना ईसा फूटा । अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव । विणठा ।  
 चांप्या । दूहव्या । हालतां । चालतां । अनेरुं कांडकामकाज  
 करतां विडंसपणुं कीधूं । जीवरत्नारूडै नकीधी । संखारोसूक  
 व्यो । सुल्याधान तावडैदीधा । दलाव्या । नरडाव्या । खाट  
 लातावमैजाटक्या । मूंक्या । मूंकाव्या । जीवाकुलचूमिनीपावी ।  
 बासीगार राखी । रखावी । दलणें खांडणें नीपणै । रूडी जय  
 णा नकीधी । आठमचउदसना नियमजागा । धूणीकरावी ॥

पहिला प्राणातिपातव्रतविषईउ । अनेरो० ॥ १ ॥ ❀ ॥ बीजो थूल  
मृषावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥ ❀ ॥ सहस्सारहस्स  
दारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणएकप्रतें ।  
अयुक्तोआलदीधो । किणएकप्रतें । एकांतें वातकरतांदेखी ।  
तुह्मे तो राजविरुद्धचितवोगो । इत्यादिक कह्युं । स्वदारमंत्र  
जेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो ।  
किणहीनें कूडी बुद्धिदीधी । कूडो लेखलिख्यो । कूडीसाखन  
री । थापणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गो । जूमि । संबंधि  
या । लहणें । दयणें । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको  
जूठ वोल्युं । हाथ पग जणी गालदीधी । करमकामोड्या ।  
अधर्मवचन बोल्या ॥ ❀ ॥ बीजे मृषावादव्रत० ॥ २ ॥ ❀ ॥  
तीजे अदत्तादानविरमणव्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडप्प  
जगे । घरबाहिर खेत्र खलैपराईवस्तु । अणमोकलावी । लोधी  
दीधी । वावरी । चोरीनीवस्तु मोललीधी । चोरधामीत प्रतें  
संबलदीधुं । संकेतकह्युं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापु  
राणा सरसविरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा जेलसंजेल कीधा  
खोटै तोल मान माप बुहत्या । माणचोरीकीधी । साटे लांच  
लीधी । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जूदीगांठ  
कीधी । किणहीनें लेखैपलेखे झूलव्युं । पडीवस्तु जलवीलीधी  
तीजे अदत्तादान व्रत० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ चौथै स्वदारसंतोषमैथुनव्रतें  
पांच अतीचार ॥ अपरिगगहियाइत्तर । अणंग वीवाह तिब  
अणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन । इत्वर परिगृहीतागमन ।  
विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलांगना । स्वदार सोकतणें विषे ।  
दृष्टिविपर्यासकीधी । सरागवचन बोल्या । आठम चउदस



अनेराई पर्व तिथितणा नियमजागा । घरघरणा कीधा । करा  
 व्या । अनुमोदीया । कुविकल्प चिंतव्या । अनंगक्रीमा कीधी ।  
 परायाविवाहजोड्या । कामजोग तणै विषै तीव्रानिलाषकीधो ।  
 कुस्वप्नलाधा । नटविटपुरुषसुं हासुंकीधुं ॥ \* ॥ चौथेमें  
 थुनव्रतवि० ॥ ४ ॥ \* ॥ पांचमेंपरिग्रह परिमाणव्रतैपांचअति  
 चार । धण धनखित्तवत्थु । धनधान्य खेत्त वस्तु रुप सुवर्ण  
 कुप्प द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रहतणा । नियम उपरांत  
 वृद्धिदेखी । मूर्खालगै संक्षेपनकीधो । माता पिता पुत्र कलत्रा  
 दिक्कतणै लेखैकीधो । परिग्रहपरिमाणलेई पढ्यो नही । पढी  
 बीसारिउ । नियम बीसारिया ॥ पांचमें परिग्रहपरिमाण व्र०  
 ॥ ५ ॥ \* ॥ ठठेदिगविरमणव्रते पांच अतीचार ॥ \* ॥ गमण  
 रसय परिमाणे । ऊर्द्धदिसि । अधोदिसि । तिर्यग्दिसि । जाय  
 वाआयवातणो नियम जे कोई अजाणैजागो । एकगमा संको  
 डी । बीजी गमावधारी । विस्मृतिलगै । अधिकनूमिगया । पा  
 ठवणी आधी मोकली ॥ \* ॥ ठठेदिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥ \* ॥  
 सातमें जोगो पजोगपरिमाणव्रत ॥ जेहना जोजनआश्री पांचअ  
 तीचार ॥ अने कर्म हुंती १५ ॥ एवं २० अतीचार ॥ \* ॥ सच्चि  
 त्ते पम्बुद्धे । अपोलडुपोलयंचआहारे ० ॥ सच्चित्ततणै नियम  
 लीधै अधिक सच्चित्तलीधुं । तथा सच्चित्तमिलीवस्तु । अपक्का  
 हार । डुपक्काहार । तुडोषधीतणोचहणकीधुं । होलानंबी पहुं  
 क काकडीचरुथाकीधा । सुल्याधानप्रमुख चहण कीधा ॥ स  
 चित्तदवविगइ । पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु । वाहणसयणविले  
 वण । बंजदिसिएहाणजत्तेसु ॥ १ ॥ एचवदै नियम । दिनप्रतें  
 संजारायासंक्षेप्यानही । लेईनियम जांग्या । बावीस अजद । व

तीस अनंतकायमांहि । आदो मूला गांजर पींमालू सूरण सेल  
रा । काचीआंबली । गोल्हांखाधा । चोमासा प्रमुखमांहे । वा  
सो कठोलनीरोटी खाधी । त्रिहुंदिवसनो दहीलीधुं । मधु म  
हुडा माखण माटी । वेंगण पीलू पीचू पपोटा । पीपी विष ।  
हीम । करहा । घोलवमा । अणजाण्याफल ठीवरुं । अथा  
णूं । आमण बोर काचुं मीतुं । तिल । खसखस । काचाकोठ  
वडाखाधा । रात्रीभोजन कीधुं । लगवगतीवेलाइं व्यालूकीधुं ।  
दिवसउग्यांविणसीराव्या । तथा पनरैकम्मा दान । इंगालीक  
म्मे । बणकम्मे सामीकम्मे । जामीकम्मे । फोमीकम्मे । दंत  
वाणिज्ये । रसवाणिज्ये । केशवाणिज्ये । विषवाणिज्ये । जंत  
पीलणकम्मे । निर्लणकम्मे । दवग्गिदावणया । सरदहतलावसो  
सणया । असईपोसणया । पांचवाणिज्य । पांचकम्म । पांचसा  
मान्य । महारंज लीहाला कराव्या । ईंटवाहनीवाहपचाव्या ।  
धाणी चिणा पकवान करीवेच्या । वासीमाखणतपाव्या । अं  
गीठकीधा । कराव्या । तिलादिकसंचीया । फागुणमासउपरां  
तराख्या । कूकमा । सूडाप्रमुखपोस्या । अनेरुंजेकोईबहुसाव  
द्य कठोर कर्मादिक समाचरयो ॥ ❀ ॥ सातमाभोगोपभोगव्रत  
विष० ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ❀ ॥ आठमा अनर्थ दंरु विरमणव्रतना पांच  
अतीचार ॥ कंदप्पे कुक्कइए० । कंदर्पलगैविटनीपरै । हास्यकुतू  
हल मुखादि अंगकुचेष्टाकीधी । मूरखपणालगै । किणहींनैअ  
सबद्धवाक्य बोल्या । खांडा । कटारी । कुसि । कुहामा ।  
रथ । ऊखल । मूसल । अगन । घरटीआदिक । सजकरी  
मेल्या । मांग्या आप्या । कनकवस्तुढोरलेवराव्या । अनेरुंकांइ  
पापोपदेसदीधुं । अंधोल नाहण दांतण पगंधोअणपाणी ।

तेलअधिकआणया । हींडोलैहीच्या । राजकथा । देसकथा ।  
 चुक्तकथा । स्त्रीकथा । पराईवात कीधी । आर्त्त रोद्र ध्यान  
 ध्याया । कर्कसबचन बोलया । करडकामोडया । संजेडालाया  
 जेंसा सांढकूकड मींढा श्वानादिजूता कलहकरताजोया खा  
 धिलगै अदेखाई चिंतवी । माटी । मीतुं । कण कपासिआ ।  
 काजविण चांप्या । तेह ऊपरवयठा । आलेवनस्यतीखुंदी ।  
 बाठ । पाणी । घी । रस । तेल । गुल । आमलवेतस । वेरजादिक  
 तणा जाजनउघाडा मूक्या । तेमाहि । कीडी कंथुआ माखी  
 चंदर । गिरोली प्रमुखजीवविणठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा  
 हेतें वांधिराख्या । घणीनिद्राकीधी । रागद्वेष लगै । एकनेरिद्धि  
 परिवारबांठी । एकनें मृत्यु हाणि विमासी ॥ आठमाअनर्थ  
 दंडव्रतविष० ॥ ८ ॥ \* ॥ नवमें सामायकव्रतै पांच अती  
 चार ॥ \* ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । सामायकलीधै । मनआहट  
 दोहट चिंतव्युं । वचनसावद्यबोल्या । कायअणपडिलेह्युं हलाव्युं ।  
 उत्तीवेलाइं सामायकनलीधुं । सामायकलेई उघाडैमुखबोल्या । ऊं  
 घआवीकीधी । बीजदीवातणी उजोहीलागी । कण कपासी  
 या माटी मीतुं नील फूल हरीकायना संघट्टहुआ । पुरुष तिर्य  
 चना संघट्ट हुआ । तथा स्त्री तिर्यची आजडी । मुहपत्तीउसंघ  
 ट्टी । सामायकअणपूरुं पारिउं । पारुंवीसारिउं ॥ नवमैसामा  
 यकव्रतविषय० ॥ ९ ॥ \* ॥ दशमैदेशावकासिक व्रतै पांचअ  
 तीचार ॥ \* ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे । पेसवण  
 प्पउगे । सद्दाणुवाए । रूवाणुवाए । बहियापुग्गलपक्खेवे । नि  
 यमितभूमिकामांहि । वाहिरथकीकांई अणाव्युं । आपकन्हाथी  
 बाहिरमोकल्या । सादकरी । रूपदेखाडी । काकरोनाखी

आपणपुं ठतुं जणाव्युं ॥ ❀ ॥ दशमें देशावकासिकव्रत० ॥ १० ॥  
 इग्यारमेपोषधोपवासव्रतें पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संथारुच्चार  
 विही । पमायतहचेव जोअणाजोए० ॥ पोसहलीधै । संथारात  
 णीचूमि बाहिरलाथंफिला । दिवसै सोध्यापडिलेह्या नही ।  
 मातरुं अणपडिलेहुं वावरिउं । अणपुंजी चूमिकाइं परठ  
 विउं । परठवतां चिन्तवणानकीधी । अणुजाणहजस्सुग्गहोन  
 कह्युं । परठयांपूवै बारत्रिणि बोसिरामि २ नकह्युं । पोसहशा  
 लामांहिं । पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहवी वी  
 सारी । पृथवीकाय । अप्पकाय । तेऊकाय । वाऊकाय ।  
 वनस्पतीकाय । व्रसकाय । तणा संघट्टपरिताप उपद्रवहुआ  
 संथारा पोरसितणो । विधि जणउ वीसारिउं । पोरसिमांहिउं  
 ध्या । अविधिसंथारुंपाथरुं । कालवेलायें पडिक्कमणुं नकीधुं  
 पारणादिकतणीचिंतानिपजावी । कालवेला देववांदवाबीसारि  
 या । पोसहअसूरोलियो । सवारोपारियो । पव्वतिथि आवी  
 पोसहलीधोनही ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्र० ॥ ११ ॥ ❀ ॥  
 बारमें अतिथि संविजागव्रतें पांच अतीचार ॥ ❀ ॥  
 सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेवै । ऊपरिथकै ।  
 महातमाप्रतेंअसुज्जुं दानदीधुं । अदेवातणीबुद्धै सूज्जुं फेडी  
 असूज्जुंकीधुं । देवातणीबुद्धै असूज्जुं फेडी । सूज्जुंकीधुं । आ  
 पणफेडीपरायुं कीधुं । विहरवावेला टलगयां । असुरकरी महा  
 तमातेड्या । मच्चरलगैदानदीधुं । गुणवंत आव्यै जगति नसाचवी  
 । ठतीसक्तिसाधर्मिक वातसल्यनकीधुं । अनेराईधम्मक्षेत्रसी  
 दाता । ठतीशक्तैऊधख्यानही ॥ ❀ ॥ बारमेंअतिथिसंविजागव्र०  
 ॥ १२ ॥ ❀ ॥ संजेहणातणा पांचअतीचार ॥ इहलोए परलोए०

इहलोकासंसप्पन्नगे । परलोगासंसप्पन्नगे । जीविआसंसप्पन्नगे ।  
 मरणासंसप्पन्नगे । कामजोगासंसप्पन्नगे । इहलोक मनुष्यजव  
 मान महत्त्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव च-  
 कवर्त्ति पदवांग्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी  
 वांगी । सुखआये जीववातणी वांगीकीधी । दुखआये मर  
 वातणी वांगी कीधी । काम जोग तणीइहा कीधी ॥ \* ॥ संलेह  
 णाव्रतवि० ॥ \* ॥ तपाचारबारेजेदै ॥ उअभ्यंतर । उवाहिर ।  
 अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पर्वति  
 थि उतीशक्तिकीधुं नही । ( उणोदरी ) कवल पांचसातऊणार  
 ह्यानही । ( द्रव्यसंक्षेप ) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही ।  
 आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । ( संलीणता ) अंगोपांगसं  
 कोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूठसी । साढपो  
 रसी । पुरमुट्ट । एकासणो । वैआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख प  
 च्चक्खाण पारवावीसाख्या । बैसतां नवकारजण्युनही । ऊठतां  
 दिवश्चरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । का  
 चोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ \* ॥ बाह्य तपव्रतवि० ॥ \* ॥ अभ्यं  
 तरतप ॥ \* ॥ पायडित्तंविणउ० । गुरुकनें मनसुद्धै आलोयण  
 लीधीनही । गुरुदत्तप्रायडित्ततप लेखासुद्ध पुहचाडयुं नही ।  
 देवगुरु संघसाहम्मीप्रतें विनयसाचव्योनही । वाचना पृष्ठना  
 परावर्त्तना अनुप्रेक्ष्या धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जायकी  
 धोनही । धम्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कम्म क्य नि  
 मित्त लोगस्स दस वीसनं काउसग्गकनकीधो ॥ \* ॥ अभ्यंतरत  
 पविषइउ० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ \* ॥ अणगुहियव  
 लविरिउ । परक्कमइजोजहुंतठाणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यवोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा  
सामायक दान शील तप ज्ञाना प्रमुख धम्मकृत्य तणे विषै ।  
मन वचन कायातणो ठतुं बलवीर्यगोपव्युं । रूडापंचांग खमा  
समण नदीधा वैठांपडिक्कमणंकीधुं ॥ \* ॥ वीर्याचारविष० ॥  
॥ \* ॥ नाणाइअठ अइवय । सम संलेहण पण पनरकम्मेसु ।  
बारसतव विरिअ तिगं । चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ पमिसिद्धाणंकरणे० । जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअजह ।  
वत्तीसअनंतकाय । बहुवीजजहण । महाआरंज महापरिग्रहादि  
क कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रा  
दिक नकीधा । जीवाजीवादिविचारसद्दहियानही । आपणी कुम  
तिलगै उतसुत्रपरूपणाकीधी । प्राणा तिपात १ । मृषावाद २ । अद  
त्तादांन ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ ।  
लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ ।  
परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृषावाद  
१७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअद्वारहपापस्थानकमांहि ।  
जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्मे ।  
श्री सम्यक् मूलवारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको  
अतीचार । पढदिवसमांहि । सूक्ष्म वादर जाणतां अजाण  
तां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिठामिडुक्कडं ।  
इति श्री श्रावकूकैवारहव्रतका अतीचार संपूर्णम् ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ जय तिहुअण वत्तीसीजि० ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जय तिहुअण वर कप्परुक्ख जय जिणधनंतरि ।  
जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअ कारि केसरि । तिहुअण जण

अविलंघियाण नुवणत्तय सामिअ । कुणसु सहाइ जिणेसपास  
 थंनणयपुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंतिजत्ति वर पुत्त कलत्तहि  
 ॥ धस सुवस हिरस पुस जण मुंजहि रज्जहि । पिक्खहि  
 मुक्ख असंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्प  
 रुक्ख सुक्खहि कुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजजार परिजुस कस  
 नहुव सुकुठिण । चक्खुक्खीण खणखुस नरसल्लिअ सूलिण । तु  
 हजिणसरण रसायणेण लहुहुंति पुणसव । जयधसंतरिपास  
 महवि तुहुं रोगहरोन्नव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धि  
 अपयत्तिण । नुवणप्पुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुहनामिण ।  
 तुह नामिण अपवित्तनवि जणहोइ पवित्तन । तंतिहुअण क  
 ल्हाणकोस तुहुंपासनिरुत्तन ॥ ४ ॥ खुदपत्तइ मंत तंत जंताइं  
 विसुत्तइ । चर थिर गरल गहुग्गखग्ग रिन्नवग्ग विगंजइ । दुत्थि  
 यसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदयकरि । डुरिअइं हरन सुपा  
 सदेव डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणा थंनेइन्नीम दप्पुद्धर  
 सुरवर । रक्खसजक्ख फणिंदविंद चोरानलजलहर । जलथल  
 चारि रवइखुद पसुजोइणिजोइअ । इयतिहुअण अविलंघिआ  
 णजयपास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थ अणत्थहित्थ नत्ति  
 अरनिप्पर । रोमंचंचिअ चारुकाय किस्सरनर सुरवर । जसु  
 सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु । सोन्नवणत्तय  
 सामिपास महमदन्नरिन्नवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअ मणकमलन्न  
 सल नयपंजरकुंजर । तिहुअणजण आणंदचंदन्नवणत्तय दि  
 णयर । जयमइमेयणि वारिवाह जयजंतुपिआमह । थंनणय  
 ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवसुअवसु सु  
 सुवसिन्नप्पसहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ

हि । जंजायइ बहुदरसणत्थ बहुनामपसिद्धव । सोजोइअम  
 एकमलजसल सुहपासपवद्धव ॥ ९ ॥ जयविप्रलरणजणिर  
 दसण थरहरिअ सरीरय । तरलिअनयण विसुससुस गग्गर  
 गिरकरुणय । तइं सहसत्ति सरंतिहुंति नरनासिअ गुरुदर ।  
 महाविज्जवि सिअसइपास जयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासवि  
 विअसंतनित्त पत्तंतपवत्तिय । वाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपु  
 लिय । मअहिमअसउअपुअअप्पाणंसुरनर । इयतिहुअण आ  
 णंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाणमहेसुघंट टंका  
 रवपिल्लिअ । वल्लिरमल्लमहल्लजत्तिसुरवरगंजुल्लिअ । हल्लुप्फ  
 लिअ पवत्तयंतिजवणेहिमहूसव । इयतिहुअणआणंदचंद ज  
 यपास सुहुम्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियर विहुरिय  
 तमपयहर । दंसिअसयल पयत्थसत्थ वित्थरिअपहाजर । क  
 लिकल्लसिअ जणघूअलोय लोयणहअगोयर । तिमिरइं निरु  
 हरपासनाह जुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥ तुहसमरणजल वरि  
 ससित्त माणवमइमेइणि । अवरारवरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेइ  
 णि । जायइफलजर जरियहरिय दुहदाहअणोवम । इयमइ  
 मेइणिवारिवाह दिसपासमइं मम ॥ १४ ॥ कयअविकल क  
 ल्लाणवल्लि उल्लूरिअउहवणुं । दाविअसग्ग पवग्गमग्ग दुग्गइग  
 मवारणुं । जयजंतुहजणएणतुल्ल जंजणियहियावहु । रम्मघ  
 म्मसोजयवपास जयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवा  
 सदरिअ परदरसणदेवय । जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुरपसु  
 वय । तुहउत्तउसुनउसुहु अविसंबुलचिछहि । इयतिहुअण व  
 णसींहपास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरय  
 ण करंजिअनहयल । फलिणीकंदलदल तमाल निल्लुप्पल



सामल । कमठासुरजवसग्गवग्ग संसग्गअगांजिअ । जयपच्च  
 कवजिणेसपास थंनणयपुरिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरुपमा  
 णुनेय वायाविविसंठल । नियतणुरविअविणयसहाव आलस  
 विहिलंघल । तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तन । इयमइमा  
 अवहीरपासपालहिविलवंतन ॥ १८ ॥ किंकिंक्किप्पिणयकलुण  
 किंकिंवनजंपिन । किंवनचिठिनकिठदेव दीणयमविलंबिन ।  
 कासनकियनिप्फल्ललल्ल अह्महिंदुहत्तइं । तहविनपत्तनताणकिं  
 पि पइंपहुपरिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिहुतुहुं मायवप्प तुहुं मि  
 त्तपियंकरु । तुहुंगइतुहुंमइतुंहिजताणतुहुंगुरुखेमंकरु । हउंदु  
 प्ररत्तारिअवरातराजलनिप्पग्गन । लीणतुहकमकमल स  
 रण जिणपालहिचंगन ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपा  
 वियसुहसय । किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ।  
 किविगांजिअरिजवग्गकेवि जसधवलिअनूअल । मइंअवहीर  
 हिकेणपाससरणागयवडल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्प  
 पत्तअण । तुहुंजिणपासपरोवयार करुणिकपरायण । सत्तुमित्त  
 समचित्तवित्तिनयनिंदिअसममण । माअवहीरिअजुग्गजवि म  
 इंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंबहुविहदुहंतत्तगत्ततुहुंदुहनासणप  
 रु । हउंसुयणहकरुणिकठाणतुहुंनिरुकरुणाकरु । हउंजिणपा  
 सअसामिसालतुहुंतिहुअणसामिअ । जंअवहीरहिमइंऊखंत  
 इयपासनसोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्गविजागनाहनहुजोअणतु  
 हसम । जवणुवयारसहावजाव करुणारससत्तम । समविसमइ  
 किंघणनिणइ नुविदाहसमंतन । इयदुहबंधवपासनाहमइंपालथु  
 णंतन ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएविअणविकिविजुग्गय ।  
 जंजोइय उवयारुकरइ उवयारसमुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेण

तइनाहिणचित्तत्त । तोजुग्गत्तअहमेवपास पालाहिमइं चंगत्त ॥  
 ॥ २५ ॥ अहअणुविजुग्गयविसेसकिविमणहिदीणह । जंपा  
 सवित्तवयारुकरइ तुहुंनाह समग्गह । सुच्चिअकिलकछाणजेण  
 जिणतुहपसीयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥  
 ॥ २६ ॥ तुहपत्थण नहु होइ विहल जिणजाणत्त किंपुण ।  
 हत्तंदुक्खित्त निरु सत्तत्त दुक्कत्तत्तस्सुयमण । तंमणत्त निमि  
 सेणएण एत्त विज्झइ लभ्भइ । सच्चंजंभुक्खियवसेण कि तंबरुप  
 चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअप्पपयासित्त ।  
 किज्जत्तजंनियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपित्त । अणुणजिणजगतुह  
 समोविदस्खिस्सदयासत्त । जइअवगिस्ससितुंहिजअहहकिहहो  
 सुहयासत्त ॥ २८ ॥ जइतुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलवित्त  
 तत्तजाणुंजिणपासतुह हत्तंअंगीकरिअत्त । इयमहयत्तिअजंन  
 होइसातुहत्तहावण । रक्खंतहनियकित्तिण्येजुज्झइअवहीरण ॥  
 ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइअणवणमहूसत्त । जंअणलिय  
 गुणगहण तुम्हमुणिजणअणिसिद्धत्त । इयमइंपसियसु पासना  
 हत्थंअणयपुरट्ठिअ । इयमुणिवर सिरिअन्नयदेव विस्सवइआणि  
 दिअ ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्थंजनक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ परकीसूत्र लि० ॥ ❀ ॥

तित्थंकरेअ तित्थे । अतित्थसिद्धेयतित्थसिद्धेय । सिद्धेयजिणे  
 यरिसी । महारिसिनाणंचवंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर ।  
 मविराहिअणतिन्नसंसारा । तेमंगलंकरित्ता । अहमविआराह  
 णात्तिमुहो ॥ २ ॥ मममंगलमरिहंता । सिद्धासाहूसुयंचवम्मो  
 यः । खंतीगुत्तीमुत्ती । अज्जवयामहवंचेव ॥ ३ ॥ लोकांमिसंज

याजंकरंति । परमरिसिदेसियमुयारं । अहमविउवडिउतं । म  
 हवयउच्चारणंकानं ॥ ४ ॥ सेकिंतंमहवयउच्चारणा । महवयउच्चा  
 रणापंचविहापन्नत्ता ॥ राईनोयणवेरमणठठा ( तंजहा ) सवा  
 उपाणाइवायाउवेरमणं । सवानमुसावायाउवेरमणं । सवानअ  
 दन्नादाणाउवेरमणं । सवानमेहुणाउवेरमणं । सवानपरिग्गहा  
 उवेरमणं । सवानराईनोयणाउवेरमणं । तत्थइखलु पढमेजंतेम  
 हवए पाणाइवायाउवेरमणं ॥ सबंजंतेपाणाइवायंपच्चरकामिं ।  
 सेसुहुमंवा बायरंवा तसंवा थावरंवा नेवसयं पाणेअइवाएज्जा  
 नेवन्नेहिं पाणेअइवायाविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणु  
 जाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का  
 एणं नकरोमि नकारवेमी करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि  
 तस्सजंतेपडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि ॥  
 सेपाणाइवायाएचउविहेपन्नत्ते ॥ (तंजहा) दवउ खित्तउ कालउ  
 नावउ दवउणंपाणाइवाए उसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा  
 इवाए सयललोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा नावउणं  
 पाणाइवाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमएइमस्सधम्मस्स केव  
 लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स  
 खंतीपहाणस्स अहिरणसोवणियस्स उवसमप्य जवस्स नववं  
 जचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स त्रिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स  
 निरगिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स  
 निवियारस्स निवित्तीलरकणस्स पंचमहवयजुत्तस्स असंनिहि  
 संचयस्स अविसंवाइयस्स संसार पारगामियस्स निवाणगमण  
 पज्जवसाण फलस्स पुविं अन्नाणयाए असवणयाए अवोहि  
 ए अणन्निगमेणं अन्निगमेणवा पमाणं रागदोसपडिव

द्वयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किडुयाए तिगारब गरुयाए  
 चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसहेणं पडिपुन्नजारीयाए सायासोक्ख  
 मणुपालयंतेणं इहंवाजवे अन्नेसुवाजवग्गहणेसु पाणाइवाउ  
 कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिंसमणुनाउ तंनिंदामी गरि  
 हामी तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिंदामि  
 पटुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्चरुक्कामि सबंपाणाइवायं जावज्जीवाए  
 अणिसिउहि नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवा  
 याविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि ( तंजहा ) अ  
 रिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्प  
 सक्खियं एवंहवई निक्खूवा निक्खूणीवा संजय विरय पडिहय  
 पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्ते  
 वा जागरमाणेवा एसखलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे  
 खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं पाणाणं सबे  
 सिं नूयाणं सबेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अज्ज  
 रणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए  
 अणुइवणयाए महत्थे महागुणे महाणुजवे महापुरिसा  
 णचिन्ने परमरिसिदेसिएपसित्थे तंडुक्खक्खयाए कम्मरकयाए  
 मोक्खयाए बोहिल्लानाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्ट उवसंपज्जा  
 ताणं विहरामि पढमेजंते महव्वए उवठ्ठिउमि सबानपाणाइ  
 वायाउवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चेजंतेमहव्वए मुसावायाउवेरम  
 णं । सबंजंतेमुसावायंपच्चक्खामि । सेकोहावा लोहावा नयावा  
 हासावा नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिंसुसं वायाविज्जा मुसंवा  
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं म  
 णेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंसमणु

जाणामि तस्सज्जंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा  
 णं वोसरामि । सेमुसावाए च उविहे पन्नत्ते ( तंजहा ) दव्वं उ  
 खित्तं उ  
 कालं उ जावं उ दव्वं उ णं मुसावाए सव्वदव्वे सु खित्तं उ णं मुसावाए लोए  
 वा अलोए वा कालं उ णं मुसावाए दिया वा राउं वा जावं उ णं मुसावा  
 ए रागेण वा दोसेण वा जं पियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि पन्नत्तस्स  
 अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहिं छियस्स विणयमूलस्स खंति पहाण  
 स्स अहिरण सुवस्सियस्स उवसमप्पन्नवस्स नववज्जं चेर गुत्तस्स  
 अप्पयमाणस्स निक्खवावित्तियस्स कुक्खी संबलस्स निरग्गि स  
 रणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्विया  
 रस्स निव्वित्ती लक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि  
 संचयस्स अविसंवाईयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण  
 पक्कवशाण फलस्स पुर्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए  
 अण्ण निगमेणं अन्निगमेण वा पमाएणं रागदोस पडिवद्धयाए  
 वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए च उ  
 क्कसाओवगएणं पचेदियवसट्ठेणं पप्पि पुन्नं चारियाए साया सोक्ख  
 मणु पालयंते णं इहं वा जवे अन्ने सुवा जवग्गहणे सु मुसावाओ  
 जासिओ वा जासाविउं वा जासिज्जंतो वा परेहिं सुमण्णानं तं निं  
 दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं  
 निंदामि पडुपन्नं संबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जा  
 वज्जीवाए अण्णिस्सिउं हिं नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिं मुसंवाया  
 विज्जा मुसंवायंते वि अन्ने न समण्ण जाणामि ( तंजहा ) अरिहंतस  
 क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं  
 एवं हवई निक्खूवा निक्खूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय  
 पावकम्मे दिया वा राउं वा एगउं वा परसागउं वा सुत्ते वा जागरमाणे

वा एसखलुमुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणु  
 गामिए पारगामिए सब्बेसिपाणाणं सब्बेसिन्नूयाणं सब्बेसिंजीवाणं  
 सब्बेसिसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अति  
 प्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुवणयाए महत्थे  
 महागुणे महाणुज्जावे महापुरसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे  
 तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारु  
 त्तरणाए तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ दोच्चेजंतेमहवए उव  
 छिन्नमिसवाउमुसावायाउवेरमणं ॥ २ ॥ अहावरेतच्चेजंतेमहवए  
 अदिन्नादाणाउवेरमणं सब्बजंतं अदिन्नादाणंपच्चक्खामि ॥ सेगा  
 मेवा नगरेवा रक्षेवा अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अ  
 चित्तमंतंवा नेवसयंअदिन्नंगिण्हियज्जा नेवन्नेहिअदिन्नंगिएहावि  
 ज्जा अदिन्नंगिएहंतंवे अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिवि  
 हं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरोमि नकारवेमि करंतंपि  
 अन्नंन समणुजाणामि तस्सजंतं पडिक्कमामि निदामि गरिहा  
 मि अप्पाणंवासरामि सेअदिन्नादाणेचउविहे पन्नत्ते ( तंजहा )  
 दवओ खित्तओ कालओ जावओ दवउणं अदिन्नादाणे गहणं  
 धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रक्षेवा  
 कालउणं अदिन्नादाणे दियावा राउवा जावउणं अदिन्नादाणे रा  
 गेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अ  
 हिसालक्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स  
 अहिरण सुवस्सियस्स उवसमप्पन्नवस्स नवबंजचेरगुत्तस्स अप्प  
 यमाणस्स निरकावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरगिगसरणस्स  
 संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स नि  
 वित्ति लक्खणस्स पंचमहवयजुत्तस्स असंनिहिसचयस्स अवि

संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमणपज्जवसाणफल  
 स्स पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणन्निगमेणं अ  
 न्निगमेणवा पमाएणं रागदोसपक्खिद्वयाए वालयाए मोहयाए मं  
 दयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसानुवगएणं पंचेंदिय  
 वसट्ठेणं पडिपुन्न नारियाए सायासोकखमणुपालयंतंतेणं इहंवाज्जवे  
 अन्नेसुवा नवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गहावियंवा धिप्पं  
 तंवा परोहिंसमणुनान्तंतंनिंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणे  
 णं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नसंबरेमि अणागयंपच्च  
 क्खामि सबंनंतंतेअदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवस  
 यंअदिन्नांगिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नांगिएहाविज्जा अदिहंगि  
 एहंतंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि ( तंजहा ) अरिहंतसक्खियं सिद्धस  
 क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई निक्खू  
 वा निक्खूणीवा संजय विरय पम्हिहय पच्चक्खायपावकम्मे दिया  
 वा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु  
 मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगा  
 मिए सबेसिंपाणाणं सबेसिंनूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं  
 अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपी  
 डणयाए अपरिआवणयाए अणुद्वणयाए महत्थे महागुणे म  
 हाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्ख  
 क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणा  
 ए त्तिकट्ट उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ तच्चेनंतंतेमहवएअश्रुठिउ  
 मिसवाउ अदिन्नादाणानुवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरेचउत्थेनंतंतेमहवए  
 मेहुणानुवेरमणं सबंनंतंतेमेहुणं पच्चक्खामि । सेदिबंवा माणुसं  
 वा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए  
तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवोमि  
करंतपी अन्नंन समणुजाणामि तस्सजंते पडिक्कमामि निंदामि  
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ सेमेहुणेचउविहेपन्नत्ते ( तंजहा  
दवउ खित्तउ कालउ जावउ दवउणंमेहुणे रूवेसुवा रूवसहग  
एसुवा खित्तउणंमेहुणे उट्टलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा  
कालउणं मेहुणे दियावा राउवा जावउणं मेहुणे रागेणवा दोसे  
णवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसाल  
क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिर  
न्न सुवणियस्स उवसमप्प नवस्स नववन्नचेरगुत्तस्स अप्पय  
माणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स  
संपक्खालियरस चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निबियारस्स निबि  
त्तीलक्खणस्स पंचमहवय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अ  
विसंवाहियस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमण पक्कवसाण  
फलस्स पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अण्णिगमेणं  
अन्निगमेणवा पमाएणं रागदोषपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए  
मंदयाए किडुयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसानवगएणं पंचे  
दियवसट्ठेणं पडिपुन्नचारियाए सायासोरक मणुपालयंतेणं इहं  
वाज्जवे अन्नेसुवा नवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा से  
विज्जंतंवा परेहिंसमणुणाउ तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिवि  
हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निदामि पडुपन्नसंबरोमि अ  
णागयं पच्चक्खामि सबंमेहुणं जावजीवाए अणिस्सिउहि नेव  
सयं मेहुणंसेविज्ञा नेवन्नेहि मेहुणं सेवाविज्ञा मेहुणं सेवंतेवि  
अन्नेन समणुजाणामि ( तंजहा ) अरिहंतसक्खियं सिद्धस



क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ नि  
 क्खूवा निक्खूणीवा संजयविरयपप्पिहय पच्चक्खाय पावकम्मे  
 दियावा रात्तवा एगोवा परिसागत्तवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस  
 खल्लु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सब्बेसिं पाणाणं सब्बेसिं नूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिं  
 सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणया  
 ए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्वणयाए महत्थे महागु  
 णे महाणुजावे महापुरिसाणुचिप्पे परमरिसिदेसिएपसित्थे तंदु  
 क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारु  
 त्तारणाए त्तिकट्टु त्तवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ चत्तत्थेज्जन्ते महवए  
 त्तवत्तिज्जमिसत्तात्त मेहुणात्त वेरमाणं ॥ ४ ॥ अहावरेपंचमेज्जन्तेमहव  
 ए परिग्गहात्त वेरमाणं सब्बज्जन्तेपरिग्गहं पच्चक्खामि सेअप्पंवा व  
 हुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि  
 ग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हविज्जा परि  
 ग्गहं गिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरोमि नकारवेमि करंतंपि  
 अन्नंनसमणुजाणामि तस्सज्जन्ते पप्पिक्कमामि निंदामि गरिहामि  
 अप्पाणं वोसरामि । सेपरिग्गहेचत्तविहेपन्नत्ते ( तंजहा ) दवत्तं खि  
 त्तत्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तंणंपरिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खि  
 त्तत्तंणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रण्णेसुवा कालत्तंणं परिग्गहे  
 दियावा रात्तवा जावत्तंणंपरिग्गहे अप्पग्घेवा महग्घेवा रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसाल  
 क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्न  
 सवन्नियस्स त्तवसमप्पन्नवस्स नवबंनं ० अप्पयं ० निक्खावित्थियं

स्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोस  
 स्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निवत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय  
 जुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिय  
 स्स निव्वाणगमणपक्कवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए असवण  
 याए अबोहिए अणज्जिगमेणं अज्जिगमेणवा पमाएणं रागदोसप  
 डिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरु  
 आए चत्तकसानवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्न जारियाए सा  
 यासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवाज्जवेअन्नेसुवा जवग्गहणेसु परि  
 ग्गहो गहिज्जवा गहाविज्जवा धिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाज्ज तंनिदा  
 मि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिदा  
 मि पडुप नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सबंपरिग्गहं जावज्जी  
 वाए अणिस्सिज्जहिं नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिप  
 रिग्गहं परिगिण्हविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणु  
 जाणामि ( तंजहा ) ॥ अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुस  
 क्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइज्जिक्खूवा ज्जिक्खूणी  
 वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राज्जवा  
 एगोवा परिसागज्जवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्सवे  
 रमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए स  
 वेसिंपाणाणं सबेसिज्जूयाणं सबेसिजीवाणं सबेसिसत्ताणं अड  
 क्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीड  
 णयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्थेमहागुणे महा  
 णुज्जावे महापुरिसाणुचिन्ने परमारिसिदेसिए पसत्थे तंडुक्खक्ख  
 याए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिल्लाजाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकट्ट उवसंपक्कत्ताणंविहरामि ॥ पंचमेज्जंतेमहव्वए उवठ्ठिज्जमि

सञ्चान् परिग्गहान्तेवेरमाणं ॥ ५ ॥ अहावरे उठेन्नतेवए राईन्नोयणा  
 न्तेवेरमाणं सञ्चान्तेराईन्नोयणं पञ्चक्खामि ॥ सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयं राई न्नुंजिज्जा नेवन्नेहिं राई न्नुंजावि  
 ज्जा राईन्नुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करतंपि  
 अन्नंनसमणुजाणामि तस्सन्नते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि  
 अप्पाणं बोसरामि । सेराईन्नोयणेचत्तविहेपन्नत्ते ( तंजहा ) दब्बन्ते  
 खित्तन्ते कालन्ते जावन्ते दब्बन्ते राईन्नोयणे असणंवा पाणंवा खाइ  
 मेवा साइमेवा खित्तन्ते राईन्नोयणे समयखित्ते कालन्ते राईन्नो  
 यणे दियावा रान्तेवा जावन्ते राईन्नोयणे तिवखेत्ता कडुएवा कसा  
 इलेवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपिय  
 मए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सञ्चा  
 हिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरत्तसुवण्णियस्स  
 नवसमप्पन्नवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खवि  
 त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरगिसरणस्स संपक्खालियस्स च  
 त्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पं  
 चमहवयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स सं  
 सारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुविंअन्ना  
 णयाए असवणयाए अबोहिए अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा  
 पमाणं रागदोसपम्बिद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए कि  
 ड्डयाए तिगारव गरुआए चत्तक्कसान्तेवगएणं पंचेंदियवसट्ठेणं  
 पडिपुन्नन्नारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाज्जवेअन्नेसुवा  
 ज्जवग्गहणेसु राईन्नोयणं नुत्तंवा न्नुंजावियंवा न्नुंजंतंवा परेहिंस  
 मणुन्नान्ते तंमिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए

काएणं अइयं निंदामि पटुपन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि स  
 वं राईन्नोयणं जावळीवाए अणिस्सजहिं नेवसयं राईन्नंजि  
 ज्जा नेवन्नेहिराईन्नंजाविज्जा । राईन्नंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणा  
 मि ( तंजहा ) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं दे  
 वसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ जिक्खूवा जिरकूणीवा संज  
 य विरय पमिहय पच्चक्खायपावकस्मे दियावा राज्जा, एगोवा प  
 रसागज्जा सुत्तेवा जागरमाणेवा, एसखलु राईन्नोयणस्सवेरमणे  
 हिए सुहे, खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिंपाणा  
 णं सबेसिंजूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिसत्ताणं अडुक्खणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरि  
 यावणयाए अणुइवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुजावे महापु  
 रिसाणुचिन्हे परमरिसिदेसिएपसत्थे तंजुक्खक्खयाए कम्मरक  
 याए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंप  
 ज्जिताणं विरामि ॥ उठ्ठेजंतेवए उवठ्ठिजमि सबान्, राईन्नोयणान्वे  
 रमाणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइंपंचमहबयाइं । राईन्नोयणवेरमाणउठाइं । अत्त  
 हियठाए उवसंपज्जिताणंविहरामि ॥ १ ॥ अप्पसत्थायजेजोगा । प  
 रिणामायदारुणा । पाणाइवायस्स वेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥  
 तिब रागायजान्नासा । तिबदोसातहेवय । मुसावायस्सवेरमणे ।  
 एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ उग्गहंचअजाइत्ता । अविदिन्नेवउग्गहे ।  
 अदिन्नादाणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ४ ॥ सद्धारूवारसागं  
 धा । फासाणंपवियारणा । मेहुणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे  
 ॥ ५ ॥ इत्थामुत्तायगेहीय । कंखालोत्तेयदारुणे । परिग्गहस्सवे  
 रमाणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ अयमत्तेआहारे । सूरखित्तेयसं  
 किए । राईन्नोयणस्सवेरमाणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ दंसणना

एणचरित्ते । अविराहिताठ्ठिउसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे ।  
 विरयामोपाणाइवायान् ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिता  
 ठ्ठिउसमणधम्ममे । वीयंवयमणुरक्खे । विरयामोमुसावायान् ॥ २ ॥  
 दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताठ्ठिउसमणधम्ममे । तइयंवयमणु  
 रक्खे । विरयामोअदिन्नादाणान् ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अ  
 विराहिताठ्ठिउसमणधम्ममे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमे  
 हुणान् ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताठ्ठिउसमणधम्ममे ।  
 पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहान् ॥ ५ ॥ दंसणनाणच  
 रित्ते । अविराहिताठ्ठिउसमणधम्ममे । उठंवयमणुरक्खे । विर  
 यामोराईओयणान् ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिन् । जुत्तोगुत्तोठ्ठि  
 उसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायान् ॥ १ ॥  
 आलयविहारसमिन् । जुत्तोगुत्तोठ्ठिउसमणधम्ममे । वीयंवयमणु  
 रक्खे । विरयामोमुसावायान् ॥ २ ॥ आलयविहारसमिन् ।  
 जुत्तोगुत्तोठ्ठिउसमणधम्ममे । तइयंवयमणुरक्खे । विरयामोअदि  
 न्नादाणान् ॥ ३ ॥ आलयविहारसमिन् । जुत्तोगुत्तोठ्ठिउसमण  
 धम्ममे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमेहुणान् ॥ ४ ॥ आल  
 यविहारसमिन् । जुत्तोगुत्तोठ्ठिउसमणधम्ममे पंचमवयमणुरक्खे ।  
 विरयामोपरिग्गहान् ॥ ५ ॥ आलयविहारसमिन् । जुत्तोगुत्तो  
 ठ्ठिउसमणधम्ममे । उठंवयमणुरक्खे । विरयामोराईओयणान्  
 ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिन् । जुत्तोगुत्तोठ्ठिउसमणधम्ममे । ति  
 विहेणपम्किंतो । रक्खामिमहवएपंच ॥ ७ ॥ सावज्जजोगमेगं  
 मिठ्ठत्तंएगमेवअप्पणां । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहवएपंच  
 ॥ १ ॥ अणवज्जजोगमेगं । सम्मत्तंएगमेवनाणंतु । उवसंपन्नोजुत्तो  
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २ ॥ दोचेवरागदोसे । दुन्नियजाणाइअट्ठरु

दाइं । परिवर्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३ ॥ डुविहंचरित्तध  
म्मं । डुन्नियजाणाइधम्मसुक्काइं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्व  
एपंच ॥ ४ ॥ किन्हानीलाकाउ । तिन्निअलेसानअप्पसत्थाउ । परि  
वर्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ५ ॥ तेऊपह्मासुक्का । तिन्नि  
यलेसानसुप्पसत्थाउ । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच  
॥ ६ ॥ मणसामणसच्चविक । वायासच्चेणकरणसच्चेण । तिन्नि  
हेणविसच्चविक । रक्खामि महव्वएपंच ॥ ७ ॥ चत्तारियडुहसि  
ज्जा । चत्तरोसन्नातहकसायाय । परिवर्जंतोगुत्तो । रक्खामि  
महव्वएपंच ॥ ८ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा । चत्तविहंसंबरंसमाहिं  
च । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ९ ॥ पंचेवयकामगु  
णे । पंचेवय अन्हवेमहादोसे । परवर्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्व  
एपंच ॥ १० ॥ पंचेदियसंबरणं । तत्तोपंचविहसंवसज्जायं । उव  
संपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ११ ॥ उज्जीवनिकायवहं  
उप्पियन्नासानअप्पसत्थाउ । परिवर्जंतो गुत्तो । रक्खामि मह  
व्वएपंच ॥ १२ ॥ उविहमभित्तरयं । वज्जंपियउविहंतवोकम्मं ।  
उवसंपन्नो जुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १३ ॥ सत्तन्नयछाणाइं ।  
सत्तविहंचेवनाणविभ्रंगं । परिवर्जंतो गुत्तो । रक्खामिमहव्व  
एपंच ॥ १४ ॥ पिमिसणपाणेसण । उग्गहसतिकया महज्जय  
णा । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १५ ॥ अठमय  
छाणाइं । अठयकम्माइतेसिवंधच । परिवर्जंतो गुत्तो रक्खामि  
महव्वएपंच ॥ १६ ॥ अठयपवयणमाया । दिछाअठविहनिछि  
अठेहि । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १७ ॥ नवपाव  
नियाणाइं । संसारत्थाय नवविहाजीवा । परिवर्जंतोगुत्तो ।  
रक्खामि महव्वएपंच ॥ १८ ॥ नववज्जचेरगुत्तो । डुनवविहंवं

नचेरपमिसुद्धं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहवएपंच ॥ १९ ॥  
 उवघायंचदसविहं । असंबरंतहयसंकिलेसंच । परिवज्जंतोगुत्तो ।  
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २० ॥ चित्तसमाहिठाणा । दसचेवदसा  
 उंसमणधम्मंच । उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहवएपंच ॥ २१ ॥  
 आसायणंचसवं । तिगुणंडकारसंविवज्जंतो । उवसंपन्नोजुत्तो ।  
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २२ ॥ एवंतिदंरुविरत्त । तिगरणसुद्धोतिसल्ल  
 निसल्लो । तिविहेणपम्किंतो । रक्खामिमहवएपंच ॥ २३ ॥ इच्चेयं  
 महवयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंवसात्त साहणत्तो पाव  
 निवारणं निकायणा नावविसोही पमाग्गहणं निज्जुहणाराह  
 णागुणाणं संवरजोगो पसत्थजाणोवत्तया जुत्तयानाणे परमत्तो  
 उत्तमत्तो एसतित्थंकरेइ रागदोसमहणेहिं देसित्तपवयणस्ससारो  
 ठज्जीवनिकायसंजमं उवसंवसित्तं तिब्बुक्कसक्कयंठाणं अणुवगया  
 नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संगमाणमूरण गुणरयण सायर  
 मणंतमप्पमे नमोत्थू ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स नमोत्थू  
 ते अरिहत्तं नमोत्थू ते जगवत्तं ( तिकट्टु ) इच्चेसा खलुमहवय उच्चा  
 रणाकया इच्चामोसुत्तकित्तणं कात्तं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिं  
 इमंवाइयं ठविहमावस्सयंजगवंतं ( तंजहा ) सामाइयं १ चत्तवीस  
 त्थत्त २ वंदणयं ३ पम्किमणं ४ कावसग्गो ५ पच्चक्खाणं ६  
 सबेहंपिण्यमि ठविहे आवस्सए जगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गथे  
 सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा नावावा अरिहंतोहिं जग  
 वंतोहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेजावेसदहामो पत्तियामो रोएमो  
 फांसेमो पालेमो अणपालेमो तेजावेसदहंतोहिं पत्तयंतोहिं रोयं  
 तोहिं फासंतोहिं पालंतोहिं अणुपालंतोहिं ( अंतोपरकस्स ) जंवाइयं  
 पढियं परियट्ठियं पुत्ठियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुक्ख

क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तार  
 णाए त्तिकद्दु उवसंपज्जत्ताणं विहरामी ( अंतोपक्खस्स ) जंनवाइ  
 यं नपढियं नपरियट्ठियं नपुब्भियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
 वले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमा  
 मो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अणुठेमो  
 अहारिहंतवोकम्मं पायवित्तंपडिवज्जामो ॥ तस्समिहामिडुक्क  
 ढं ॥ नमोतेसिखमासमणाणं जेहंडमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्का  
 लियं जगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्प  
 सुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणियं जीवान्निगमो पन्नव  
 णा महापन्नवणा नंदीअणुजगदाराइं देविदव्वत तंदुलवेयालियं  
 चंदाविज्जयं पमायप्पमायं पोरसिमंडलं मंरुलप्पवेसो गणिवि  
 ज्जा विज्जाचरणविणिठ्ठं जाणविज्जती आणविज्जती आयवि  
 सोही मरणविसोही संलेहणासुयं वीयरगसुयं विहारकप्पो च  
 रणविसोही आत्तरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सर्वेहिंपिएयंमि  
 अंगवाहिरिए उक्कालिए जगवंते ससुत्ते सअत्थेसग्गंथं सन्निज्जुत्ती  
 ए ससंगहणीए जेगुणावा जावावा अरिहंतंतेहिं जगवंतेहि पन्नत्ता  
 वा परूवियावा तेजावे सहहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पा  
 लेमो अणुपालेमो ते जावेसद्वहंतंतेहि पत्तियंतेहि रोइंतेहि फा  
 संतेहि पालंतेहि अणुपालंतेहि ( अंतोपरक्खस्स ) जंवाइयं पढियं  
 परियट्ठियं पुब्भियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए  
 कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए त्तिकद्दु  
 उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ( अंतोपक्खस्स ) जंनवाईअं नपढियं  
 न परियट्ठियं नपुब्भियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी  
 रिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निदा



मो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अणुठेमो अहा  
 रिहंतवोकम्मं पायवित्तं पमिवज्जामो ॥ तस्समिञ्चामिउक्कडं ॥  
 ॥ नमोतेसिखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहरियं कालि  
 यं नगवंतं ( तंजहा ) उत्तरज्जयणाइं दसानकप्पो ववहारो इसि  
 ज्ञासियाइं निसीहं महानिसीहं जंबूदीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंद  
 पन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविन्नत्ती महल्लियावि  
 माणपविन्नत्ती अंगचूलीयाए वंगचूलीयाए विवाहचूलीयाए  
 अरणोविवाए वरुणोविवाए गरुलोविवाए वेसमणोविवाए वेलं  
 धरोविवाए देविंदोविवाए उठाणसुए समुठाणसुए नागपरियाव  
 लियाणं निरयावलीयाणं कप्पियाणं कप्पवडिंसियाणं पुष्पि  
 याणं पुष्पचूलियाणं वण्हीदसानं आसीविसजावणाणं दिठीविस  
 जावणाणं चारणसमणजावणाणं महासुविणजावणाणं तेअग्गि  
 निसग्गाणं सबेहिंपिएयंमि अंगवाहिरए कालिए नगवंते ससुत्ते  
 सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहिणीए जेगुणावा जावावा  
 अरिहंतेहिं नगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेजावे सद्वहामो प  
 त्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेजावेसद्वहंतेहिं  
 पत्तहिंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं ( अंतो  
 पक्खस्स ) जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुढियं अणुपेहियं अणु  
 पालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए वोहिलान्ना  
 ए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टू उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ( अंतोप  
 क्खस्स ) जंनवाइयं नपढियं नपरिट्ठियं नपुढियं नाणुपेहियं  
 नाणुपालियं संतेवले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआ  
 लोएमो पमिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो  
 अकरणयाए अणुठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायवित्तं पमिवज्जा

मो तस्समिच्चामिडुक्कडं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिइमंवा  
 इयं डुवालसंगं गणिपिण्णं जगवंतं ( तंजहा ) आयारो सूअग  
 डो छाणांग समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ उवासगदसा  
 उ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइदसाउ पन्हावागरणं विवागसु  
 यं दिठ्ठिवाउ सबेहिपि एयंमि डुवालसंगं गणिपिण्णं जगवंतेहि  
 पन्नत्तावा परूवियावा तेजावे सदहामो पत्तियामो रोऐमो फा  
 सेमो पालेमो अणुपालेमो तेजावे सदहंतोहि पत्तियंतोहि रोयंते  
 हि फासंतोहि पालंतोहि अणुपालंतोहि ( अंतोपक्खस्स ) जंवाइ  
 यं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं तंडुक्ख  
 क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए वोहिलान्नाए संसारुत्तारणा  
 ए तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि ( अंतोपक्खस्स ) जं नवाइयं  
 न पढियं न परियट्ठियं न पुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेव  
 ले संतेवीरिए संतेपुरसकार परिक्रमे तस्सअलोएमो पडि  
 क्कमामो निदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अ  
 पुठेमो अहारिहंतवोक्कम्मं पायवित्तंपडिवज्जामो तस्समिच्च  
 मि डुक्कडं ॥ नमो तेसिंखमासमणाणं जेहिइमंवाइयं डुवाल  
 संगं गणिपिण्णं जगवंतं सम्मं काएण फासंति पालंति पूरंति  
 तीरंति किट्ठंति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहंमि त  
 स्समिच्चामि डुक्कडं ॥ सुयदेवया जगवई । नाणावरणीय क  
 म्मसंघायं । तेसंखवेउसययं । जेसंसुयसायरेज्जात्ति १ इतिश्री  
 पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पाक्षिकखामणा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इच्चामिखमासमणो पियंचमे जंजे हछाणं तुछाणं

अप्पायंकाणं अन्नग्ग जोगाणं सुवयाणं सायरिय उवझायाणं  
 नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसाअप्पाणं जावेमाण्णं बहुसुत्तेण्णे  
 दिवसो पक्खो चोमासियो संवत्तरिओ वड्ढंतो अन्नोयत्तेकल्लाणेणं  
 पज्जु वड्ढिं सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि तुप्पेहिंसम्मं । इतिगुरु  
 वचनं ॥ इहामिखमासमणो पुविंचेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुप्पेणं  
 पायमूले विहरमाणेणं जेकेई बहुदेवसिया साहुणोदिठा सम  
 णावा गामाणुगामडुइज्ज माणावा रायणिया संपुब्बंति उमराय  
 णिया वंदंति अज्जयावंदंति अज्जयान्वंदंति सावयावंदंति  
 सावयान्वंदंति अहंपिनिसब्बो निक्कसान् तिकट्ठु सिरसा मण  
 सा मत्थएणवंदामि ॥ इतिशिष्यसाधू वचनं ॥ इहां गुरुववचन  
 अहमविवंदामेवि चेइयाइं ॥ २ ॥ अप्पुठ्ठिंमि तुप्पेणं संतियं  
 अहाकप्पंवा वत्थंवा पम्भिग्गहंवा कंबलंवा पायपुब्बणंवा रजहर  
 णंवा अक्खरंवा पायंवा गाहंवा सिलोगंवा अठंवा हेनंवा पसि  
 णंवा वागरणंवा तुप्पेवि यत्तेणंदिन्नं मएअविणए अपम्भिच्चियं ॥  
 तस्समिच्चामि उक्कमं ॥ इतिसाधुवचनं ॥ ॥ इहां आय  
 रियसंतियं ॥ इति गुरुवाक्यं ॥ २ ॥ इहामि खमासमणो  
 अहमविपुब्बाइं कयाइंच मेक्कियकम्माइं आयारमंतरे विणयमं  
 तरे सेविं सेवाविं अवग्रहिं सारिं वारिं चोइं पडिचो  
 इं वियत्तामे पडिचोयणा उवड्ढिंहिं तुप्पेणं तवतेयसिरिए  
 इमान्चानरंतसंसारकंतारान्साहट्ठु नित्थरिस्सामि तिकट्ठु सिर  
 सा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ इति शिष्यवचनं ॥ इहाचार्यव  
 चनं नित्थारगपारगाहोह ॥ इति श्रीपाद्विक्रामणकानि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातेस्मरणस्तोत्र महाप्रज्ञाविक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजियंजिअसवन्नयं । संतिं च पसंत सवगयपावं । जयगुरुसं  
तिगुणकरे । दोविजिणवरेपणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलजावे ।  
तेहंविनलतवनिम्मलसहावे । निस्वममहप्पजावे । थोसामिसुदिहसआवे ॥ २ ॥  
गाहा ॥ सबडुक्खप्पसंतिणं । सबपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संतिणं । नमो  
अजियसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहपवत्तणं । तवपुरिसुत्तमनाम  
कित्तणं । तहयधिइमइपवत्तणं । तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥  
किरिआविहिसंचिय कम्मकिलेस विमुक्खयरं । अजियंनिचियं च गुणेहि  
महासुणिसिद्धियं । अजियस्सय संति महासुणिणोविअ संतिअरं । सययं म  
मणिवुड्ढकारणयंचनमंसणिअं ॥ ५ ॥ आलिं गणिअं ॥ पुरिसाजइ डु  
क्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संतिं च जावउ । अज  
यकरे सरणंपवज्झहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइ तिमिरविरहिय । सुव  
रय जरमरणं । सुर असुर गरुड जुअगवड । पयय पणिवडयं । अजिय  
महमविय सुनयनयनिउण मज्जयकरं । सरणमुवसरिअ जुविदिविज्जमहियं  
सययसुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिणुत्तम मुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्जव  
मद्व खंतिविमुत्ति समाहिनिहिं । संतिअरंपणमामि दमुत्तमतित्थयरं । सं  
तिसुणीममसंतिसमाहिवरंदिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवंचवर  
हत्थि मत्थयपसत्तवित्थिणसंथियं थिरसरिद्ववत्तं । भयगजलीलाय माणव  
रगंधहत्थिपत्थाणपड्डिअं । संथवारिहं हत्थिहत्थवाहुं । धंतकणगरुप्रगानि  
स्वहयपिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारूवं । सुडसुहमणाजिराम परम  
रमणिज्जवरदेवडुंडुहि । निनायमहुरयरयसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेढउ ॥ अजिअजिआ  
रिगणं । जिअसवन्नयंजवोहरिउ । पणमामिअहंपयउ । पावंपसमेनुमेज्जयवं  
॥ १० ॥ रासालुधुन ॥ कुरुजणवयहत्थिणानुर । नरीसरोपदमं । तउमहा  
चक्कवट्टिओए । महप्पजावो । जोवावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगराणिगमजण  
वयवई । वत्तीसारायवरसहस्साणजायमग्गो । चउदसवररयण नवमहानिहि  
चउसत्तिहस्सपवरज्जुवईण सुन्दरवई । जुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी अन्न  
वइगामकोत्तिसामी । आसी जो जारहम्मिज्जयवं ॥ ११ ॥ वेढउ ॥ तंसंतिंसंति

अरं । संतिहं सब्रया । संतिथुणामिजिणं संतिविहेनुमे ॥१२॥ रासाणंदियअं  
 इख्खागुविदेहनरीसर नरवसहामुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण विग  
 यतमा विहुअरया । अजियनुत्तमतेअगुणेहिमहामुणि अमिअबला विनुलकु  
 ला । पणमामितेअवन्नयसूरण जगसरणाममसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव  
 दाणबिंदचंदसूर वंदहठतुठजिठपरम । लठरूवधंतरुप्पपट्टसेय सुधनिधिव  
 ल । दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर । दित्ततेयबिंदधेयसबलोय  
 नाविअप्पनावणे । पइअसमेसमाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमलससिक  
 लाइरेअ सोमं । वितिमिरसूरकलाइरेअ तेयं । तिअसवईगणाइरेअ रूवं । धर  
 णीधरपवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेय सयाअजियं । सारीरेय  
 बले अजिअं । तवसंजमेय अजिअं । एसथुणामि जिण मजिअं ॥ १६ ॥  
 नुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससि । तेय गुणेहिं पावइ  
 नतं नवसरयरवि । रूव गुणेहिं पावइनतं तियसगणवई । सारगुणेहिं पावइन  
 तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं ।  
 धीरजण थुअच्चिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयणं ।  
 संतिमहंमहामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललियअं ॥ विणनणय सिरर  
 इअंजलि रिसिगुणसंथुअंथिमिअं । विवुहाहिव धणवइनरवइ । थुअमहि  
 अच्चिअंबहुसो । अइरुगय सरयदिवायर । समहिअ सप्पन्नंतवसा । गयणं  
 गणविअरण । समुइअ चारण वंदिअंसिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥  
 असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोमिसयसंथुअं । समण  
 संघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं अरयं अरुअं । अजियं अजियं  
 पयणपणमे ॥ २१ ॥ बिज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाणदिव्वकणग रहतुरय  
 पहकरसइहिंहुलिअं । ससंजमोरयणखुज्जिअल्लुलिअचलकुंमलं । गयतिरीड  
 सोहंतमनलिमाला ॥ २२ ॥ वेढन ॥ जंसुरसंघासासुरसंघा । वेरविनुत्ताअत्तिमुज्ज  
 ता । आयरन्नुसिअसंजमपिंमिअ । सुद्धसुविह्मिअ सबबलोघा । उत्तमकंचणर  
 यणपरुविअ । आसुरन्नुसणआसुरिअंगा । गायसमोणयअत्तिवसागय । पंज  
 लिपेसिअसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं । ति  
 गुणमेवय पुणोपयाहिणं । पणमिऊणयजिणंसुरासुरा । पमुइआ सन्नवणाइ

तोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपिपंजली । रागदोसत्रयमोहवज्जि  
 अं । देवदाणवनरिदवंदिअं । संतिमुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवर  
 रंतर वियारणिआहि । ललियहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणित्थणसालणि  
 आहिं । सकलकमलदललोयणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतरथणजर  
 विणमिअगायलयाहिं । मणिक्चणपसिदिलमेहल सोहियसोणितडाहिं । वर  
 खिखिणि नेजर सतिलय वलय विजूसणिआहिं । रयकर चजर मनोहर सुंदर  
 दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआयज  
 स्सतेसुविकमाक्कमा । अप्पणोनेलाडएहिं मंरुणोड्डणप्पगारएहिं केहिंकेहिवी ।  
 अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं चित्तएहिं संगयं गयाहिं । जत्तिसन्निविठिवंदणाग  
 याहिं हुं तितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहंजिणचंदं । अजिअं  
 जिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयउपणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदि  
 अस्सा । रिसिगण देवगणेहिं । तोदेववहुहिं । पयउपणमिअस्सा । जस्सजगुत्त  
 मसासणयस्सा । जत्तिवसागयपिंमियआहिं । देववररत्तसावहुआहिं । सुरवररड  
 गुणपंमिअयाहिं ॥ ३० ॥ ज्ञासुरिअं ॥ वंससदतंतितालमेजए । तिउक्खराजि  
 राम सदमीसएकएअ । सुडसमाणणे असुअसज्जगीअपायजालवंदिआहिं ।  
 वलयमेहला कलावनेउरा जिराम सदमीसएकएय । देवनट्टिआहिं । हावजाव  
 विअमप्पगारएहिं । नच्चिऊणअंगहारएहिं । वंदिआय जस्सतेसुविकमाक्कमा ।  
 तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं । पसंतसवपावदोसमेसहं । नमामिसंतिमुत्तमं  
 जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥ उत्तचामर पडागज्जुअजव मंमिआ । ऊयवर मगर तुरग  
 सिरिवत्तमुलंढणा । दीव समुद मंदिर दिसागय सोहिआ । सत्थिअ वसहसीह  
 सिरिवत्त मुलंढणा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहावलठा समपडठा । अदोसपुठा  
 गुणोहिजिठा । पसायसिठा तवेणपुठा सिरीडंढठा रिसीहिज्जुठा ॥ ३३ ॥  
 वाण वासिआ ॥ तेतवेण धुअमवपावया । सब्बलोअहिअमूलपावया । संथु-  
 आ अजिअसंति पावया । हुंतुमेमिवसुहाण दावया ॥ ३४ ॥ अपरंतिका ॥  
 एवंतववल विज्जं ॥ थुअंमए अजियसंति जिणज्जुअलं । ववगयकम्मरयमलं ।  
 गयंगयं सासयंविमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तंवहुगुणप्पसायं । सुक्खसुहेणपरमेण  
 अविंसायं । नासेउमे विसायं । कुणउअपरिंसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

तंमोएनअ नंदिं । पावेनुअ नंदिसेणमज्जिनंदिं । परसाविय सुहनंदिं । ममय  
दिमन संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचानुम्मासे । संवठ्ठर राइएय-  
दिअहेअ । सोअवो सवेहिं । उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो  
निसुणइ । उअनकालंपि अजिअ संति थुअं । नहु हुंति तस्सरोगा । पुव्वुप्पणा  
विनासंति ॥ ३९ ॥ जइइव्वह परमपयं । अहवाकित्तीसु वित्थमा अवणे तातिडु-  
कुधरणे । जिणवयणे आयरंकुणह ॥ ४० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उव्वासिकम नक्खनिग्गयपहादंरुव्वलेणंगिणं । वंदा रूण दिसंतइ  
वपयनं निव्वाण मग्गावलं । कुंदिंउज्जल दंतकंति मिसन नीहंतनाणंकुरु ।  
केरेदोवि दुइज्जसोलसजिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमि-  
णिज्जं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सयलनहयलंवा लंघए  
जोपएहिं ॥ अजिअ महवसंतिं सोसमत्थोथुणेनं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाण  
व्वासिअत्तिप्परेण । गुणकणमिवक्त्ति हामिचिंतामणिव । अलमहव अचिंता  
एंतसामत्थनसिं । फलहइ लहुसवं वंठिअं णिठ्ठिअंमे ॥ ३ ॥ सयलजयहि  
आणं नामिमित्तेणजाणं । बिहडइलहुपुठा । निठदोवट्ठवट्ठं । नमिरसुरकिरीडू  
वठपायारविंदे । सययमजिअसंती ते जिणिं देप्पिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती  
वट्ठएदेहदित्ती । विलसइ जुविमिती जायए सुप्पविती । फुरइ परमतिती  
होइसंसारठिती । जिणजुअपयअत्ती हीअचिंतोस्सत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं  
चूरिदिवंगहारं । फुडवणरसआवो दारसिंगारसारं । अणिमिसरमणिज्ज दंसण-  
हेअणीया । इवपणमणमंदा कासि नटोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंती ।  
तेकयासेससंती । कणयरयपसंगा उज्जएजाणसुत्ती । सरअसपारेरंआ रंजिनिव्वा  
णलढी । घणथणघुसिणंकु प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयअंगं वत्थुणिच्चं  
अणिच्चं । सदसदणजिलप्पा लप्पमेअंअणेणं । इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धचजेसिं ।  
वयणमवयणिज्जं ते जिणे संजरामि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोए ताव मोहंवयारं ।  
अमइजय मसणं ताव मिठत्तठणं । फुरइफुरु फलंता एंतणाणं सुपूरो । पयरु  
मजिअसंती जाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिकरि हरि तिएहु एहंवुचोराहि वाही ।  
समरुमर मारी रुद्धुव्वोवसग्गा । पलयमजिअसंती कित्तेणज्जित्तंती । निवि

डतरतमोहा नक्खरा लंखिअव ॥ १० ॥ निचिअडुअदरुदित्तजाणग्गिजालां ।  
परिमय मिव गोरं चित्तिअं जाण खवं । कण्णान्हसरेहा कंतिचोरं करिजा ।  
चरथिर मिह लद्धिं गाढसं थंजिअव ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिबुत्तासि-  
आणं । जलहिजहरिहीरं ताण्णुत्तिष्ठियाणं । जलिअ जलणजाला लिंगिआणं  
चजाणं । जणयइ लहुसंतिं संतिनाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकिणं पक्कपा-  
इकपुणं । सयलपुहवि रज्जं उड्डिअणसज्जं । तणमिच पम्पिलगं जेजिणासु-  
त्तिमगं । चरण मणुपवणा हुंतुतेमे पसणा ॥ १३ ॥ उणससिवयणाहिं । फुल्लनि-  
त्तुप्पलाहिं थण्णरन मिरीहिं मुळिगिज्जोदरीहिं । ललिअनुअलयाहिं पीण-  
सोणित्थलीहिं । सयसुर स्मणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किमिन्न  
कुठ गंठि का साइसार । खयजर वणलूआ साससोसोदराणि । नहमुह दस-  
ण्णी कुळिकणाइरोगे । महजिण जुअपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इययुरु-  
पुहतासे पक्खि ए चान्तासे । जिणवरपुगथुत्तं वठ्ठरेवा पवित्तं । पढहसुणह सि-  
ज्जाएहजाएहचित्ते कुणह सुणह विग्घं जेण धाएहसिग्घं ॥ १६ ॥ उयविजया  
जियसत्तुपुत्त सिरि अजिअ जिणेसर । तहअइरा विससेण तणय पंचमचकीसर ।  
तित्यंकरसोल समसंति जिणवत्तहसंतह । कुरुमंगल ममहरसुडुरिअ मखिलंपि  
थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिऊणपणयसुरगण । चूडामणिकिरणरंजिअंसुणिणो । चलणसु  
अलं महाअय । पणासणंसंथवंबुद्धं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनहमुह । निबुडुनासा  
विवणलावणा । कुठमहारोगानल । फुलिगनिदट्टसवंगा ॥ २ ॥ तेतुहचलणां  
राहण । सलिलंजलिसेअवद्वियत्ताया । वणदवदट्ठागिरिपायपुव पत्तापुणोलद्धिं  
॥ ३ ॥ पुवायसुअजलनिहि । उप्परुक्खोलजीसणारावे । संजंतअयविसं-  
बुल । निज्जाअयसुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवदलिअजाणवत्ता । खणेणपावंतिडडि-  
यंकूलं । पासजिणचलणसुअलं । निचंचिअजेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरपवणुअ-  
अवणदव । जालावलिमिलिअसयल पुमगहणे । रुज्जंतसुअमयवहु । जीस-  
णखजीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमसुअलं । निवावियसयलतिहुअणा-  
जोयं । जेसंजरंतिमण्णया नकुणइजलणोअयंतेसि ॥ ७ ॥ विलसंतजोगजी-  
पण । फुरिआरणनयणतरलजीहालं । उग्गनु अंगंनवंजलय । सव्वहंजीसणा-



यारं ॥ ८ ॥ मणंतिकीडसरिसं । दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा । तुहनामक्खरफुड-  
 सिध । मंतगुरुआनरालोए ॥ ९ ॥ अडवीसुजिद्धतकर । पुलिंदसइलसइजी-  
 मासु । जयविहल्लवणकायर । उल्लुरिअपहियसत्थासु ॥ १० ॥ अविच्छुत्तविहव-  
 सारा । तुहनाहपणाम मित्तवावारा । ववगयविग्वासिग्घं । पत्ताहियइत्थियंठाणं  
 ॥ ११ ॥ पज्जालिआनलनयणं । दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघाय-  
 विअलिय । गयंदकुंजत्थलाजोयं ॥ १२ ॥ पणयससंजमपत्थिव । नहमणिमा-  
 णिकपडिअपमिस्स । तुहवयण पहरणधरा । सीहंकुद्धं पि नगिणंति ॥ १३ ॥  
 ससिधवलदंतमुसलं । दीहकरूद्धालवद्धि उढाहं । महुपिंगनयणजुअलं । स-  
 सलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥ जीमं महागइंदं । अच्चासन्नंपितेनविगिणंति ।  
 जेतुल्लचलणजुअलं सुणिवइतुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मतिकखखग्गा ।  
 जिघायपविद्धजुअकवंदे । कुंतविणिज्जिन्न करिकल्लह । मुक्कसिक्कारपनरम्मि ॥  
 ॥ १६ ॥ निज्जिअदप्पुधररिउनरिंदं । निवहान्नडाजसंधवलं । पावंतिपावपस-  
 मण । पासजिणतुहप्पज्जावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदग-  
 यरणजयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसवाइं ॥ १८ ॥ एवंमहाजय  
 हरं । पासजिणिंदस्ससंथवसुआरं । जवियजणाणंदयरं । कद्धाणपरंपरनिहाणं  
 ॥ १९ ॥ रायजयजक्खरक्खस्स । कुसुमिणुस्सजणरिक्खपीडासु । संजासु-  
 दोसुपंथे उवसग्गेतहयरणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणो  
 यमाणतुंगस्स । पासोपावंपसमेउ । सयलल्लुवणच्चिअच्चलणो ॥ २१ ॥ ❀ ॥  
 इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तंजयउजएतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअंज-  
 वसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसयलकिलेसा निहयकुलेसापसत्थ  
 सुहलेसा । सिरिवध्माणतित्थस्स । मंगलंदितुतेअरिहा ॥ २ ॥ निद्वक्कम्म-  
 वीआ । बीआपरमेठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजयपसिद्धा । हणंतुत्तथाणि-  
 तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारंसयापयासंता । आयरिआत-  
 हतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगावायगाय । सिअ-  
 वायवायगावाए । पवयणपमिणीयकए । वणंतुसवस्ससंघस्स ॥ ५ ॥ निव्वा-  
 णसाहुणुज्जअ । साहुणंजणिअसवसाहज्जा । तित्थप्पज्जावगाते । हवंतुपरमे

छिणोजइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयंनाणं । निवाणफलंचचरणमविहवइ । तित्थ  
 स्सदंसाणंतं । मंगुलमवणेजसिच्चियरं ॥ ७ ॥ निव्वम्मोसुअधम्मो । समग्गजब्बंगि  
 वग्गकयसम्मो । गुणसुद्धिअस्ससंवस्स । मंगलंसम्ममिहदिसउ ॥ ८ ॥ रम्मोच  
 रिच्चधम्मो संपाविअजवसत्तसिवसम्मो । नीसेसकित्तेसहरो । हवउसयासयल  
 संवस्स ॥ ९ ॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुहमइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि  
 वध्माणपहुपयन्निअस्स । कुसलंसमग्गस्स ॥ १० ॥ जियपन्निक्खाजक्खा ।  
 गोसुहमायंगगयसुहपमुक्खा । सिरिवंजसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिर्वंदितु  
 ॥ ११ ॥ अंवापडिहयनंवा । सिद्धासिद्धाइआपवयणस्स । चक्केसरिवइरुट्ठा ।  
 संतिसुरादिसउमुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीउ दितुसंवस्समंगलंविज्जलं ।  
 अबुत्तासहिआउ । विस्सुअसुयदेवयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकय रक्खा ।  
 जक्खाचउवीससासणसुरावि । सुहजावासंतावं । तित्थस्ससयापणासंतु ॥ १४ ॥  
 जिणपवयणंमिनिरया । विरहाकुपहाउसवहासब्बे । बेयावच्चकराविअ । तित्थ  
 स्सहवंतुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुअसमग्ग । वहिअजवाण जणिअसाह  
 ज्जो । गीयरई गीयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्तज  
 लथल । वणपब्बयवासिदेवदेवीउ । जिणसासणठिआणं । पुहाणिसव्वाणिनि  
 हणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासक्खित्तपालया नवग्गहासनक्खत्ता । जोडणि  
 राहुग्गहकालपास कुलिअअपहरेहि ॥ १८ ॥ सहकालकंटएहिं । सविठिवत्थेहिं  
 कालवेलाहि । सवेसवत्थसुहं । दिसंतुसवस्ससंवस्स ॥ १९ ॥ जवणवडवाण  
 मंतर । जोडसवेमाणिआयजेदेवा । धरणंदसक्कसहिआ । दलंतुपुरिआइंति  
 त्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं । गह्वउ पुरउपणासिअतमोहं । तंतित्थस्स  
 जगवउ । नमोनमो वध्माणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणोवीरो । जस्सज्जाविसा  
 सणंजएजयइ । सिद्धिप्पहसाहणंकुपहं । नासणंसवजयमहणं ॥ २२ ॥ सिरिउस  
 असेणपमुहा । हयअय निवहा । दिसंतुतित्थस्स । सबजिणाणंगणिहारिणो ।  
 एहंवंनिअंसवं ॥ २३ ॥ सिरिवध्माणतित्थाहिवेण । तित्थंसमप्पिअंजस्स ।  
 सम्मंसुहम्मसामी । दिसउसुहं सयलसंवस्स ॥ २४ ॥ पयइएअहिआजे । जहा  
 णदिसंतुसयलसंवस्स डयरसुराविहुसम्मं । जिणगणहरकहियंकारिस्स ॥ २५ ॥

इयजोपढइतिसंजं । दुस्सज्जंतस्सनत्थिक्किंपिजए । जिणदत्ताणा एठिउ । सुनि-  
ठिअणोसुहीहोइ ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इतिगणधरदेवस्तुतिः । चतुर्थस्मरणं ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मयरहिअंगुणगणरण । सायरं सायरं पणमिऊणं । सुगुरुजण  
पारतंतं । उहिब थुणामितंचेव ॥ १ ॥ निम्महियमोहजोहा । निहयविरोहाप  
णठिसंदेहा । पणयंगिवग्गदाविअ । सुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुज  
इत्तसोहा । समत्तपरतित्थजणियसंखोहा । पन्निअग्गमोहजोहा । दंसिअसुम  
हत्थसत्थोवा ॥ ३ ॥ परिहरिअसत्थवाहा । हयदुहदाहासिवंवतरुसाहा । संपा  
विअसुहलाहा । खीरोदहिणुवअग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा ।  
सज्जोनिखज्जागहिअपवज्जा । सिवसुहसाहणसज्जा । अवगिरिगुरुचूरणेवज्जा ॥  
॥ ५ ॥ अज्जसुहम्मप्पसुहा । गुणगणनिवहासुरिंदविहियमहा । ताणातिसंजं  
नामं । नामंनपणासइजियाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअजिणदेवो । देवायरिउदुरंत  
अवहारी । सिरिनेमचंदसूरि । उज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवध्मा  
णसूरी । पयनीकयसूरिमंतमाहणो । पन्निहयकसायपसरो । सरयससंकुवसुह  
जणनं ॥ ८ ॥ सुहसीलचोरधप्परण । पच्चलोनिच्चलोजिणमयंमि । जुगपवरसुध  
सिधंतं । जाणनंपणयसुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरनंदुव्वह महिवव्वहस्स । अणहि  
व्ववाडएपयडं । सुक्काविआरिऊणं । सीहेणवदव्वलिगिगया ॥ १० ॥ दसमव्वे-  
यनिसिविप्फुरंतं । सव्वंदसूरिमयतिमिरं । सूरिणवसूरीजिणेसरेण । हयमहिअ-  
दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती । पयडिअगुत्ती पसंतसुहसुत्ती । पहयपर-  
वाइदित्ती । जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयडिअनवंगसुत्तत्थ । रयणुको-  
सोपणासिअपज्जसो । अवजीअअविअजणमण । कयसंतोसोविगयदोसो ॥ १३ ॥  
जुगपवरागमसारपरूवणा । करणबंधुरोधेणिअं । सिरिअअयदेवसूरी । सुणिप-  
वरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावय संतासो । हरिबसारंगअग्गसंदेहो । गय  
समयदप्पदलणो । आसाइअपवरकवरसो ॥ १५ ॥ जीमअवकाणणम्मिअ ।  
दंसिअगुरुवयणरणसंदेहो । नीसेससत्तगुरुत्तं । सूरिजिणवव्वहोजयइ ॥ १६ ॥  
उवरठिअसच्चरणो । चनुरणुत्तंगप्पहाणसच्चरणो । असममयरायमहणो । उट्टमु-  
होसहइजस्सकरो ॥ १७ ॥ दंसिअनिम्मलनिच्चल । दंतगणोगणिअसावजत्थ-  
अत्तं । गुरुगिरिगरुत्तसरहुव्व । सूरिजिणवव्वहोहोत्था ॥ १८ ॥ जुगपवरागमपी-

उसपाण । पीणियमणाक्याज्जवा । जेणजिणवद्धहेणं । गुरुणातंसवहावंदे ॥१९॥  
 विष्फुरिअपरपवयण । सिरोमणी बूढपुवह खमोय जोसेसाणंसेसुव । सहइ-  
 सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआणमहीणं । सुगुरूणंपारतंतमुवहइ जयइ-  
 जिणदत्तसूरी । सिरिनिलत्तणयमुणितिलत्त ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीगुरुपास्तंत्र्यं पंचमस्मरणं ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिग्घमवहरत्तविग्घं । जिणवीराणाणु गामिसंघस्स । सिरिपास जि-  
 णोत्थंजण । पुरठित्तंनिठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयमसुहम्मपमुहा । गणवइ णोविहि-  
 अजवसत्तमुहा । सिरिवद्धमाणजिणतित्थ । सुत्थयंतंकुणंतुसया ॥ २ ॥ सक्काइ  
 णोसुराजे । जिणवेयावच्चकारिणोसंति । अवहरिअविग्घसंवा । हवंतु तेसंघसंति-  
 करा ॥ ३ ॥ सिरिथंजणयठियपाससामि । पयपत्तमपणयपाणीणं । निदलिअ-  
 पुरिअविंदो । धरणिंदोहरत्तपुरिआइ ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्खजक्खा । पडिहय  
 पन्निक्खपक्खलक्खाते । कयसगुणसंघरक्खा । हवंतुसंपत्तिसिवसुक्खा ॥ ५ ॥  
 अप्पडिचक्कापमुहा । जिणसासण देवयानजिणपणिआ । सिद्धाइआ समेया ।  
 हवंतुसंघस्सविग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएससच्चत्तरपुरात्तं । वद्धमाण जिणजत्तो ।  
 सिरिबंजसंतिजक्खो । रक्खत्तसंघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तिगिह गुत्तसंताण । देस  
 देवाहिदेवयातानं । निवइपुरपहियाणं । जवाणकुणंतुसुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के  
 सरिचक्करा । विहिपहरित्तुगिहकंधराधणिअं । सिवसरणलग्गसंघस्स । सब  
 हाहरत्तविग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवडवद्धमाणो । जिणेसरोसंगत्तंसुसंघेण । जिण  
 चंदोत्तयदेवो । रक्खत्तजिण वद्धहपहुमं ॥ १० ॥ सोजयत्तवद्धमाणो । जिणेसरो  
 णेसस्वहयतिमिरो । जिणचंदान्नयदेवा । प हुणो जिणवद्धहाजेय ॥ ११ ॥ गुरु  
 जिणवद्धहाए जयदेवपहुत्तदायगेवंदे । जिणचंदजिणेसरवद्धमाण । तित्थस्स  
 बुद्धिकाए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणंसम्मं । मत्तंतिकुणंतिजेयकारंति । मणसावयसा  
 वत्तसा । जयंतु साहम्मिआतेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्तगुणेनाणाइणो । सयाजेध-  
 रंतिधारंति । दंसिअसियवायपए । नमामिसाहम्मिआतेवि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति  
 षष्ठं स्मरणं ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ उवसग्गहरंपासं । पासवंदामिकम्मवणमुक्कं ।  
 विसहरविसनिणासं । मंगलकत्ताणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ जवेजवेपास-  
 जिणचंद ॥ २ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्थ जिनस्तवनं ॥ इति सप्तस्मरणानि ॥ ❀ ॥

धर । १९ । विजय । २० । मल्लि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ ।  
चद्रंकर । २४ ॥ ❀ ॥ एते त्रैवितीर्थकराजिनाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शान्ताः शान्तिकराः भवन्तु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयदुर्नि-  
हकान्तोरेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं । ॥ ॐ श्रीनाम्नि । १ । जितशत्रु-  
। २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ठ । ७ । मह-  
सेननरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य । १२ ।  
कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । ज्ञानु । १५ । विश्वसेन । १६ । शूर । १७ ।  
सुदर्शन । १८ । कुंज । १९ । सुमित्र । २० । विजय । २१ । समुद्रविजय  
। २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ ॥ ❀ ॥ वर्त्तमान चतुर्विंशतिजि-  
नजनकाः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ विजया । २ । सेना । ३ । सिद्धार्थी  
। ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ । लक्ष्मणा । ८ ।  
रामा । ९ । नन्दा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ । स्यामा । १३ । सुयशा  
। १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रजावती  
। १९ । पद्मा । २० । वप्रा । २१ । शिवा । २२ । वामा । २३ । त्रिशला । २४ ।  
॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥ ❀ ॥ ॐ श्री गो मुख । १ । महायक्ष । २ ।  
त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुंबरु । ५ । कुसुम । ६ । मातंग । ७ । विजय  
। ८ । अजित । ९ । ब्रह्मा । १० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । षण्मुख  
। १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ । गंधर्व । १७ । यक्षराज  
। १८ । कुवेर । १९ । वरुण । २० । नृकुटि । २१ । गोमेध । २२ । पार्श्व । २३ ।  
ब्रह्मशांति । २४ ॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥ ❀ ॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ ।  
अजितबला । २ । दुरितारी । ३ । काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा  
। ६ । शांता । ७ । नृगुटी । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी  
। ११ । चंदा । १२ । विदिता । १३ । अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ ।  
निर्वाणी । १६ । बला । १७ । धारणी । १८ । धरणाप्रिया । १९ । नरदत्ता  
। २० । गांधारी । २१ । अंबिका । २२ । पद्मावती । २३ । सिद्धायिका । २४ ।  
॥ ❀ ॥ वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थकरशाशनदेव्यः ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीधृति  
कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृहीतना-

मानो जयति ते जिनेन्द्राः ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञप्ती । २ । वज्रशृङ्खला । ३ ।  
 वज्राकुशा । ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली । ७ । महाकाली । ८ ।  
 गौरी । ९ । गांधारी । १० । सर्वस्त्रमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ । वैरोद्या  
 । १३ । अच्युता । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ । एताः पुरुषावि-  
 द्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमण-  
 संघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्रंद्र सूर्या गारक  
 बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण  
 कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादय स्ते  
 सर्वे प्रीयतां २ अह्नीणकोस कोष्ठागारा नरपतयश्च ज्वंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र  
 भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजनसंबन्धिवंधुवर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणो  
 ज्वंतु । अस्मिश्च जूमंरुजे आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्रावि-  
 काणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टि  
 पुष्टि रुद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः ज्वंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि  
 शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा ज्वंतु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः ।  
 शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश । सुकुटुम्भार्चितां ह्ये ॥ १ ॥ शान्तिः  
 शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिः दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदातेषां । येषां  
 शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट ग्रहगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि संपा-  
 दितहितसंपत् नामग्रहणं जयतु शान्तिः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराज  
 संनिवेशानां । गोष्ठीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेद्वांति ॥ ४ ॥ श्री श्रमणसंघस्य  
 शान्तिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु । श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु ।  
 श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शान्तिर्भवतु । श्रीगो-  
 ष्ठीकानां शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ क्षी श्री पार्थनाथाय स्वाहा । एषा  
 शान्तिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु । शान्तिकर्तृशं गृहीत्वा । कुंकुम चंदन  
 कर्पूरा गुरुधूप वास कुसुमांजलिसमेतः । स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचि  
 वस्त्र श्रद्धा चरणालंकृतः । पुष्पमाला कंठेकृत्वा । शान्तिमुदवोषयित्वा शान्ति-  
 पानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यंतिनृत्यं मणिपुष्पवर्षं । सृजंति गायंति च  
 मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् । कल्याणप्ताजोहि जिनाजिपैके

॥ १ ॥ अहंतित्थयरमाया शिवादेवी । तुह्य नयरनिवासिनी अह्य शिवं तुह्य  
शिवं । असुहोवसमं शिवं नवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परहित-  
निरताभवंतु नूतगणाः । दोषाः प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥  
उपसर्गाः ह्यं यांति । विद्यंते विघ्नवद्वयः । मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने  
जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीवृहत्पांतिः समाप्ता ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ दृजकी स्तुति ॥

॥ ❀ ॥ महीमंरुणं पुत्र सोवन्न देहं । जणाणंदणं केवल न्नाण मेहं । महा  
नंद लब्धी बहु बुद्धिरायं । सुसेवामि सीमंधरं तित्थिरायं ॥ १ ॥ पुरा तारणा जेह  
जीवाण जाया । भवस्संति ते सब भवाणताया । तहा संपयं जेजिणा वट्टमाणा  
सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ डुरुत्तार संसार कुबारपोयं । कल्लंका-  
वली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंडियत्थे सुमंदार कप्पं । जिणंदगमं वंदिमो  
सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदगणं भोजलीणा । कला रूव लावण सोहग्ग  
पीणा । वहंतस्स चित्तंमि णिच्चंमि जाणं । सिरी नारही देहिमे सुव्वनाणं  
॥ ४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी स्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ पंचमी स्तुती ॥

॥ ❀ ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान ह्यमं । पंचानुत्तर सीम  
दिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपमं । येन प्रोज्ज्वल पंचमी वस्तपो व्याहारि तत्का  
रिणां । श्रीपंचानन लांछनः सतनुतां श्री वर्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ ये पंचाश्रव  
रोदसाधनपराः पंचप्रमादी हराः । पंचाणुव्रत पंचसुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः  
कृत्वा पंचरूपीक निर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तेमी संतु सुपंचमी व्रतचृतां  
तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं । पंच ज्ञान  
विचारसार कलितं पंचेषु पंचत्वदं । दीपाजंगुर पंचमार तिमिरे ष्वेकाः दशी  
रोहिणी । पंचम्यादि फल प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैना गमं ॥ ३ ॥ पंचानां  
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरु श्रियां । भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंच-  
दिव्यं व्यधात् । प्रह्वे पंचजने मनोमृत कृतौ स्वारत्नपंचालिका । पंचम्यादि  
तपोवतां भवतु सा सिद्ध्यिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्री ज्ञान पंचमीस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ वीरं । देवं । नित्यं वंदे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् पांतु

॥२॥ जेनं । वाक्यं । ज्ञया । हृत्यै ॥३॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं ॥ ४॥  
॥ ❀ ॥ इति लघ्वीस्त्रीमंडसि श्रीवीर स्तुतिः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ अष्टमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ चञ्जीसे जिनवर प्रणमुंहुं नितमेव । आठम दिनकरिये चंद्राप्र-  
चुनी सेव । मूरति मनमोहे जाणें पूनिमचंद । दीठां दुख जायें पामेपरमानंद  
॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजे प्रचुजीना पाय । इंद्राणी अपठराकरजोनी गुण-  
गाय । नंदीश्वर द्वापें मिल सुखरनी कोड । अछाही महोठवकरतां होना होन  
॥ २ ॥ सेहुंजा सिखें जाणी लाज अपार । चौमामे रहिया गणधर मुनि परि-  
वार । जवियणनें तारे देड धरम उपदेश । दूध साकरयी पिण वाणी अधिक  
विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करियें व्रतपचखाण । आठम तप करतां  
आठकरमनी हाण । आठमंगल थायें दिन २ कोडि कल्याण । जिन सुखसूरि  
कहे डम जीवत जनम प्रमाण ॥ ❀ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥

## ॥ सर्वदिन स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । मिथारथ नंदन त्रिसला  
देवि सुमाय । मृगनायक लंछन सातहाथ तनु मान । दिन दिन सुख दायक  
स्वामी श्रीवधमान ॥ १ ॥ सुर नखर किन्नर वंदित पद अरिविंद । कामित  
जर पुरण आजिनव सुरतरुंद । जवियणनें तारे प्रवहण समनिसि दीस ।  
चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीम ॥ २ ॥ अरथें करि आगम जाण्या श्रीज-  
गवंत । गणधर तेगुंथ्या गुणनिधि ग्यान अनन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहि-  
नसके एकन्त । समरुं सुखदायक मनसुध सूत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिचायिका  
देवी वारे विघनविशेष । सह्र संकट चूरे पूरे आम असेष । अहनिमि करजोडी  
मेवे सुर नर इंद्र । जंपई गुणगण डम श्रीजिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ दशमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ अश्वसेन नरेश्वर वामा देवी नंद । नवकर तनु निरुपम नील  
वरण सुखकंद । अहिलंतण सेवित पठमावड धराणंद । प्रहज्जती प्रणमुं नि-



तप्रति पासजिणिंद ॥ १ ॥ कुलगिरि वेयद्वइ कणयाचल अन्निराम । मानु-  
षोत्तर नंदी रुचिक कुंमल सुखगाम । प्रवणेशर व्यंतर जोइस वेमाणीय  
धाम । बरतै जेजिनवर पूरो मुज मनकाम ॥ २ ॥ जिहां अंगइग्यारै बारै-  
पांग बहेद । दसपइन्ना दाख्या मूलसूत्र चउन्नेद । जिन आगम षट्द्रव्य  
सत्तपदारथ जुत्त । सांजलि सरदहतां तूटै करम तुरत्त ॥ ३ ॥ पउमावइदेवी  
पार्श्वयह परतह । सहु संवना संकट दूरकरेवा दह । तेसमरो जिनप्रति स्तूरि  
कहै इकचित्त । सुख सुजस समांपो पुत्र कलत्र बहुवित्त ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ अथ एकादशी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ अस्य प्रब्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं । तथा मत्ते जन्म व्रत  
मपमलं केवलमलं । बलहै कादश्यां सहसिलस पुदाम महासि ॥ क्षितौ  
कल्याणानां कृपतु विपदः पंचक मदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्र श्रेण्या गमन गमनै  
र्भूमिवलयं । सदा स्वर्गत्यैवा हमहमकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापुहण  
मति सुखं नारकसदः ॥ ( क्षितौ ० ) ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजग  
दुरात्मीय समये । फलं यत्कर्तृणा मितिच विदितं सुद्धसमये । अनिष्टा रिष्टानां  
क्षिति स्तुत्रवेयु बहुमुदः ॥ ( क्षितौ ० ) ॥ ३ ॥ सुरास्सेद्रा स्सर्वे सकल  
जिन चंद्र प्रमुदिताः तथाच ज्योतिष्का खिल प्रवननाथा समुदिताः ।  
तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः ( क्षितौ ० ) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति मोनै कादशीस्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ अथ चतुर्दशी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ द्रेंद्रेंकि धपमप धुधुमि धोंधों धसकि धर धप धोरवं । दोंदोंकि  
दोंदों दाग्निदि दाग्निदिकि द्रमकि द्रण रण द्रेणवं । ऊज्जिद्रेंकि ड्रें ड्रें ड्र एण  
रण रण निजकि निज जन रंजनं । सुरशेल सिखरे प्रवति सुखदं पार्श्वजिन-  
पति मज्जनं ॥ १ ॥ कट रेंगिनि थोंगिनि किटति गिगडदां धुधुकि धुट नट  
याटवं । गुण गुणण गुण गण रणकिणेंणें गुणण गुण गण गौरवं । ऊ ड्रि  
ड्रेंकि ड्रेंड्रें ड्रणण रण रण निजकि निज जन सज्जना । कलयंति कमला

कलित कलमाल मुकलमीस महेजिनाः ॥ २॥ ठकि ठेंकि ठें ठें ठक्ति ठक्ति  
ठक्तिपट्टा ताड्यते । तललोंकि लों लों त्रेंषि त्रेंषिनि मँषि मँषिनि वाद्यते ।  
ॐ ॐकि ॐ ॐ थुंगि थुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलखे । जिन मत मनंतं महिम  
तनुता नमति सुर नर मुन्नेवे ॥ ३ ॥ पुढांकि पुढां पुषुडदि पुढां पुषुडदि दोंदों  
अंवेरे । चाचपट चचपट रणकि ऐंऐं रणण मँमँ मँवेरे । तिहां सरग मपघुनि  
निधप मगरस सस समस सुर सेवता । जिन नाद्वरंगे कुशलमुनिसं दिसठ  
शासन देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिन कुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन स्तुति ॥ १४ ॥

## ॥ अथ चैत्रीपूनम स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ सेवुंज गिरि नमियै रूपज देव पुंमरीक । शुजतपनी महिमा सुणि  
गुरु मुख निरजीक । शुधमन उपवासै विधिसुं चेत्यवंदनीक । करियै जिन  
आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक  
दश बीस । अद्वत गिण तीसे चढता तिम चालीस । पंचासनी पूजा जा  
षड् इम जगदीस । तेहीज नितप्रणसुं स्वामी जिन चत्तबीस ॥ २ ॥ सुदि  
पहानी पूनम चैत्रमास शुजवार । विधिसेती लहीयै आगमसाख विचार । उम  
सोलवरस लग धरियै न्यान उदार । करतां नरनारी पामे जवनोपार ॥ ३ ॥  
सोवन तनचरणे नयणे तिम अरिर्विंद । चक्केमरी देविय सेविय नर सुर वृंद ।  
कामितसुखदायक पूरयमन आणंद । जपै गणनायक श्रीजिनलाज सूरिंद  
॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्री पूनमस्तुतिः ॥ १५ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ नवपदस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ निरूपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी ।  
करुणासागर निजगुण आगर सुज समता रस धामी जी । श्री सिद्ध चक्र  
क्षिरोमणि जिनवर ध्यावै जे मन रंगै जी । ते मानव श्रीपाल तणी परि पामे  
सुख सुर संगे जी । ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु महा गुणवंता  
जी । दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जय वंता जी । एहनो ध्यां-  
नधरंता लहीये अविचल पद अविनासी जी । तेमगला जिननायक नमीयै  
जिनए नीति प्रकामी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिमवालि चैत्रकमास  
जगीसै जी । उजवाली सातमथी करिये नव आंविल नव दिवसे जी । तेर-

सहस्र बलि गुणिये गुण्यो नवपदकेरो सारो जी । इण परि निरमल तप  
आदारिये आगम साख उदारो जी ॥३॥ विमल कमलदल लोयण सुंदर श्री  
चक्केसरि देवी जी । नवपद सेवक नविजन कैरा विघनहरो सुरसेवीजी ।  
श्रीखरतरगढ नायक सदगुरु श्रीजिनभक्ति सुणिंदाजी । तासु पसायें इणपरि  
पन्नणें श्रीजिनलाज सुनिंदा जी ॥४॥ ❀ ॥ इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥ १६ ॥

### ॥ अथ पर्युषणस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ बलि बलिहुं ध्यावुं गार्जुं जिणवरवीर । जिण परब पजूसण  
दाख्या धरमनी सोर । आसाढ चौमासे हुंती दिनपंचास । पढीकमणो  
संवहरी करियै त्रिणउपवास ॥ १ ॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।  
करियै जलजावें नरिये पुण्यभंगार । बलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लाज अनंत ।  
इम परब पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचना  
यें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परजावना  
धूप अगर नक्खेवो । इम नवियण प्राणी परब पजूसण सेवो ॥ ३ ॥ बलि  
साहमी बहल करियै वारंवार । केइ जावना जावे केइ तपसी सीलधार ।  
अरुदीह पजूसण इम सेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहै जिनलाज-  
सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपर्युषणापर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥ १७ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पनरैतिथोंका स्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगुण सनेही साजण श्री सीमंधरस्वामि । अरज सुणो इक जग  
गुरु मुऊ आसा विसराम । पूरबविदेहें विजयजली पुष्कलावई नाम । जिहां  
विचरै जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोक सुणै जे जोजनगा  
मनी वाणि । धनते महीयल चरणधरै जिहां जिनवर जाण । धनते नविजन  
जे रहै प्रनुताहरे परसंग । वदनकमल निरखी नितमाणै उहवअंग ॥ २ ॥ सुगुरु  
मुखै प्रनु सुजस तुह्यीणो सांजलकान । मिलवानें उलसै मनमाहरो धरुं इक  
ध्यान । जगति जुगति करवानी नै मुजसगली जोरु । पिण प्रनु लग पुहची  
जे तेहनही पगदोरु ॥ ३ ॥ आमा डुंगर अतिघणा विचवहै नदियांपूरि  
किम मुजथी अवरायै प्रनुजी एतलीदूर । आंखडली उलजों करै जोयवा  
सुख जिनराज । पांखडली पाई नही ते विन किमसरै काज ॥ ४ ॥ वाट

डली बहनो कोई न मिले सँगसाथ । कागलियो लिख आपुंहुं जिम  
तेहने हाथ । जाणूं ससिहर साथे कहूं संदेशाजेह । पिण अलगो थई ऊपरि  
वानै निकलै तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रनुजी तुमथी एथ अवाय । तो इण  
अस्तनावासी अविजन पावन थाय । साहिबनीतो सुनिजर सगलै सरिषी  
होय । पिणपोतानी प्रापति सारू फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोटुं पिणमाहरे  
तुमसुं साचीप्रीति । गुण गुणवंतना आवे हीयने खिण २ चीत । हुंहुं सेवक  
हुंहे माहरो आतमराम । नहिंय विसारूं जीहुं जांलगि ताहरो नाम ॥ ७ ॥  
साचै दिलथी मुऊसुं धरज्यो धरमस्नेह । करुणाकर प्रनु कर जो मोपरि महिर  
अबेह । दूसमकाल तणो दुखटालो दीनदयाल । पालो विरुद संजालो  
निज सेवकसुं कृपाल ॥ ८ ॥ आसविलूधा अलग थकी पिण कै अरदास ।  
पिण मोटानी महिरबतां नविथाय निरास । केईवसै प्रनु पासे केई वसेबे  
दूर । राजमहिरनी रीते सकलनें जाणें हजूर ॥ ९ ॥ शिवसुख दायक नायक  
लायक स्वामिसुरंग । ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आत्मउमंग । सहिजे एक  
पलक जोथायै प्रनु तुजसंग । लाजउदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अजंग १०॥  
॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ श्रीसंखेश्वरपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै । जवना संचित पाप परा सब  
मेटियै । मनधर जाव अनंत चरणयुग सेवता । अणहुंते इककोमि चतुरविध  
देवता ॥ १ ॥ ध्यानधरूं प्रनुदूरथकी हुं ताहरो । जल जिमलीनो मीन  
सदा मनमाहरो । जव २ तुमहीजदेव चरणहुं सिरधरूं । जवसायरथी तार  
अरज आहीजकरूं ॥ २ ॥ जूख त्रिपा तप सीत आतम एनविसहै । तप जप  
संयम आरतणो नविनिरवहै । पिण जिणवरना नामतणी आसतवणी । एहिज  
ते आधार जगतगुरु अह्वजणी ॥ ३ ॥ तुम दरसण विनसामि जवो दधि हुं  
फिरयो । सहिया दुख अनेक न कारज कोसरथो । मिलिया हिव प्रनु मुज्ज  
सदासुख दीजीयै । चउगइ संकट चूर जगतजस लीजीये ॥ ४ ॥ यादवपति  
श्रीकृष्ण तणी आरति हरी । सेनाकीध सचेत जरा दूरेकरी । परचा पूरण पास

रयण जिमदीपतो । जयवंतो जिणचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ द्वितियादिन सीमंधरस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ सकल संसार अवतार ए हुं गिणुं । सामि सीमंधरा तुह जगतै  
जणुं । जेठवा पायकमल जाव हीयमै घणो । करीय सुपमाय जे वीनहुं ते  
सुणो ॥ १ ॥ तुहसुं कूड अरिहंतसुं राखियै । जिसो अठै तिसो कर जोनि करि  
जाषियै । अति सबल मुज हियै मोह माया घणी । एक मन जगति किमकरुं  
त्रिनुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवी परिगडै । रीसचटको चढे  
लोचन वयरी नडै । नयण रस वयण रस काम रस रसीयो । तेम अरिहंत तूं  
हियडै नवि वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनैं राति हियडै अनेरो धरुं । मूढमन रीजवा  
वलिय माया करुं । तूंहीज अरिहंत जाणैं जिसो आचरुं । तेम कर जेम  
संसार सागर तरुं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुखनैं दुख जेहुंसहुं । मनतणी वात  
अरिहंत किणनैं कहुं । करि दया करि मया देव करुणापरा । दुख हरि सुख  
करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं । धर्म  
नकराय प्रनुपाप पोते घणुं । एक अरिहंततूं देव बीजो नही । एह आधार जग  
जाणज्यो अह सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू । हस्यो  
बोल्ह्यो रम्यो रंगरातो बहू । जय जयो जगतगुरु जीव जीवन धरा । तुह सम-  
वरु नही अवर वाल्हे सरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वांणि जाणुं सदा सांजलुं ।  
वार वर परषदा मांहि आवी मिलुं । चित्तजाणुं सदा सामि पायनजगुं । किम  
करुं ठाम पुंनर गिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ जोलडा जगतितूं चित्तहारै किस्यै । पुण्य-  
संयोग प्रनु दृष्टिगोचर हुस्यै । जेहनें नांम मन वयण तन उल्लस्यै । दूरथी  
दूकना जेम हियडै वसै ॥ ९ ॥ जल जलो एणि संसार सहू ए अठै । सामि  
सीमंधरा ते सहू तुम पठै । ध्यान करतां सुपन मांहि आवीमिलै । देखियै  
नयण तो चित्त आरति टलै ॥ १० ॥ सामि सोहा मणा नाम मन गह गहै ।  
तेहसुं नेह जे वात तुहची कहै । तुह पाय जेठवा अति घणुं टलवलुं ।  
पंख जो होयतो सहिय आवीमिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिर लेखणी आज्ञकागल करुं ।  
खीर सागर तणा दूध खडिया जरुं । तुह मिलवा तणा सामि संदेसना । इंद्र

पिण लिखिय नसके अठै एवमा ॥ १२ ॥ आपणें रंग जरि वात सुण जेतली ।  
ऊपजै सामि न कहाय मुख जेतली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा । लान्ने  
कोरि प्रनुपूरि सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व जवि मोह वसि नेह हुवै जेहने ।  
समरिये एणि संसार नित तेहने । मेहने मोर जिम कमल जमरोरमें । तेम  
अरिहंततूं चित्त मोरै गमें ॥ १४ ॥ खरो अरिहंतनो ध्यान हियमें वस्युं । वापनो  
पापहिव रहिय करस्यै किंसुं । ठामि जिम गुरुडवर पंख आवे वही । ततखिण  
सर्पनी जाति नसकै रही ॥ १५ ॥ पापमें कज्ज सावज्ज सहु परिहरी । सामि  
सीमंधरा तुह्य पाय अणु सरी । सुख चारित्र कहियै प्रचू पालसुं । दुक्ख जंमार  
संसार जय टालसुं ॥ १६ ॥ तुह्य हुंदास हुं तुह्य सेवकसही । एहमें वात अरि-  
हंत आगलिकही । एवडी माहरी जगति जाणी करी । आप ज्यो वापजी सार  
केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ उम रुद्धि वृद्धि समृद्धि कारण दुरित वारण  
सहुकरो । उवज्जाय वर श्री जक्तिलाजै थुण्यो श्रीसीमंधरो । जयजयो जगत  
गुरु जीव जीवन करो सामि मया वणी । करजोडि बलि बलि वीनहुं प्रनु  
पूरि आस्या मनतणी ॥ १८ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री सीमंधरजीरी वीनती संपूर्ण ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ पंचमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय । निरमल न्यानउपाय । पांचमि तप जणुं ए ।  
जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चतुर्वीसमो जिनचंद । केवल न्यान दिणंद ।  
त्रिगने गहगह्यो ए । जवियणनें कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वरुो संसार । न्यान  
सुगति दातार । न्यान दीवो कह्यो ए । साचो सरदह्यो ए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन  
सुविलास । लोकालोक प्रकास । न्यान विना पसु ए । नर जाणें किंसुं ए ॥ ४ ॥  
अधिक आराधक जाण । जगवती सूत्रप्रमाण । न्यानी सर्वतु ए । किरिया देश-  
तु ए ॥ ५ ॥ न्यानी सासोसास । करम करै जेनास । नारकिने सही ए । कोड  
वरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार । वोल्या सूत्र मजार । किरिया नै  
सही ए । पिण पात्रे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान । हुवेनो अति  
परधान । सोनेनें सुरो ए । संख दूधे जरयो ए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मजार ।  
पांचमि अहूर सार । जगवंत जापीयो ए । गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥ ( टाल १

पहिली काल हरानी ) ॥ ❀ ॥ पांचमि तप विधि सांजलो । जिम पामो जव  
 पारोरे । श्रीअरिहंत इम उपदिसै । जवियणनें हित कारोरे ॥ पां० ॥ १० ॥  
 मिगसर माह फागुण जला । जेठ आसाढ वैसाखोरे । इण षट्मासै लीजियै ।  
 शुभदिन सद्गुरु साखोरे ॥ पां० ॥ ११ ॥ देव जुहारी देहरे । गीता रथ गुरु  
 बंदीरे । पोथी पूजो न्याननी । सगति हुवै तो नंदीरे ॥ पां० ॥ १२ ॥ बेकर  
 जोनी जावसुं । गुरु मुख करो उपवासोरे । पांचमि पडिकमणो करै । पढो पंडित  
 गुरु पासोरे ॥ पां० ॥ १३ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो । तिण दिन  
 आरंज टालोरे । पांचमि तवन थुई कहो । ब्रह्म चारिज पिण पालोरे ॥  
 ॥ पां० ॥ १४ ॥ पांचमास लघुपंचमी । जाव जीव उत्कृष्टीरे । पांच  
 वरस पांच मासनी । पांचमि करो शुभ दृष्टीरे ॥ पां० ॥ १५ ॥ ( ढाल २ उद्धा-  
 लानी ) ॥ ❀ ॥ हिव जवियणरे पांचमि नुजमणो सुणो । घर सारूरे वारू  
 धन खरचो घणो । ए अवसररे आवंतां वलि दोहिलो । पुण्य जोगैरे धनपा-  
 मंता सोहिलो । ( उद्धालो ) सोहिलो वलीय धन पामतां पिण धर्म काज  
 किहां वली । पंचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयै कावसग रली । त्रिण न्यान  
 दरसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजीयै । थापना पहिली पूजकेसर सुगुरु सेवा  
 कीजीयै ॥ १६ ॥ सिद्धांतनीरे पांच परत वीटांगणा । पांच पूठारे मुख मल  
 सूत्र प्रमुख तणा । पांच मोरारे लेखण पांच मजी सणा । वासकुंपारे कांबी  
 वारू वरतणा । ( उद्धालो ) वरतणा वारू वलिय कमली पांच जिल मिल  
 अति जली । थापना चारिज पांच ठवणी मुहपती पर पाटली । पट सूत्र पाटी  
 पंचकोथल पंच नव कर वालियां । इण परै श्रावक करै पांचमि नुजमणो  
 नुजवालियां ॥ १७ ॥ वलि देहरैरे स्नात्र महोद्धव कीजियै । घर सारूरे दान-  
 वली तिहां दीजियै । प्रतिमानेरे आगलि ढोवणो ढोइयै । पूजानारे जे जे  
 उपगरण जोइयै । ( उद्धालो ) जोइयै उप गरण देव पूजा काज कलशचंगार  
 ए । आरती मङ्गल थालदीवो धूपधाणो सारए । घनसार केसर अगर सूकर  
 अंगुलुहणो दीसए । पंचपंच सगली वस्तु ढोवो सगतिसुं पचवीस ए ॥ १८ ॥  
 पांचमीतारे साहमी सर्व जीमामियै । रात्री जोगेरे गीत रसाल गवाडियै । इण  
 करणीरे करता न्यान आराधियै । न्यान दरसणरे उत्तम मारग साधियै ।

( नल्लाजो ) साधियें मारग एह करणी न्यान लहीये निरमजो । सुर लोकनैं नरलोक माहें न्यान वंतते आगलो । अनुक्रमें केवल न्यान पामी सासता सुख जेलहै । जे करै पांचमी तप अखंमि वीर जिणवर इम कहै ॥ १९ ॥ कलश ॥ इम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्धमान जिणोसरो । मैथुण्यो श्रीअरिहंत जगवंत अतुल बल अलवेसरो । जयवंत श्रीजिनचंद सूरिज सकल चंद नमुंसीयो । वाचना चारिज समय सुंदर जगति जाव प्रसंसीयो ॥ २० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ २० ॥ इति श्रीपंचमी बृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ अथ पंचमी लघुस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ पांचमि तप तुमे करोरे प्राणी । निरमल पामो न्यानरे । पहिली न्याननैं पने किरिया । नही कोई न्यान समानरे ॥ पां० ॥ १ ॥ नंदी सूत्रमें न्यान बखाण्यो । न्यानना पंच प्रकारे । मति श्रुत अवधि अनें मनपर्यव । केवल न्यान श्रीकारे ॥ पां० ॥ २ ॥ मति अछावीस श्रुति चवदैवीस । अवधि ठ असंख प्रकारे । दोय जेद मन पर्यव दाख्यो । केवल एक प्रकारे ॥ पां० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेस्युं तेज आकासरे । केवल न्यान समो नही कोई । लोका लोक प्रकासरे ॥ पां० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीनैं । महारीपूरो उमेदरे । समय सुंदर कहै हुंणिण पामुं । न्याननो पंचमों जेदरे ॥ पां० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ अथ अष्टमी लघुस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजे । गाजै गोमी पास । सेवा सारै जेहनी । सुर नर मन धरिय उलास ॥ १ ॥ सोजागी साहिब मेरावे । अरिहां सुग्यानी पास जिणंदावे । (आंकणी) सुंदर सूरति भूरति सोहै । मोमन अधिक सुहाय । पलक २ में पेखतां । मानुं नव नवी उबीय देखाय ॥ २ ॥ सोजागी० अ० ॥ अवधुख जंजण जनम निरंजन । खंजन नयन सुरंग । श्रवण सुणी गुण ताहरा । माहरा विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहनैं । दे बहलो दीदार । प्रारथियां पहिडेनही । साहिबा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सोजागी० अ० ॥ प्रनु सुख चंद विलोकि हरखित । नाचत नयन चकोर । कमल हसै रवि दे



न कल्याण । जनम दिहानें केवल न्यान । अरि दीक्षा लीधी खूबनी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिनें ऊपनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति पर धान । ए तिथिनी महिमा ए वनी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच ऋत ऐरवत इम हीज । पांच कल्याणक हुवै तिम हीज । पंचासनी संक्षा परगनी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसै कल्याणक थायै तेम । कुण तिथठै एतिथ जे वनी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी इण परि गिणो । लाज अनंत उपवासां तणो । ए तिथि सहु तिथि सिर राखनी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोन पणें रह्या श्री मखिनाथ । एक दिवस संयम ब्रत सा थ । मोनतणी परि ब्रत इम पनी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीयै । चौविहार विधसुं कीजीयै । पिण परमादन कीजै घनी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोहू त णी पावनी ॥ मि० ॥ ९ ॥ ऊजमणो कीजै श्रीकार न्यानना उपगण इ ग्यार २ ॥ करो कानसगग गुरुपाये पनी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरै स्नात्र करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । मुगति पुरी कीजै हूकनी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्यां सुखलहीयै सर्व । ब्रत पञ्चक्खा ण करो आखनी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन सहू मन गमै । समय सुंदर कहे करो द्याहनी ॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री एकादसी वृद्ध स्तवनं संपूर्ण ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमेरे मनमें प्रनु तुंमेरे दिलमें । ध्यान धरुं पल २ में । पास जिणेंसर अन्तर जामी । सेवकरुं ढिन २ में ॥ ( तुं० १ ) ॥ काहू को मन तरुणीसुं राच्यो । काहू को चित्त धनमें । मेरो मन प्रनु तुमहीसुं रा च्यो । ज्युं चातक चित्तधनमें । ( तुं० २ ) ॥ जोगीसर तेरी गति जाणें । अलख निरंजण ढिनमें । कनक कीरति सुख सागर तुमही । साहिब तीन जवनमें ॥ ( तुं ३ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सास्वता असास्वता जिन बिंब नमस्कार स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ ( देशी सूरती ) प्रहङ्गणी प्रनु ध्यांनधरुं नसुं सिद्ध अनन्त । त्रिनुवन मांहै नमणकरुं जेबिबरहंत । नुवन पति व्यन्तर योतषि बैमानिक मांह । अ-

द्रुत सास्वता विवनमुं मनधरि उवाह ॥१॥ पंचमेरु वेताढ्य हिमाचल निपथ  
 प्रमाण । नीलवंत चित्रसेल कुंजल गजदंत वखाण ॥ रुचक नंदीसग मानु  
 पोत्तर आदि सास्वता जाण । रिषजानन चंद्रानन वारिषेण ब्रधमाण ॥ २ ॥  
 आठकोर अरुण्यन लाख सत्ताणुं हजार ॥ चवसै उयासी चैत्य सास्वता  
 मंगलकार । सहस अठावीस नवसै पचवीस कोरु मिलाय । तेपन लख  
 चवसै अठ्यासी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य भर्ते आठकोर सत्ता  
 वन लाख । दोयसै अछाणुं त्रिजुवनमां सहुचैत्यनी साख । अछावन लख  
 पनरसै वयालीसकोर । अमृतीस सहस विवसह सतअसीकी जोर ॥ ४ ॥  
 मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुस्देस । सोरठ कठ विदेह जां  
 गल कुसावर्त कहेस । जंग सोवीर वैराट मलय सांमिल सूरसेन । वरण  
 पंचाल दशार्ण कुणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट विदर सिंधु देससह  
 केकइ अर्ध जाण । साढा पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधान । दोय  
 कोरु अछावन लाख उयासी हजार । नवसै तिहुत्तर ग्राम नगर मांहे विव  
 अपार ॥ ६ ॥ वसुसत सातअसी जंबुद्वीप सह आर्य होय । धातकी  
 खंरु सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्ध पुष्करमांहे देस गि  
 णाय । ग्राम नगर मांहे विव अनेक नमुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिद्धशेल उज्जि  
 त शिखरगिरि मोटाधाम । अष्टापद चंपा पावापुरि शिवसुख ठाम । तारंगा  
 अर्बुद राजग्रही क्षेत्र प्रमाण । अंतरीक धूलेवा राणपुरो जगजाण ॥ ८ ॥  
 द्वीप असंख्या जल थल पर्वत सिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण  
 सह विवरहाय । इम त्रिहुंलोक असास्वती सास्वती थांपना देख । वि  
 करण मुच्चै नित प्रति प्रणमुं सह गुण लेख ॥ ९ ॥ थापना जगवंते कही  
 आगम मांह प्रमाण । अंग उपांग देखी मन निश्चय राखो मुजाण । जे  
 उत्तसुत्र वचनके जापक जासी निगोद । अनंत काल जमतां कृणजर नहिं  
 पांमें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रनुनी देखी जविपांमें बोध । आद्र कु-  
 मरकी रीते देखो आगम सोध । द्रव्यजाव विधिसंयुक्त सुर नर पूजे जेय ।  
 गुण पिंनस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत लेय ॥ ११ ॥ रिषजादिक चौवीस  
 तिर्थकर नमुं मन लाय । गणधर सहु संव मंगलकारी नित प्रति थाय ।

जन्म मरण सहु दुख द्वै करो दीनदयाल । गढ खरतर गुरु लक्ष्मीप्रधां  
 न मोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति त्रिचुवन मंरुण सर्व जिन बिंव नमस्कार स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ वैराग्य सिज्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ चूलो मन जमरा कांइजमें । जमियो दिवसनें रात । माया  
 रोवांध्यो प्राणीयो । जमीयो परमल जात ॥ १ ॥ चू० ॥ कुंज काचो  
 काया कारमी । जेहना करोरे जतन्न । विणसतां वार लागै नही । निरम  
 ल राखोरे मन्न ॥ २ ॥ चू० ॥ केहना ठोरू केहना वाढरू । केहनां मा  
 यनें बाप । प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ चू० ॥ आ  
 स्यातोभूंगर जेवनी । मरवो पगलांरै हेठ । धन संची संच कांई करो ।  
 करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ चू० ॥ लख पति ठत्र पति सबगए । गएलाखोंके  
 लाख । गरज करीरे गोखे वैसता । जए जलबल राख ॥ ५ ॥ चू० ॥ जव  
 सायर जल दुख जरयो । तिरवो ठैरे जेह । विचमें बीह सबलो अठै । क  
 रमें वायनें मेह ॥ ६ ॥ चू० ॥ नलट नही मारग चालवो । जायवो पहिलै  
 रे पार । आगलि नही हटवाणीयो । संबल लेज्योरे साथ ॥ ७ ॥ चू० ॥  
 मूरख कहै धन माहरो । धन केहनो न थाय । वस्त्रविना जाय पोढवो । ल  
 ख पति लाकरु मांय ॥ ८ ॥ चू० ॥ महमंद कहै वस्तु वोरीथै । जे कुञ्जआ  
 वैरे साथ । अपणो लाज नवारीथै । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ ॥ चू० ॥ इति ॥

## ॥ अथ क्रोधनी सिज्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ कडुवारे फलठे क्रोधना । ग्यानी इम बोलै । रीसतणो रस जा-  
 णिइं । हलाहल तोलै ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोमि पूरवतणो । संजम फ  
 ल जाय । क्रोध सहित तप जे करै । ते तो लेखे न थाय ॥ २ ॥ क० ॥  
 साधु घणो तपियो हुं तो । धरतो मन बैराग । शिष्यना क्रोध थकी थयो ।  
 चंरु कोसियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आगि जुठै जे घर थकी । ते पहलुं  
 घरवालें । जलनो जोग जो नवि मिलै । तो पासेनुं पर जालें ॥ क० ॥ ४ ॥  
 क्रोध तणी गति एहवी । कहे केवल नांणी । हांणि करे जे हेतनी । जा

जवजो इमजाणी ॥ क० ॥ ५॥ उदय स्तन कहै कोथनें । काढजो गलें सा  
ही । काया करजो निरमली । उपशम रसनाही ॥ क० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥  
इति क्रोधसिञ्जाय सं० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिञ्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ जगचूफामणि चूत । उसजो वीरो तिलोय सिरि तिलत । एगो  
लोगा इच्चो । एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवत्तर सुसन्न जिणो ।  
उम्मासे वच्चमाण जिणचंदो । इइ विहारिया निरसणा । जएऊए उंव माणेणं  
॥ २ ॥ जइता तिलोय नाहो । विसहइ बहुयाइं असरिस जणस्स । इय  
जीयंत कराईं । एस खमा सब्ब साहूणं ॥ ३ ॥ न चइऊइ चाजेउ । महइ  
महा वच्चमाण जिण चंदो । उवसग्ग सहस्सेहिवि । मेरु जहा वाय गुंजा  
हि ॥ ४ ॥ जइो विणीय विणउ । पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो  
वि तमत्थं । विस्सिय हियउ सुणइ सब्बं ॥ ५ ॥ जं आण वेइ राया । पयइउ तं  
सिरेण इव्वंति । इय गुरुजण सुह जणियं । कयं जलित डेहि सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह  
सुर गणाण इंदो । गह गण तारागणाण जहचंदो । जहय पयाण नरींदो । गण  
स्सवि गुरु तहा एंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति मही पालो । न पया परि हवइ एस गुरु उव  
मा । जंवापुरउ काउं । बिहरंति सुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पन्निरुवो तेयस्सी । जुग  
प्पहाणा गमो महुर वक्को । गंजरीरो धिईमंतो । उवएस परोय आयरित्त ॥ ९ ॥  
अपरिस्सावी सोमो । संगह सीलो अज्जिग्गह मईय । अत्रिकत्थणो अ  
चवलो । पसंत हियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिण वरिदा । पत्ता  
अयरामरं पंहं दानं । आयरिएहिं पवयणं । धारिऊइ संपयं सयलं ॥ ११ ॥  
अणुगम्मए जगवई । राय सुयऊा सहस्स वंदेहिं । तहवि न कोइ माणं ।  
परियव्वइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स । अज्जिसुहा  
अऊचंदणा अऊा । नेवइ आसण गहणं । सो विणउ सब्ब अऊाणं  
॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए । अऊाए अऊ दिक्खित्त साहू ।  
अज्जिगमण वंदण नमंसणेण । विणएण सो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरस  
प्पजवो । पुरस वर देसित्त पुरस जिणो । लोएवि पट्ट पुरसो । किंपुण लोए  
त्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रणो । तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना

सहस्स महियं । आसी किरूववन्तीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी । उ  
 छट्ठंती न ताइया ताहिं । उयरठिएण इक्केण । ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥  
 महिलाणसु बहुयाणवि । मज्झान् इह समत्तं घर सारो । रायपुरिसेहिं  
 निज्झइ । जणेवि पुरसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहु जाणा  
 वणाहिं । वर मप्प सक्खियं सुकयं । इह जरह चक्कवट्ठी । प्रसन्न चंदोय  
 दिठ्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पणसु वट्टमाणस्स । किं परिय  
 त्तियवेसं । विसं नमारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो । संकइवेसेण  
 दिक्खित्तमि अहं । उम्मग्गेण पमंतं । रक्खइ राया जणवत्तय ॥ २१ ॥ अप्पा  
 जाणइ अप्पा । जहठ्ठिन् अप्पसक्खित्तं धम्मो । अप्पा करेइ तं तह ।  
 जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण  
 जेण ज्ञावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥  
 धम्मो मएण हुंतो । तोनवि सी उन्ह वाय विज्जडिन् । संवत्तर मणसीन् ।  
 बाहुबलि तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण । सत्तं  
 द बुद्धि चरिएण । कत्तो पारत्त हियं । कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥  
 थच्चो निरोवयारी । अविणीन् गव्विन् निरवणामो । साहुजणस्स गरहिन् ।  
 जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सण्णुरिसा । सणं कुमारुव्व के  
 इब्बुज्जंति । देहे खण परिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकाहियं ॥ २७ ॥ जइ  
 ता लव सत्तम सुर । विमाण वासीवि परिवमंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेमं ।  
 संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुक्खं । सुचिरेणवि जस्स पुक्ख  
 मत्ति हियए । जंच मरणावसाणे । ज्व संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ उवएस  
 सहस्से हिवि । बोहिज्जं तो न बुज्जई कोई । जह बंजदत्त राया । उदाइ निव  
 मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए । अपरिच्चत्ताइ राय लट्ठीए । जीवा  
 सकम्म कलिमल । जरिय जरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ बोत्तूणवि जीवाणं ।  
 सट्ठकरांति पावचरियाइं । जयवं जा सा सा सा । पच्चाए सो हू इणमो ते  
 ॥ ३२ ॥ पमि वज्जि ऊण दोसे । नियए सम्मंच पायवप्पियाए । तो किर  
 मिगावईए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति पोसह सिज्जाय समाप्ता उपदेश माला ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राईसंधारा पोसह सिज्झाय ॥ ❀ ॥

॥❀॥ निस्सिही २ एमो खमासमण्णं । गोयमाईणं महामुणीणं ।  
 ( नवकार ३ करेमिज्जंते ३ कहीयै ) । अणुजाणह विठिज्जा । अणुजाणह  
 परमगुरु । गुण गण रयणे हिं मंभिअ सरीरा । बहु पन्निपुत्रा पोरिसी ।  
 राई संधारए ठामि ॥ १ ॥ अणु जाणह संधारं । बाहु वहाणेण वामपासेणं ।  
 कुकुरु पाय पसारण । अंतरंतु पमज्जए जूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं ।  
 उवट्ठंतेय काय पन्निजेहा । दवाई उवज्जं । ऊसास निरुंजणा लोयं  
 जइमे हुज्ज पमानं । इमस्स देहस्सि माइरयणीए । आहार सुवहि देहं । सबं  
 तिविहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण । कलहा चक्खाण पर  
 परीवानं । अरइ रई पैसुन्नं । माया मोसंच मिद्धत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिस्सु  
 इमाइं सुक्खमग्ग । संसग्ग विग्घ जूआईं । दुग्गइ निबंधणाइं । अछारस  
 पाव छाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोवि । नाह मन्नस्स कस्सवि । एवं  
 अदीण मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगोमे सासउ अप्पा । नाणदं  
 सण संजुज्जं । सेसामे बाहिरा जावा । सब्बे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ सं  
 जोग मूला जीवेणं । पत्ता दुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं । सबं तिवि  
 हेण वोसरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो । जाव जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।  
 जिण पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं । अरि  
 हंता मंगलं । सिध्दामंगलं । साहु मंगल । केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं ।  
 चत्तारि लोयुत्तमा । अरिहंता लोयुत्तमा । सिध्दा लोयुत्तमा । साहु लो  
 युत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोयुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ।  
 अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिध्देसरणं पवज्जामि । साहु सरणं पवज्जा  
 मि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्ज ।  
 अरिहंता मज्ज देवया । अरिहंता कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं  
 ॥ १ ॥ सिध्दाय मंगलं मज्ज । सिध्दाय मज्ज देवया । सिध्दाय कित्ति  
 अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्ज । आयरिया  
 मज्जदेवया । आयरिआ कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उव  
 ज्जाया मंगलं मज्ज । उवज्जाया मज्ज देवया । उवज्जाया कित्ति

अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्ज । साहूणो मज्ज  
 देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग  
 अगणि मारुअ । इक्किं सत्त जोणि लक्खानं । वण पत्तेय अणंते । दस चउ  
 दस जोणि लक्खानं ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो । चउरो चउरोय नारय सु  
 रेसु । तिरिएसु हुंति चउरो । चउदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सब्ब  
 जीवे । सब्बे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सब्ब नूएसु । बैरं मज्जन केणवि ॥ ३ ॥  
 एवमहं आलोइअ निंदिअ । गरहिअ पुगुंठिअं सम्मं । तिविहेण पडिकंतो  
 बंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ । सब्बहजीव  
 निकाय । सिअह साख आलोयणह । मज्जह बैर नज्जाय ॥ ५ ॥ सब्बे जीवा  
 कम्मवसु । चउदह राज जमंतु । तेमइं सब्ब खमाविआ । मज्जवि तेह खमंतु  
 इति राई संथारा गाथा समाप्ता ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्त्तव्य । सामायक, पन्तिकमणा  
 अठपुहरी ( तथा ) चौ पुहरी पोसा, । देवबांदणा, पच्चक्खाण पारणा, ढ  
 म्मासी तप चिंतना, सर्वकी अनुक्रमे शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रणम्य श्रीजिनाधीशं । सदगुरुं च विशेषतः ।  
 आद्याहोरात्र कृत्यानि । लिख्यन्ते लोकनाथया ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम प्रज्ञात सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवक दोय घडी रात्र रखां पोशहशालायै । अथवा गुरुकनें ।  
 अथवा घरनें एक प्रदेशें ( आवी ) प्रथम दिवस संव्याये पन्तिकेह्या वस्त्र पहिरी ।  
 ( जो ) गुरुरो योग न हुवै ( तो ) आप प्रमार्जित थानकै । खमासमण पूर्व  
 क तीन नवकार गुणी थापनाजी थापै ( पठै ) खमासमण देई कहै । इच्छा  
 कारेण संदिस्सह जगवन् । सामायक मुहपत्ती पन्तिकेहुं ( गुरुकहै पन्ति  
 लेह ) पठै इच्छंकही । दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पन्तिकेहै । ऊजो हो  
 य खमा० कहै । इच्छा० सं० ज० । सामायक संदिस्सावूं ( गुरु कहै संदि  
 स्सावेह ) पठै इच्छंकही । वलेख० देनें कहै । इच्छाका० सं० ज० । सामायि  
 क गानं ( गुरु कहै गाएह ) पठै इच्छंकही । खमासमण देई । अर्धावन  
 तकाय ऊजो थको । तीन नवकार गुणी कहैं । इच्छकार जगवन पसानकरी

सामायिकदंरु उचरावोजी ( गुरु कहे उचरावेमो ) पढे । करेमिजंते सामाइयं ( इत्यादि ) सामायकसूत्र । गुरुवचन अनुज्ञापण करतो थको । तीनवार उचरी । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । इरियावहियं पढिकमामि ( गुरुकहे पढिकमह ) पढे इत्तं कही । इच्छामि पढिकमिजं इरियावहियाए ( इत्यादि पाठकहे ) इरियावही पढिकमी । एक लोगस्सनो काउसगगकरी । एमो अरिहंताणं कही । काउसगगपारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । खमासमण देई इच्छा० सं० ज० । बैसणो संदिस्सावूं ( गुरु कहे संदिस्सावेह ) पढे इत्तं कही । वले खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । बैसणो ठाजं ( गुरु कहे ठाएह ) पढे इत्तं कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सिज्जाय संदिस्साजं ( गुरुकहे संदिस्सावेह ) पढे इत्तं कही । वलेखमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सिज्जाय करूं ( गुरुकहे करेह ) इत्तं कही । वले खमासमण देई । ऊजो थको । आठ नवकार सिज्जाय करे । तथा शीतकाजादि हुवें ( तो ) खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । पांगरणो संदिस्सावूं ( गुरु कहे संदिस्सावेह ) पढे इत्तं कही । खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । पांगरणो पढिघालं ( गुरु कहे पढिघाएह ) पढे इत्तं कही वस्त्रग्रहण करे । तथा सामायकवंत ( अथवा ) पोसहीता श्रावकप्रतें ( कोई ) सामायकवंत ( अथवा ) पोसहीतो श्रावक वांदे ( तो ) वंदामो एहवुं कहे । जो कोई बीजो वांदे ( तो ) सिज्जायं करेह । एहवो कहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति प्रज्ञात सामायक ग्रहणविधि ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ( हिवें ) एक खमा समण देई । इच्छाका० सं० ज० । चैत्यवंदन करूं ( गुरुकहे करेह ) पढे इत्तं कही । जयनु सामी २ ( इत्यादि जय वांय राय सूधी चैत्यवंदन करे । पढे खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । कुसुमिण पुस्सुमिण राई प्रायत्तित्त विसोहणत्थं करेमि काउसगगं ( गुरु कहे करेह ) पढे इत्तंकही । कुसुमिण पुस्सुमिण राई प्रायत्तित्त विसोहणत्थं करेमि काउसगगं । अन्नत्थू ससिण्णं ( इत्यादिकही ) ( ४ ) लोगस्सनो काउसगग । चंदेसु निम्मजयरा ॥ सूधी चितवी । एमो अरिहंताणं कही । काउसगग



पारी । मुखै लोगस्स कहै ( जो ) रात्रें मोटको गुण संबंधी दूसण लागो हुवै  
( तो ) कानसगग मांहें । सागरवरगंजीरा । सूधी चितवीयै ( इतिसंप्रदायः ।

॥ ❀ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण पुस्समिण कानसगग करी । पढै  
चैत्यवंदन करवो कह्योतै । पिण परमार्थ एकहीजतै । पढै । पम्किमण वेला  
सीम सिज्जाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ हिंवै पम्किमण ठाववानो अवसर हुवां

॥ १ खमासमण देई ( श्री आचार्यजी मिश्र ) कही वांदीयै ॥ २  
खमासमण देई ( श्री नृपाध्यायजी मिश्र ) कही वांदीयै ॥ ३ खमासमण ।  
जंगम युग प्रधान वर्तमान ऋदारक श्रीपुज्यजी का नाम कही वांदीयै ॥  
४ खमासमणें । सर्व साधूजीकुं वांदीयै ॥ इम च्यार खमासमणें पडि कम  
णो ठावी । इठ्ठकार समस्त श्रावको वांदूं ( कही ) गोडा लीयै बैसी मस्तक  
नमावी । दोय हाथे । मुहपत्ती मुखें देई । सबस्सवि राइय ( इत्यादि  
कहै ) पिण इठ्ठा करेण संदिस्सह इठ्ठं ( इसोन कहै ) पढे शक्रस्तव कही ।  
ऊजो थई । करोमि जंतें सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ( इत्यादि  
कही ) इठ्ठामि ठानं कानसगगं । जोमे राइन ( इत्यादि पाठ कही )  
तस्सुत्तरी । अन्नत्थू ससिएणं कही । चारित्र शुद्धि निमित्तें ॥ १ लोगस्सनों  
कानसगग करी ( पारी ) दर्शन शुद्धि निमित्तें । लोगस्स कही । सबलो  
ए अरिहंत चेइयाणं करोमि कानसगगं । वंदण वत्तिआ ए ( इत्यादि  
कही ) १ लोगस्सनो कानसगग करी ( पारी ) ज्ञानातीचार शुद्धि निमित्तें ।  
पुक्खर वर दीवट्ठे । ( कही ) सुयस्स भगवनं करोमि कानसगगं । वंदणव  
त्तिआए ( इत्यादि कही ) कानसगग करै । कानसगग मांहें । आज्जणा  
चौपुहरी रात्रि मांहें । इत्यादि आलोयण पाठ चितवे ॥ ❀ ॥ ॥ ( अनें  
एनावैतो ) आठ नव कार चितवीयै । पढै कानसगग पारी । सिद्धाणं बुद्धाणं  
( कही ) संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैसी ( मुहपत्ती पम्किलेहै ) पढै दो वांद  
णादैं ( ते इम ) अविग्रह बाहिर ऊजो थको । आधो नमी ॥ इठ्ठामि खमा  
स । वंदि० जाव० । नि० । अणुजाणह मेमिउगगहं ( इतरो कही )  
चूमि प्रमार्जतो थको । निस्सही कही । कांइक अवग्रह मांहि पैसी । संभा  
सा प्रमार्जी । ऊकडू बैसी । नावै हाथ मुहपत्ती लेई । नावे कान थी जी

मणा कान लगे निलान पूंजी । मुहपत्ती आगे मेल्ली । तेहने मध्यजगै  
 गुरुवरण कल्पना करी । अहो कायं ( इत्यादि आवर्त्त करी ) क्युं हिक ऊं  
 चो नमी । मस्तकै अंजली करी । गुरुसांझी । दृष्टिराखी । खमणिज्जो ने  
 किलामो ( इत्यादि पाठ कहै ) पठै । फेर जत्ताजे । ( इत्यादि आवर्त्तने  
 कर ) ऊजो थई । पाठै पगे नृमि पुंजतो । अवग्रह बाहिर स्वस्थाने आ  
 वी । आंवस्सियाए ( इत्यादि पाठ ) सर्व कहै । बीजी वार वले इम हीज  
 करे । ( पिण ) अवग्रह बाहिर न नीकलै । तिहां ऊजो जे सर्व पाठ कहै ।  
 आविस्सियाए पठ न कहै । ( इम सर्वत्र जाणिवूं ) पठै अवग्रह मांहि रही  
 कहै । इच्चाका० सं० ज० । राइयं आलोवूं ( गुरु कहै आलोएह )  
 पठै । इच्चं आलोएमि जोमेराइउ ( इत्यादि पाठ ऊंचे रती ) काजसंग मां  
 हें चितव्या । रात्रिसंबंधी अतीचार । गुरु समझ आलोवे । पठै । सबस्सवि  
 राइय ( इत्यादि पाठ कहै ) तिहां इच्चाका० सं० ज० एपद कहिवै  
 करी । आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगै ( गुरु कहै पणिक मंह )  
 पठै । इच्चंतस्स मिच्चामि पुक्कडं ( कहै ) संमासा प्रमार्जो । आसणें  
 बैसी । जीमणो गोनी ऊंचे राषी । नावो गोमो नीचो करी ( एहवूं कहै )  
 जगवन् सूत्रजणुं ( गुरु कहै जणह ) पठै इच्चं कहै । ३ नवकार । ३ करेमि  
 जंतै ( अथवा ) १ नवकार । १ करेमि जंतै ( कहै ) इच्चामि पणिक  
 मिं उं । जोमेराइउ ( इत्यादि कहै ) वंदितू सूत्र । तंनिदे तंव गरिहामि  
 ( सूधी कहै ) पठै ऊजो थई । अब्बुं छित्तिमि आराहणाए ( इत्यादि संपूर्ण  
 कहै ) वे बांदणा देई ॥ अवग्रह मांहि थकी हीज कहै । इच्चाका० ॥  
 सं० ज० । अब्बुं छित्तिमि अब्बितर । राइयं ( कहै ) संमासा प्रमार्जेन  
 पूर्वक गोडालीये बैसी । बेबाह पडिलेही । मुहपत्ती वाम हाथसुं मुखें  
 देई । दक्षिण हाथ गुरु सांझो करी । नीचो नम्यो थको । जंकिंचि अप्यत्तियं  
 ( इत्यादि संपूर्ण कहै ) तिवारै गुरु पिण मिच्चामि पुक्कडं कहै ) पठै । वे  
 बांदणा देई । नृमि प्रमार्जता । पाठै पगे अवग्रह बाहिर आवी । आयरिय  
 उवझाए । इत्यादि गाथा ३ कहै । पठै । करेमि जंतै ० । इच्चामि ठामि  
 काजसंग । तस्सुत्तरी । ( इत्यादि कहै ) काजसंग करै । काजसंग मांहें ।

श्रीवीर कृत ढम्मासीतप चिंतवै (जो) ढम्मासी तपन जाणै (तो) ६ लोगस्स,  
अथवा, २४ नवकारनो कावसग्ग करै ऐसी प्रवर्त्तै है । पणै जे पच्चक्खाण करावो  
हुवै ( ते ) हियामां हि धारी । काउसग्ग पारी । लोगस्स कही । ऊकड़वैसी ।  
सुहपत्ती पडिलेही । वे वांदणा देई । सकल तीरथ नामलेई । नमस्कार करी  
( कहै ) इह कार जगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावो जी ( पणै ) गुरु  
मुखें पच्चक्खाण करै । गुरु अजावै थापना समद्धे ( अथवा ) साधर्मो मुखें  
पच्चक्खाण करै ( पणै ) इहामो अणुमाठि कही, वैसै ( तिवारै ) गुरु ?  
थुई कहां पणै । मस्तकै अंजली करी । नमो खमासमणाणं ! नमो ज्ञात्ति  
घा कही ॥ संसार दावानल इत्यादि ( अथवा ) नमोस्तु वर्द्ध मानाय । इ  
त्यादि ( अथवा ) पर समय तिमर ( इत्यादि तीन गाथा जणी ) शक्रस्त  
व कहै । पणै । ऊजो थई । अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं । वंदणवत्ति  
आए ( इत्यादि कही ) काउसग्ग मांहे ? नवकार चिंतवी । एक श्रावक प्रथ  
म काउसग्ग पारी । नमोर्द्ध सिद्धा कही । एक गाथा स्तुति कहै । बीजा  
सर्व काउसग्ग मांहे रह्या सुणें ( पणै ) एमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग  
पारै । इम आगे पिण जाणवो । ( पणै ) लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत  
चेइआणं । वंदणवत्ति० । अन्नत्थू० । ( इत्यादि कही ) ? नवकारनों का  
उसग्ग करी ( पारी ) बीजी स्तुति कही । सिद्धाणं बुद्धाणं कहै । ( पणै ) वे  
यावच्च गराणं० । अन्नत्थू० कही । ? नवकारका० करी । ( पारी ) नमो  
र्द्ध सिद्धा कही । चौथी स्तुति कही । ( बैसी ) । नमोत्थुणं कहै । पणै  
तीन खमासमणें । पूर्वोक्तरीतें । आचार्य । उपाध्याय । सर्व साधू वांदे ।  
इति प्रज्ञाती पम्फिमण विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः इतना विशेष है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ इतनी विधि कियां पाठे थिरता हुवै ( तो ) उत्तर दिशें । सीमंधर  
स्वामी सांहमां बैसी । कम्म जूमी २ ( इत्यादि ) संपूर्ण चैत्यवंदन करै  
( प्रांतें ) अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं । वंदणवत्ति० अन्नत्थू० कही ।  
? नवकार चिंतवी ( पारी ) सीमंधरस्वामीनी स्तुति कहै । इम हीज  
थिरता हुवै ( तो ) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवंदन करै ॥ पणै पम्फिलेहण

करै ( ते इम ) खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । पणिलेहण संदिस्सांनं  
 ( गुरु कहै मंदिस्साएह ) बीजै खमासमणे । इच्छा० सं० ज० । पणिलेहण  
 करं ( गुरु कहै करेह ) पठै । इच्छं कही । मुहपत्ती पणिलेहै । ( इमहीज  
 दोई खमासमणे । अंग पणिलेहण संदिस्सांनं । अंग पणिलेहण करं  
 ( कही ) धोतियो कणदोरो पणिलेही । खमासमण देई । इच्छकार जगवन्  
 पसाज करी पडिलेहण पडिलेहा वोजी ( इम कही ) थापनाचार्य पडिलेही ।  
 राखै ( अने ) जो गुर्वा दिक् थापनाचार्य पणिलेहै । तोपिण । खमासमण  
 देई आग्यामांगे । पठै खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । मुहपत्ती  
 पडि लेहुं ( गुरु कहै पडिलेहेह ) पठै इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय  
 खमासमणे इच्छाका० सं० ज० । उही पडिलेहण संदिस्सांनं । करं ( कही )  
 कंबल वस्त्रादि पडिलेहै । पठै । पोसहशाला प्रमार्जी । काजो विधसुं  
 परठी । खमासमण देई । इरियावही पडिकमें ( एमूलविध जाणवी ) ॥ ❀ ॥  
 इतरी स्थिरतानहुवै तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी । हिवणां पिण प्रायें  
 इमहीज करता दीसै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै सामायक पारणेंकी विधि कहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पठै सामायक पारै । १ खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै  
 फेर खमासमण देई इच्छा० सं० ज० । सामायक पारं ( गुरु कहै पुणोवि  
 कायव्यो ) पठै यथाशक्ति कही । बले खमासमण देई ( कहै ) इच्छाका०  
 सं० ज० । सामायक पारैमि ( गुरु कहै आयारोनमोत्तव्यो ) पठै तहत्तिक  
 ही । अर्ध नम्र ऊजो थको । नीननवकारगुणी । नीचो गोमार्जीयै बेसी ।  
 मस्तक नमावी । जयवंदसन्नजहो ( इत्यादी गाथा कहै ) ( अथवा ) पहिलां  
 सामायक पारी । पठै पडिलेहण करै ( इहां ) यथायोग्य अवसरै  
 गुरुनें सुहराई पठै ( ते इम एक खमासमण देई कहै । इच्छकार जगवन्  
 सुहराई सुखतप शरीर निरावाध संयम यात्रा सुखे निरवहैजेजी, ठे  
 पूज्यजी साता ( इत्यादि पूजी ) बीजी खमासमण देवे । श्रीजिन पति सुरि  
 जीनी समाचारीमें इम कह्यो ॥ ❀ ॥ इति सामायक पारणविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ संध्याकाल सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पाबलै पहर धर्मशाला प्रमार्जी । वस्त्रादि पन्जिहेहै । जो अवेजो आयो हुवै ( तो ) दृष्टि पन्जिहेहण करै । पढै । गुरु आगै ( अथ वा ) थापनाचार्यजी आगै आवी । नृमी प्रमार्जी । आसण बांम पास मूं की । खमासमण देई ( कहै ) इच्छाका० सं० ज० । सामायिक मुह पत्ती पन्जिहेहुं ( गुरु कहै पन्जिहेहेह ) पढै इच्छं कही । बले खमासमणदेई इच्छाका० सं० ज० । सामायक संदिस्साजं ( गुरु० संदिस्सावेह ) फेर खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सामायक ठातं ( गुरु० ठाएह ) पढै इच्छं कही । फेर खमासमण देई । अर्धावनत थई । तीन नवकार गुणी ( कहै ) इच्छकार जगवन पसाज करी सामायिक दंन उचरावो जी ( गुरु० उचरावेमो ) पढै । करेमि जंते सामाईयं ( इत्यादि ) सामायक सूत्र गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो थको । तीन वार उचरी । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । इरिया वहियं पन्जिकमामि ( गुरु कहै पन्जिकमह ) पढै इच्छं कही । इच्छामि पन्जिकमिजं । इरिया वहियाए ( इत्यादि पाठें इरियावही पडिकमी । १ लोगस्स नो कानुसग्ग करी । एमो अरिहंताणं कही । कानुसग्ग पारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । नीचावैसी । मुहपत्ती पडिलेही । बांदणा देई ( कहै ) इच्छकार जगवन पसाज करी पच्चक्खाण करावोजी पढै ( गुरु ) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै ॥ गुरु अज्ञावै थापनाचार्य समहें ( अथवा ) स्वमुखें ( तथा ) वक्केरा साधमीं मुखें पचखै ( अनें ) जो तिविहार उपवास कीधो हुवै ( तो ) मुहपत्ती पन्जिहेही । पच्चक्खाण करै । बांदणा नद्यै ( अने ) जो चउविहार उपवास हुवै ( तो ) पच्चक्खाण करवोले नही । ते माटै । मुहपत्ती नही पन्जिहेहै । एविस्तार विधिहै । पढै १ खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सिज्जाय संदिस्साजं ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) पढै इच्छं कही । बले खमासमण देई । इच्छा० । सं० । ज० । सिज्जाय करं ( गुरु० करेह ) पढै इच्छं कही । खमासमण देई । ऊजो थको ( मधुरस्वरें ) ८ नवकाररनी सिज्जाय करै । पढै खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । बैसणो संदिस्साजं ( गुरु० सं

दिस्सावेह ) फेर खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । वैसणो ठाउं ।  
( गुरु० ठाएह ) पठे इत्तं कही । जो शीतकालादि हुवै ( तो ) खमास  
मण देई । इत्ता० सं० ज० । पांगरणो संदिस्साउं ( गुरु० संदिस्सावेह )  
फेर खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । पांगरणो पन्निघाउं ( गुरु०  
पन्निघाएह ) इत्तं कही शुभध्यान करे ॥ ३ ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ ३ ॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण विधि लि० ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ खमासमण देई ॥ इत्ता० सं० ज० । चैत्य वंदन करूं  
( गुरु कहै करेह ) पठे इत्तं कही । जयतिहुयण० । जय महायस ( प्र  
मुख ) नमस्कार कही । नमोत्युणं कही । अरिहंत चेइयाणं ( इत्यादि  
पूर्वोक्त रीतें ) च्यारे थुई ए देव बांदै । च्यार खमासमणें आचार्यादिक  
बांदी । पठे इत्तकार समस्त आवको बांडुं । इम कही गोमालिये बैसी ।  
मस्तक नमावी । सबस्सवि देव सिय ( इत्यादि ) तस्स मिठामि पुक्कडं क  
है ( पिण ) इत्ता कारेणं संदिस्सह इत्तं ( एपढ न कहै ) पठे ऊजा थई ।  
करेमि जंते सामाड्यं । इत्तामि ठाउ काल संगं । जोमे देवसिउं ।  
तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थू ससिएणं ॥ ) इत्यादि कही ( कालसगग करे ।  
कालसगग माहें । आजूणा चौपहरा दिवसमें ) ( इत्यादि पाठ मनमें चिं  
तवी ) एमो अरिहंताणं कही । कालसगग पारी । लोगस्स कहै । संना  
शा प्रमार्जन पूर्वक बैसी । सुहपत्ती पन्निहेही । वे बांदणा देवै । पठे अवग्रह  
मांहि ऊजो थको कहै ॥ इत्ता० सं० ज० ॥ देवसियं आलोऊं । गुरु कहै आ  
लोएह । पठे । इत्तं आलोएमि० पाठ कहै । आजूणा चौपहर दिवस० । लघु  
अतीचार आलोवै । पठे सबस्सवि देवमिय ( इत्यादि ) इत्ता कारेण संदिस  
ह । सधी कहै । तिवारै ( गुरु कहै पन्निमह ) पठे । इत्तं तस्स मिठामि  
पुक्कडं ( कही ) संनाशा प्रमार्जी । प्रमार्जित-जूम आसणें बैसी कहै ।  
जगवन सूत्र जणुं ( गुरु कहै जणह ) पठे इत्तं कही । तीन नवकार ३  
करेमि जंते ( अथवा ) १ नवकार १ करेमि जंते ( कही ) इत्तामि पन्नि  
कामिउं । जोमे देवसीउं ( इत्यादि कही ) एक आवक बांदित्तू कहै । बी  
जा सर्व सुणें । पठे ऊजो थई । अष्टाडिउमि आराहणाए ( इत्यादि सं

पूर्ण पाठ कही ) बे वांदणा देवै । अवग्रह मांहिज ऊजो थको । इच्छाका०  
 सं० ज० । अष्टाष्टिनिमि अष्टिंतर । देव सियं खामेनं ( गुरु कहै खामेह )  
 पठै इच्छं खामेमि देवसियं ( कही ) गोमालीयै बैसी । वाम हाथें मुह पत्ती  
 मुखें धरी । दक्षिण हाथ गुरु सनमुख करी । मस्तक नमावी ( सर्व पाठ  
 कहै ) पठै विधिसुं बे बांदणादेइ । आयरिय उज्झाए ( इत्यादि ३ गाथा  
 कही ) करेमिजंते सामाझयं ॥ इच्छामि ठानं कानसगं ( इत्यादि कही )  
 चारित्र शुद्धिनिमित्तै दोयलोगस्सनो कानसग करै ( पारी ) दर्शन शुद्धि  
 निमित्तें प्रगट लोगस्स कही । सबलोए अरिहंतचे० । वंदण० । अन्नत्थू०  
 कही ॥ १ लोगस्सनों कानसग करै ( पारी ) ज्ञान शुद्धि निमित्तें ।  
 पुक्खरवर दीवट्टे ( कही ) सुयस्स जगवन्त० । वंदण० व० । अन्नत्थू कही ।  
 १ लोगस्सनों कानसग करै ( पारी ) सिद्धाणं ( कही ) वेयावच्च  
 गराणं न कहै । पठै । सुयदेवयाए करेमि कानसगं । अन्नत्थू कही । एक  
 नवकारनों कानसग करी । गुरु संयोग नहीं हुवै ( तो ) एक श्रावक  
 कानसग पारी । नमोर्द्धत्तिद्धा० कही । श्रुतदेवतानी स्तुति कहै । ( गुरु  
 हुवै तो गुरु कहै ) बीजासर्व स्तुति सुणकै कानसग पारें । पठै । खित्त  
 देवयाए करेमि कानसगं । अन्नत्थू कही । एक नवकार चितवी । पूर्वली  
 परें ( क्षेत्र देवतानी स्तुति कहै ) पठै ऊजो थको । १ नवकार कही ।  
 संमाशा प्रमार्जी । ऊकडू बैसी । मुहपत्ती पम्जिही । विधिसुं बे वांदणा  
 देई । इच्छामो अणुसठि कही । बैसै ( पठै गुरु एक स्तुति कहां पठै :  
 श्रावक समस्त मस्तकें अंजली करी । एमो खमासणाणं । एमो र्द्धत्तिद्धा  
 कही । एमोस्तु वर्ध मानाय ) इत्यादि तीन स्तुति कहै ( श्राविका ।  
 एमो खमासमणाणं । कही । संसार दावानी तीन स्तुतिकहै । पठै एमो  
 त्थुणं कही । एक श्रावक खमासमण देई कहै । इच्छाका० सं० ज० ।  
 स्तवन जणुं । बीजा सर्व खमासमण देई कहै । इच्छा० सं० ज० । स्तवन  
 सांजलुं ( गुरु कहै जणह, सांजलह ) पठै आसणें बैसी । नमो र्द्धत्तिद्धा०  
 पूर्वक । वमो स्तवन कहै । पठै तीन खमासमणें । आचार्य उपाध्याय  
 सर्व साधू बांदी । चोथे खमासमणे इच्छा० सं० ज० । देवसी प्रायश्चित्त



विशुद्धि निमित्तं काउसग्न करं ( गुरु कहै करेह ) पठै इष्टं कही । देवसी प्रायश्चित्त विमुद्धि निमित्तं । अन्नत्यू कही । च्यार लोगस्सनो काउसग्न करै ( पारी ) लोगस्स कहै । पठै खमासमण देई । इष्टा का० सं० ३० । खुदो बहव नुहनावणत्थं करेमि काउसग्न । अन्नत्यू० ) इत्यादि कही । च्यार लोगस्सनो काउसग्न करै ( पारी ) लोगस्स कहै ॥ वैसी । खमासमण देई । थंजणा पार्थनाथ जीनों चैत्य वंदन करै । जय वीयराय कहाँ पठै खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी ॥ सिरि थंजणयछिय पास सामिणो ( इत्यादि दोय गाथा कहै ) ऊजा थर्ड । वंदणव० अन्न० कही ४लोगस्सनो काउसग्न करै ( पारी ) मगट लोगस्स कहै ( डम हीजे ) दादा जी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसग्न करै ( पारी ) मुखे लोगस्स कहै । पठै दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजीनो काउसग्न करै । ( पारी ) मुखे लोगस्स कहै पठै । ठोटी शांति कहै ( जो ) शांति न आवै ( तो ) १६ नवकारनो काउसग्न करै । पठै । ३ खमासमण देई । चंचकसायनो चैत्यवंदन जय वीयराय सूधी करै । सर्व मंगल कहै ॥ चंचकसायनो चैत्यवंदन सूती बखतं करनैकोहे ( पिण ) हिवणा प्रवृत्ति ऐसीजोहे ॥ पठै पूर्वोक्तरीतै सामा यक पारै । इति देवसी पन्तिकमण विधिः संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात्रीनै पाजले विघमिये निद्रा दूर करीनं । पंचपरमेष्टि स्मरण करी । गृहचिंता परिहरी । पर्वदिवस थकी । प्रथम दिवसें । पन्तिकेही राख्याजे पोसहना उपगण लेई । पोसह शालाये थापनाचार्य समीपे । अथवा गुरुनो संयोग हुवे ( तो ) गुरुनै पास आवी । जूमीप्रमार्जी । एक खमासमण देई । इरियावही पन्तिकमें । पठै खमासमण देई । उच्चाका० सं० ३० । पोसह मुहपत्ती पन्तिकेहुं । ( गुरु कहै पन्तिकेहेह ) इष्टं कही । खमासमण देई । मुहपत्ती पन्तिकेहै । पठै ऊजो थर्ड । खमासमण देई । उच्चाका० सं० ३० । पोसह संदिस्साउं ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) । पठै इष्टं कही । खमासमण देई । उच्चाका० सं० ३० । पोसह ठाउं ) गुरुकहै । ठाएह ( पठै इष्टं कही । खमासमण देई । ऊजो थर्ड । आधो सरीर नमावी ।



मुखे मुहपत्ती देई । मधुर स्वरे । तीन नवकार गुणी कहै । इठकार जग  
 वन पसान करी । पोसह दंरुक उचरावोजी ) गुरु० उचरावेमो ) । पठै करे  
 मित्रंते पोसहं । आहा० । जाव अहोरत्तंवा० । अप्पाणंबो० ॥ एपाठ तीनवार  
 गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो ऊचरै ॥ ❀ ॥ पठै एक खमासमणें । इठा  
 का० सं० ज० । सामायक मुहपत्ती पमिलेहुं ( गुरु कहै पमिलेहेह ) बीजी  
 खमासमण देई । मुहपत्ती पमिलेहै । पठै । दोय खमासमणें सामायक संदि  
 स्सानं । सामायक ठांनं ( कही ) खमासमण देई । अर्धवनत गात्रऊजो  
 थको । तीन नवकार । तीन करेमि जंते ऊचरी । दोय खमासमणें ।  
 बैसणो संदिस्सानं । बैसणो ठांनं । कही । पठै दोय खमासमणें । सिझाय  
 संदिस्सानं । सिझाय करं ( कही ) खमासमण देई । ऊजो थको । आठ  
 नवकारनी सिझाय करै । सीतादि परीसहै दोय खमासमणें । पांगरणं संदि  
 स्सानं । पांगरणं पमिघानं ( कहै ) । ए सर्व सामायक विधि पूर्वं कही है  
 तिमहीज करवी । ( पिणइतनो विशेष है ) पहिलां इरियावही पमिकमीहै ।  
 ते माटै । इहां सामायक दंरुक ऊचरयां पठै । इरियावही नही पमिकमी  
 जै ॥ ❀ ॥ पीठै चैत्यवंदन । जय बीयराय सूधी करी । कुसुमण पुस्समिण  
 कानसग्न करै । पठै पमिकमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै । पठै पूर्वो  
 त्तरितें पमिकमण करै ( पिण इतरो विशेषहै ) च्यारे थुई ए देव बांधां  
 पीठै । खमासमण देई ( कहै ) इठाका० सं० ज० । बहुवेलं संदिस्सानं  
 ( गुरु कहै ) संदिस्सावेह ( पठै इठं कही ) खमासमण देई ( कहै )  
 इठाका० सं० ज० । बहुवेलं करं ( गुरु कहै करेह ) पठै इठं कही ।  
 तीन खमासमणें ॥ श्री आचार्यजी मिश्र १ । श्रीनपाध्यायजी मिश्र २ ।  
 तीजै सर्व साधू बांदा । कम्म नूमिहि २ । ( इत्यादि नमस्कार जणें ) जो  
 पमिलेहण वेला नही हुवै ( तो ) सीमंधर स्वामीनो चैत्य वंदनादि करी ।  
 सिझाय करै । हिवै पमिलेहण वेला पमिलेहण करै ) । ते विधिपूर्व्वं लि-  
 खीठे । ( तोपिण ) संक्षेपें फेर लिखेंहें ॥ ❀ ॥ दोय खमासमणें । इठा०  
 सं० ज० । पमिलेहण करं ( कही ) मुहपत्ती पमिलेहै । पठै दोय खमा  
 समणें । अंग पमिलेहण संदिस्सानं । अंग पमिलेहण करं ( कहै ) पठै

( गुरु वचनें ) इहं कही । धौतियो कणदोरो पन्जिलेही । वस्त्र पहिरी ।  
 खमासमण देई । इहंकार जगवेन पसाउकरी पन्जिलेहण करावोजी । ( इम  
 कही ) । थापनाचार्य पन्जिलेही थापे । अनें जो ( गुर्वादिक ) थापनाचार्य  
 पन्जिलेहें । ( तो ) पिण ( खमासमण देई । उक्त रीते आग्यामागें ।  
 पठे खमासमण देई । इहंका० सं० ज० । उपधि सुहपत्ती पन्जिलेहें  
 ( गुरु कहै पन्जिलेहेह ) पठे इहं कही । सुहपत्ती पन्जिलेही । दोय खमास  
 मणें । इहंका० सं० ज० । उही पन्जिलेहण संदिस्साउं ( गुरु संदिस्सा  
 वेह ) उही पन्जिलेहण करं ( गुरु कहै करेह ) पठे इहं कही । कंबल वस्त्रा  
 दि पन्जिलेही । पोसहसाला प्रमार्जी । काजो विधिसुं परिठवी । एक खमा  
 समण देई इरियावही पन्जिकमें ( इहां आचार दिन करमें कह्योठे )  
 ॥ ❀ ॥ दोयखमासमणें । इहंका० सं० ज० । वसती संदिस्साउं । वसती  
 पन्जिलेहें ( कही ) । वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे ( इत्यादि ) पिण विधि  
 प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ❀ ॥ हिंवै एक खमासमणें । इहंका० सं०  
 ज० । सिझाय संदिस्साउं । ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) बीजै खमासमणें ।  
 इहंका० सं० ज० । सिझाय करं । ( गुरु कहै करेह ) पठे इहं कही ।  
 नवकार १ कथन पूर्वक ( उपदेश माला ) प्रमुख सिझाय करी । नवकार  
 एक कही । धर्म ध्यान करै । जणें, गुणें, वखाण सुणें ॥ ❀ ॥ इम करतां  
 पूण पुहुर दिन चढ्यां । जगामा पोरिसी शागम्या । बहु पन्जिपुत्रा पोरिसी ।  
 कही । खमासमण देई । इरियावही पन्जिकमी । दोय खमासमणें ।  
 इहंका० सं० ज० । पन्जिलेहण करं । ( गुरु वचनें ) । इहं कही । सुह  
 पत्ती पन्जिलेही । पान जोजनें पात्र पन्जिलेही राखै । पठेसिज्जाय ध्यानकरै ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै काल वेलायें । आवस्तही पूर्वक देहरै जई । पांचेशक्रस्त  
 वे देववांदे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै पांचेशक्रस्तवे देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखिये हैं  
 ॥ ❀ ॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । जूमि प्रमार्जी ।  
 पुरुष हुवै तो ) प्रजूजी सुं दक्षिणपासे बैसे । स्त्रीहुवै ते बांम पासे बैसे ।  
 पठे । इहंका० सं० ज० । चैत्य वंदन करं । इहं कही । पठे नमोत्युणें

कहै । खमासमण देई । इरियावही पन्निक्कमें । एक लोगस्सनो काजसग्ग करे । मुखें लोगस्स कहै । संनाशा प्रमार्जी बैसै । तीन ( तथा ) च्यार ( तथा ) पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जंकिं च नाम तित्थं । ( इत्यादि कही ) पठै । नमोत्थुणं कहै ( ऊनो थई ) अरिहंत चेई याणं करेमि का उमग्गं । वंदण वत्ती० । अनत्थू० । कही । १ नवकारनो काजसग्ग करे ( पारी ) एक थुईकी गाथा कहै ॥ पठै लोगस्स । सब लोए अरि० ! वंदण० अनत्थू० । कही । १ नव० । ( पारी ) २ थुईकी गाथा कहै । पठै । पुक्खर वरदी० । सुअस्सज्जग० । वंदण० । अनत्थू० । कही । १ नव० का० ( पारी ) ३ थुई कीगा० । पठै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयाववगराणं० । अनत्थू० । ( इत्यादि कथन पूर्वक ) चोथी थुईसे देववांदी । नमोत्थुणं कहै फेर अरिहंतचे० कही । इसीतरे । चार थुईए देव वांदी बैसे । नमोत्थुणं कहै । नमोर्द्ध सिद्धाचार्यो पा० ( इत्यादि कही ) पठै स्तवन कहै । पठै जय वीयराय कही । ( नमोत्थुणं ) सबे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहै ॥ ❀ ॥ इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधिः ॥ ❀ ॥ प्रवचन सारोधार प्रमुख ग्रंथमें कहीठै ) ॥ ❀ ॥ तथा चैत्य वंदन बृहद्भाष्यमें इम कहोठै ॥ १ ॥ ❀ ॥ नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव कही । इरियावही प्रति क्रमणादि करै । वली नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही । दोयवार च्यार थुईसे देववांदै । फेर शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाई गाथा जणी । खमासमण पूर्वक । जा वंतिके० बीजी गाथा कही । स्तवन कहै । वली नमोत्थुणं कही । जय वीय राय कहे ॥ ❀ ॥ इति देव वंदण विधिः ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पठै निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही पन्निक्कमें । पठै सिञ्जाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ जो तिविहार उपवास कियो हुवै ( तो ) पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां । जलपीणेंकुं पच्चक्खाण पारै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै पच्चक्खाण पारणें की विधि लिखिये है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरियावही पन्निक्कमें । फेर एक खमा० । इ ङा० सं० ज० । पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ( गुरु कहै पन्नि० ) पठै इठं कही । खमा० देई । मुहपत्ती पन्निक्कमें । फेर एक खमा० देई ।

इत्ता० सं० ज० । पाणहार असुक पचक्खाण पारं ( गुरु कहै पुणोवि कायवो ) पढै यथाशक्ती कही । खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । पाणहार पारियुं ( गुरु कहै आचारो नमोत्तवो ) पढै तहत्ति कही । १ नव कारगुणी । असुक पचक्खाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किट्टियं । आराहियं । जंच नआराहियं । तस्स मिट्ठामि डुककं ( कही ) चैत्य वंदन करै कृणमात्र सिज्जाय करी । यथा संजवे । अतिथि संविजाग करी पाणी पीवै

॥ ❀ ॥ तथा उपधान वाही हुवै । ( तो ) पोरसी प्रमुख पचक्खाण पारी । आहार करै । पढै आसण बैठो थको हीज । दिवस चरम पचखै । पढै । इरियावही पन्निक्की । चैत्य वंदन करै । ( ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्ते ठे ) ॥ ❀ ॥ इति पचक्खाण पारणोकी विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पढै जो बहिर्जूमि जावणो हुवै ( तो ) आवस्सही कही । उप योगीथको । निर्जीव स्थंभिलै जई । अणुजाणह जस्सुग्गहो कही । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकनै पूठि अणदेई । मल मुत्र परितवै । प्राशुक जलै शुद्ध थई । वार तीन बोसरामि २ । एहवूं कहिवे करी । मल मुत्र बोसरावी पोसह शालायें । निस्सही पूर्वक ( पैसी ) इरियावही पन्निक्की । खमासमण देई । कहै । इत्ताका० सं० ज० । गमणा गमण आलोयहं ( गुरु कहै आलोएह ) पढै इत्तं कही । गमणागमण आलोवै ॥ ❀ ॥ ( तेइम ) आवस्सही करी । प्राशुक देशें जई । संभाशा पूंजी । थंडिलो पडिलेही । उच्चार प्रश्रवण बोसरावी । निस्सही करी । पोसह शालायें आव्यो आवंति जंतैहिं । जंखंडियं । जंविराहियं । तस्समिट्ठामि डुककं ॥ इम कही वैसे । पढै पन्निजेहण वेला सीम सिज्जाय ध्यान करै ॥ हिवै पाठलै पुहुर । इरियावही पडिक्की । खमासमण देई कहै । इत्ताका० सं० ज० । पन्निजेहण करं । ( गुरु कहैक० ) पढै इत्तं कहो । दूजे खमास मणें । इत्ताका० सं० ज० । पोसहशाला प्रमार्ज्ज ( गुरु कहै ) प्रमार्जह पढै इत्तं कही । मुहपत्ती पन्निजेही । दोय खमासमणें । अंग पन्निजेहण संदिस्सानं । अंग पडिलेहण करं । ( कहै ) पढै ( गुरुवचनं ) इत्तं कही मुहपत्ती पन्निजेही । दंभासणो पूंजणी प्रमुख सोंपमार्जी । पोसहशाला प्रमा

जै ( पठै ) काजो शुद्ध करी । ऊधरी । एकांते बिखरतो परठवी । इरियाव  
 हो पम्किमी । खमासमण पूर्वक कहै । इच्छकार जगवन पसान करी प  
 डिलेहणा पडिलेहावोजी । पठै थापनाचार्य पम्किलेही । थापे । गुरु समीपै  
 ( अथवा ) थापनाचार्य समीपै । एक खमासमण देई । इच्छाका०  
 सं० ज्ञ० । मुहपत्ती पम्किलेहुं ( गुरु कहै पडिलेहेह पठै इच्छ कहौ ) खमा-  
 समण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पठै दोय खमासमणें । इच्छा० सं० ज्ञ०  
 सिझाय संदिस्मानं । सिझाय करुं ( कही ) उत्तरीतें कृणमात्र सिझाय  
 करी । तिविहार उपवास कीधो हुवै । ( तो ) गुरुशाखें । पाणिहार पचखै  
 ॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कीधो हुवै ( तो ) वांदणां दोय देई । पच  
 कखाण करै ॥ ❀ ॥ ( पठै ) एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज्ञ० । उप  
 धि थंमिला पम्किलेहण संदिस्मानं । बीजै खमासमणें । इच्छाका० सं० ज्ञ०  
 उपधि थंमिला पडिलेहुं ( गुरुवचनें ) इच्छ कहौ । दोय खमासमणें । इच्छा  
 का० सं० ज्ञ० । बैसणो संदिस्मानं । बैसणोठानं । कही ( बैसै ) वस्त्र कंबला  
 दि पम्किलेहै । पुंजणी हुवै ( तो ) ते पिण । मुहपत्ती सुं पडिलेहै । उपवा  
 सी तोठै । तेमाटे । सर्वपाठो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पम्किलेहै ॥ ❀ ॥  
 उपधानवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवै ( तो ) कम्पिट्टादि पम्किलेह्यां पठै ।  
 वस्त्रकंबलादि पम्किलेहै । ( एविशेष ठै ) । पठै कालबेला सीम सिज्जाय ध्या  
 न करै ॥ ( पीछै ) उच्चार प्रश्रवण २४ थंमिला पडिलेहै ( जो ) चउदस  
 हुवै । ( तो ) पाखी चउमासी पम्किमणो करै । संवठरियें संवठरी पम्कि  
 मणो करै ॥ ❀ ॥ तिहां देवसी पम्किमणो पूर्वे लिख्योठै । तिमहीज करै ।  
 ( पिण इतरो विशेष ठै ) । इच्छा० । देवसियं आलोएमि । इत्यादि । देव  
 सी आलोयां पठै । ठाणे कमणे । चंकमणे । ( इत्यादि पाठ कहै ) ( तथा )  
 खुदो वदव कान्सगग कियां । पठै । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० ज्ञ०  
 सिझाय संदिस्मानं । सिझाय करुं ( कही ) बैठो थको । तीन नवकार  
 प्रमुख सिझाय करै इति ॥ ❀ ॥ पाहिकादि तीन पम्किमणाकी विधि  
 आगे लिखी है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पम्किमणो हुवां पठै । साधुनी वेयाच कर । पोरसी

सीम.सिझाय ध्यान करे । जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवै तो आसक्त कहितो यको । जूमि प्रमाजैं । थंमिल स्थानकें जई । देहसंका निवारै । प्रश्रवण वोसरवी । स्वस्थानकें आवै । ( जगवन् ) बहु पन्निपुत्रा पोससी । ( इम कही ) खमासमण देई । डरियावही पन्निक्में । पीने राई संधारा विधि करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै राई संधारा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । राई संधारा मुहपत्ती पन्निजे हुं । ( गुरु कहै पन्निजेह ) पने इच्छा कही । खमासमण देई । मुहपत्ती पन्निजेहै । एक खमासमणें । इच्छा० सं० ज० । राई संधारो संदिस्साव । बीजे खमासमणें । इच्छा० सं० ज० । राई संधारो ठावूं ( पने ) गुरुवचन । इच्छा कही । चतुक्साय पन्निम लुखरण । ( इत्यादि ) नमस्कार कथन पूर्वक जय बीरराय सूधी चेत्यवदन करै । जूमि प्रमाजैं । संधारो उत्तर पटो पाथरै । पने शरीर प्रमाजैं । निस्सही रे इम कही । संधारै बैसी । तीन नव कार । तीन करिमि जंते । कुचरी । एमो खमासमणणं गोयमाईणं महा सुणीणं । अणुजाणह चिठिजा । अणुजाणह परमगुरु । ( इत्यादि ) राई संधारा गाथा जणी । वामहाथ सिराणे देई । सोवै । निद्रानावै । जासीम । मुनि वरचरित्र चितवै । पसवानो फेरै ( तो ) शरीर संधारो प्रमाजैं फेरवै । जो देह शंकाये ऊठे ( तो ) पूर्वोक्त विधे देहशंका निवारी । डरियावही पन्निक्में । पने जवन्ये पिण । तीन गाथानी सिझाय करी सोवै ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ इति राई संधारा विधि कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै रात्रीनें प्रान्तिनै पुहर ऊठी । नवकारादि गुणी । डरियावही पडिकमें । खमासमण देई । कुसुमिण दुस्सुमिण काउसंग करी । पूर्वोक्त विधे सामायिक लेवै । इहो डरियावही न पन्निक्में । पने दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकारगुणी । पन्निक्मण वेजांसीम सिझाय करै । पडिकमण वेला हुवां । पन्निक्मणो पूर्वली परे करै । ( पिण इंतरो विशेषने ) । राई आलोयां पने संधारा उवटणकी ( इत्यादि पाठ कहै ) इम संपूर्ण पन्निक्मणों करी । पन्निजेहण वेलायें । पूर्वोक्त विधे पन्निजेहण

करी । धर्मशाला पूंजी । काजो ऊधरी । इरियावही पम्किमें । दोय खमास मणें । सिझाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करै । पढै पोसहपारै ॥

॥ ❀ ॥ हिबै पोसहपारणेंकी विधि लिखियै है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । मुहपत्ती पम्किलेहै । फेर । खमासमण देई कहै । इन्हा० सं० ज० । पोसह पारुं ( गुरु कहै पुणोवि कायबो ) पढै यथा शक्ति कही । खमासमण देई ( कहै ) । इन्हा० सं० ज० । पोसह पारयूं । ( गुरु कहै आयारो न मोत्तबो ) । पढै तहत्ति कहै । खमासमण देई । तीन नवकार अर्धावनत गात्र ऊजो थको गुणी । खमासमण देई । मुहपत्ती पम्किलेहै । पीढै खमासमण देई कहै । इन्हाका० सं० ज० । सामायक पारुं ( गुरु कहै पुणोवि कायबो ) पढै यथा शक्ति कही । खमासमण देई । इन्हाका० सं० ज० । सामायक पारयूं ( गुरु कहै आयारो न मोत्तबो ) पढै तहत्ति कही । खमासमण देई । अर्धावनत गात्र ऊजो थको । हाथ जोड्यां । मुहपत्ती मुखें दियां थकां । तीन नवकार गुणी । शंभासा पम्किले है । गोडालीयै बैसी । मस्तक नमावी । जयवं दस नन्नदो ( इत्यादि जावनारूप गाथा कहै ) पढै पोसहना उपगरण संवरी । देहरै जई । देव जुहारै । घरे आवी । आहार निष्यन्न हुवो देखी । साधु समीपें आवै । अतिथि संविज्ञाग ब्रत साचवण निमित्तें । साधु जणी निमंत्रणा करी । घरे लेजावै । साधू पिण शुद्ध आहार लेई । स्वस्थानकें आवै । तिवार पढै साधूनें जे आहार दीधो । तेहनो हीज । शेष आहार आप करै ॥ इति अठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हिबै दिन ऊगां पढै पोसहलै तेहनीं विधि लि० ॥

॥ ❀ ॥ घर थकी निश्चित थई । धर्मस्थानकें आवी । सर्व उपगरण पम्किलेही । कचरो विधिसुं परिठवी । इरियावही पम्किमें । खमासमण पूर्व क आग्या मांगी । पोसह मुहपत्ती पम्किलेहै । आगे पोसह ग्रहणनी विधि पूर्व लिखी है । तिमहीज जाणवी ( पिण ) दिवस पोसह हीज करणो हुवै ( तो ) ( पोसह दंरुक ऊचरतां ) जावदिवसं पञ्जुवासामि । ( एह वो पाठ कहै ) अनें जो । अठपुहरी करवो हुवै ( तो ) जाव अहोरत्ति प



ज्जुवासामि । ( एहवो कहै ) पढै सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण  
कुसुमिण पुस्सुमिण काउसंग करी । पन्तिकमणो करी । दोय खमासमणें  
बहु वेलं संदिस्सावै २ ( अनें जो ) पूर्वें पन्तिकमणो गुरु साथे करयो हु  
वै ( तो ) पन्तिकमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वख । ते पहरी । पोस  
ह सामायिक सर्व विधि करी । दोय खमासमणें । बहुवेलं संदिस्सावै ।  
२ ( तथा ) जो गुरु सें जूदो पडिकमणो करयो हुवै ( तो ) गुरु पासै आ  
वी । पोसह सामायिक सर्व विधि करी । आलोयण खामणादि निमित्तें ।  
मुहपत्ती पन्तिकेही । वे वांदणा देई । इच्छाका० सं० ज० । राइयं आलो  
ऊं । ( गुरु कहै आलोएह ) पढै राई आलोवै । फेर १ खमासमण देई । इ  
च्छाका० सं० ज० । अञ्जुठिउमि अञ्जितर । राईयं खामेमि ( गुरु कहै  
खामेह ) पीढै सर्व पाठ कहै । राई खामें । पहिलां पडिकमणामें नवकारसी  
पचख्योथो । तेमाटे । पढै । गुरु शाखे पचक्खाण उपवासनो करै । पढै । दो  
य खमासमणें । बहुवेलं संदिस्साऊं ३ । ( ए तीन प्रकारका विकल्प जाण  
वा ) । हिवे पन्तिकेहणतो पूर्वें करीतै । ( तो पिण ) । आदेश मांगवो ।  
( तेइम ) खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० पन्तिकेहण संदिस्साऊं । बीजै  
खमासमणें । पडिलेहण करं ( कही ) मुहपत्ती पन्तिके है । पढै । इमहीज  
दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पडिलेहै । पढै ।  
बले खमासमण देई । इच्छाकार जगवन पसाज करी पन्तिकेहण पन्तिकेहावो  
जी । ( इम कहै ) पढै । एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । उपधि  
मुहपत्ती पन्तिकेहुं ( कही ) कोई वख अण पन्तिकेहो राख्यो हुवै ( तो )  
पडिलेहै । ( नहीतो ) बली आसण पडिलेहै । पढै । दोय खमासमणें ।  
मिज्ञाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिज्ञाय करै । आगे सर्व किया  
पूर्वें अठपुहरी पोसहमें लिखीतै । तिमहीज जाणवी । पिण इहां । अठ  
पुहरी पोसहीतो ) पाठली रातें बली सामायिक न लेवै । जिणें दिवस सं  
वंधी चौपुहरी पोसह लीधो हुवे । ( ते ) पाठले पुहर । पचक्खाण कियां  
पढै । दोय खमासमणें । उहीपडिलेहण संदिस्साऊं । उही पडिलेहण करं ।  
( कहै ) पिण थंमिजा पद नकहै । अनें थंमिजा नही पडिलेहै । यह



निकेवल दिनसंबंधी पोसह ग्रहण करणेंमें विसेष विधिही सो बतलाई  
॥ ❀ ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ रात्रि संबंधी चौपहरी पोसहनी विधि लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौपहरी । पोसो ऊचरयो है । पठै संध्यानी  
पमिलेहण करतां । रात्रि पोसहनो जावथयो । ( तो ) पच्चक्खाण कियां  
पठै । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पमिलेही । तीन नवकार गुणी  
तीनवार पोसह दंरुक ऊचरै । ( तिहां ) जाव रत्ति पज्जुवासामि ( इम )  
पाठ ऊचरै । पठै । सामायक विधि पूर्वे लिखी है तिम करै ( पिण )  
सामायक उचरयां पठै । दोय खमासमणें । सिआय संदिस्सावी । आठ  
नवकार कही । बैसणो संदिस्सावी । पांगरणो संदिस्सावै । पीठै । दोय  
खमासमणें । इट्ठाका० सं० ज० । उही थंमिला पमि लेहण संदिस्सानं ।  
उही थंमिला पमिलेहण करुं ( गुरु कहै करेह ) इठ्ठंकही । उपधि  
पमिले है ) आगे सर्वक्रिया पूर्वे लिखी तिम जाणवी । ( तथा ) जे श्रावक  
उपवासी तो । व्यग्रपणें । दिवसें पोसह न करी सक्यो । ते रात्रि पोस  
हनों जावथयां । पाठलै पुहर धर्म स्थानके आवै । जो वसती प्रमार्जी  
हुवै । ( तो सरयो ) नहींतो वसती प्रमार्जी । काजो परठवी । सर्व उपग  
रण पमिलेही । इरियावही पमिकमें । पीठै चौविहार पच्चक्खाण करी ।  
दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पमिलेही । दोय खमा समण देई । पो  
सह संदिस्सावै । फेर । खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीनबेर  
पोसह दंरुक ऊचरै । ( तिहां ) दिवस सेसं रत्ति पज्जुवासामि ( कहै ) संध्या  
हुवै । ( तो ) रत्ति पज्जुवासामि कहै पीठै । बिहुं खमासमणें सामायक  
मुहपत्ती पमिलेहै । दोय खमासमण देई । सामायक संदिस्सावै ।  
फेर खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीन करेमिअंते ऊचरै । दोय  
खमासमण देई । सिआय संदिस्सावी । आठ नवकार कहै । फेर दो खमा  
समण देई । बैसणो संदिस्सावी । शीतादिके बे खमासमण देई । पांग  
रणं संदिस्सावै । पीठै । बे खमासमण देई । अंग पडिलेहण संदिस्सावी ।  
मुहपत्ती पमिलेहै । फेर बे खमा समण देई । उही थंमिला पमिलेहण

संदिस्सावी । ( जो ) अण पन्निजेहो उपगरण हुवै । ( तो ) पन्निजेहै ( जो )  
सर्व उपगरण पन्निजेहो हुवै । ( तोपिण ) थानक शून्यता टालवा जणी ।  
वले आसण पन्निजेहै । पन्निक्कमण वेलासीम सिझाय ध्यान करै । पीठै ।  
उच्चार प्रश्रवणना ( २४ ) थंमिला पन्निजेही पन्निक्कमणों करै । ( तथा )  
पाठलीरातें । वली सामायक नलेवै । इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोसहलेवाना  
विकल्प जाणवा ) ॥ ❀ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ थंमिला पन्निजेहण पाठ लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आगाडे आसन्ने उच्चार पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाडे  
मझे उच्चार पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाडे दूरे उच्चार पासवणे  
अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥  
आगाडे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाडे दूरे पासवणे अणहियासे  
॥ ६ ॥ ❀ ॥ आगाडे आसन्ने उच्चार पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाडे  
मझे उच्चार पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाडे दूरे उच्चार पासवणे अहि  
यासे ॥ ९ ॥ आगाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाडे मझे  
पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाडे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ ❀ ॥  
अणागाडे आसन्ने उच्चार पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाडे मझे  
उच्चार पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाडे दूरे उच्चार पासवणे  
अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥  
अणागाडे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाडे दूरे पासवणे  
अणहियासे ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अणागाडे आसन्ने उच्चार पासवणे अहियासे  
॥ १९ ॥ अणागाडे मझे उच्चार पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाडे  
दूरे उच्चार पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाडे आसन्ने पासवणे अहि  
यासे ॥ २२ ॥ अणागाडे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाडे दूरे  
पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ एथंमिला पन्निजेहण पाठकहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै थंमिला कहां २ करणा सोकहे है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ६ थंमिला सय्याकै दोनुं तरफ दहणें पासे ( ३ ) वामपासे ( ३ )  
पन्निजे है ॥ ६ थंमिला दरवज्जेके भीतर पासे दाहिणें ३ वामें ३ पन्निजे है ॥

६ थंमिला दरवळे के बाहर दोनुं पासे पमिले है ॥ ६ थंमिला ( जहां )  
 उच्चार प्रश्रवणकी जगा दोनुं तरफ पमिले है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति २४ थंमिला पमि लेहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ पाक्षिकादिक पडिक्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ ❀ ॥ ( तिहां ) प्रथम बंदिचू सूत्र पर्यंत । देवमिक पमिकमी । १ ।  
 खमासमण देई । देवसी आलोइयं पमिकंता । इठा० सं० ज० । पक्षी मुहप  
 ती पमिलेहुं । ( चौमासै ) चौमासी० मुह० ( संवठरीयें ) संवठरी मुहपती  
 पमिलेहुं । पठै ( गुरुकहै पमिलेह ) पठै इठं कहै । दूजी खमासणदेई ।  
 मुहपती पमिलेही । वांदणाद्यै । तिहां ( पक्खीमें ) पक्खी वइकंतो ।  
 ( चौमासी में ) चौमासी वइकंतो । ( संवठरीमें ) संवठरी वइकंतो । इम  
 यथा योग्य कहै । ( पठै गुरु कहै ) पुण्यवंतो देवसीनें स्थानिके पाक्खिक  
 ( चनुमासिक ) संवठरिक जणज्यो । ठीक जयणा करज्यो । मधुर स्वरै  
 पमिकमज्यो । खासै सो विवरा सुद्ध खासज्यो । मांजलमें सावचेत रहज्यो  
 पठै सगलाही कहै । तहत्ति । पठै ऊठी । इठाका० सं० ज० । संबुद्धा  
 खामणेणं । अब्बुठिनंवि अस्सितर । पक्खियं ( ३ ) खामेणं ( गुरु कहै खामेह )  
 पठै मस्तकै अंजली करतो थको । इठं खामेमि पक्खियं ( ३ ) कही ।  
 गोमालीयें वैसी । मस्तक नमावी । दक्षिण हाथ गुरु साहमो करी  
 मुहपती मुखें देई । ( पक्खियें ) पनरसन्हं दिवसाणं । पनरसन्हं राईणं ।  
 जंकिंचि अप्पत्तियं । ( इत्यादि सर्वपाठ कहै ) चनुमासे ॥ घणएहं मासाणं ।  
 अठएहं पक्खाणं । वीसोत्तरसो राई दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं  
 ( इत्यादि कहै ) संवठरीयें ॥ पुवाल सएहं मासाणं । चोवीसएहं पक्खा  
 णं । तिन्निमय सठि राई दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं ( इत्यादिकहै )  
 तिवारे ( गुरु पिण मिठामि पुक्कमं कहै ) । तिहां दोय साधु उचरता हुवै  
 ( तो ) पाखियें ( ३ ) चौमासीयें ( ५ ) संवठरीयें ( ७ ) साधुनें खमावै । पठै  
 ऊठी । अवग्रह मांहि रह्यो कहै । इठाका० सं० ज० । पक्खियं आलो  
 वूं ( गुरु कहै आलोएह ) पठै इठं आलोएमि । जोमे पक्खियं ( ३ ) अइ  
 यारो कउ ( इत्यादि सूत्र जणी ) संहैपै ( अथवा ) विस्तारें । पाखी

चौमासी । संवहरी । अतीचार आलोवै । पडै । सवस्सवि पक्खिय ( ३ )  
 इत्यादि । इत्थाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहै । तिवारै ( गुरु कहै ) चउत्थे  
 ण पक्कमह ( चौमासै ) ठठेण पक्कमह ( संवहरीयें ) । अट्टमेण पक्क  
 मह । इत्थं । तस्समिन्नामि डुकडं ( कही ) आदशावर्त्त वांदणादेवै ।  
 पडै । इत्था कारेण संदिस्सह जगवन् । देवसियं आलोडयं पक्किंता ( १ )  
 पत्तेय खामणेणं । अब्बुठिन्मि अज्झितर । पक्खियं । ( ३ ) खामेजं । ( गुरु  
 कहै खा० ) पडै । इत्थंखामेमि पक्खियं । ३ ( इत्यादि पाठ ) सर्व पूर्वे  
 कहो । तिम कही । मिन्नामि डुकमं देई । खमावै । पडै । वे वांदणादेई ।  
 जगवन् देवसियं आलोडयं पक्किंता । पक्खियं ( ३ ) पक्कमावेह । ( गुरु  
 कहै सम्मं पक्कमह ) । पडै इत्थंकही । करेमि जंते सामाड्यं । इत्थामि  
 ठामि काउसगं । जोमे पक्खिउ ( ३ ) ( इत्यादि कही ) तस्सुत्तरी० अन्न  
 त्थू० कही । काउमग्ग करै ) गुरु पाखी सूत्र कहै । ते सांजलै । अनें  
 गुरु थकी जूदा पक्कमता हुवै ( तो ) एक श्रावक खमासमण देई । कहै  
 । जगवन सूत्र जणुं । ( गुरु० जणह ) । इसो वचन मनमें धारी ।  
 ( इत्थं कही । ऊजो थको । हाथ जोभी । मुहपत्ती मुखें देई । तीन नवकार  
 कही । मधुर स्वरै सूत्रार्थ मनमें चितवतो । ( वंदितू सूत्र गुणें ) बीजाश्रा  
 वक । करेमि जंते० । इत्थामि ठाउं काउसगं । तस्सुत्तरी ( अन्नत्थू कही )  
 काउसगमें रह्या सुणें ( सूत्रप्रांते ) णमो अरिहंताणं कही ( काउसगपारी )  
 ऊजा थका तीन नवकार गुणी ( बैसै ) पडै तीन नवकार ( ३ ) करे  
 मि जंते कही । इत्थामि पक्कामिउं । जो मे पक्खिउ ( ३ ) इत्यादि कही ।  
 ( वंदितू सूत्र गुणें ) पक्कमे देवसियं सबं । ( एहनें ठिकाणें ) पक्कमे  
 पक्खियं । चौमासीयं । संवहरीयं ( सबं कहै ) पडै ऊजो । अब्बुठिन्मि  
 आराहणाए ( इत्यादि परीपूर्ण जणी ) खमासमण देई । इत्था० सं० ज० ।  
 मूल गुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं । काउमग्ग करूं ( गुरु कहै  
 करेह ( पडै इत्थं कही । करेमि जंते सामा० । इत्थामि ठाउं काउसगं ।  
 तस्सु० । अन्नत्थू । ( इत्यादि कही ) पाखियें ( १२ ) लोगस्स । चौमासे ।  
 ( २० ) लोगस्स । संवहरीयें ( ४० ) लोगस्सनो काउसगग करै । एक नव

कार नूपर । काउसग्ग करी । ( पारी ) लोगस्स कहै । बैसी । मुहपत्ती  
 पफिलेही । बे वांदणा देई । इच्चा० सं० ज्ञ० । समाप्ति खामणेणं । अ  
 व्वुद्धिजंमि अङ्घ्रितर । पक्खियं । ( ३ ) खामेजं ( गुरु कहै खामेह ) पढै ।  
 इच्चं खामेमि पक्खियं । ( इत्यादि पाठ ) पूर्वे कह्यो । तिम कहै । ( पढै )  
 इच्चाका० सं० ज्ञ० । पाखी ( ३ ) खामणा खामूं ( गुरु कहै ) । पुण्यवंतो  
 च्यारवेर खमासमण देई । तीन २ नवकार कही । पाखी ( ३ ) समाप्त खा  
 मणा खामह । पढै । श्रावक एक खमासमण देई । मस्तक नींचो नमावी  
 तीन नवकार गुणें । इम च्यार वार कहे । पढै । ( गुरु कहै नित्यारग पार  
 गाहोह ( पढै । श्रावक कहै । इच्चं । इच्चांमो अणुसंघिं ( कही ) ( गुरु कहै )  
 पुण्यवंतो । पाखीनें लेखै । एक उपवास । ( अथवा ) दोय आंविज ) अ  
 थवा ) तीन नीवी । ( अथवा ) च्यार एकासणां । ( अथवा ) बेहज्जार सि  
 ज्जाय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्थानकै देवसिक ज  
 णिज्यो ॥ इम चौमासै एसर्व दुगणो कहणो । संवत्तरीयें त्रिगुणो कहणो  
 पढै जिणें तपकीधो हुवै । ते पइठियं कहै । न कीधो हुवै । ते कहै त  
 हत्ति । पढै बे वांदणां देई । अव्वुद्धिजंमि अङ्घ्रितर । देवसियं खामेमि ।  
 इत्यादि कहै ) पढै बे वांदणा देई । आयरिय उवझाए० तीन गाथा कहै ।  
 इम आगै सर्व विधि । देव सिक पक्कमणानी करै । पिण इतरो विशेष  
 है । श्रुत देवतानो काउसग्ग करी । स्तुति कहै । पीढे जवण देवयाए करे  
 मि काउसग्गं ( इत्यादि विधें ) जवन देवतानों काउसग्ग करी । स्तुतिकही ।  
 क्षेत्र देवतानो काउसग्ग करै । ( तथा ) तीने पर्वे । वरुो स्तवन अजित शां  
 ति कहणो । लघुस्तवन । उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो । तथा पक्कमणो  
 पूरो हुवां । पढै । एक श्रावक गुर्वाझायें । नमोर्द्धत्तिष्ठा कही । शांति  
 स्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । बीजा सर्वसुणें । जिणानें रात्री पोसह न  
 हुवै ( ते ) पोसह सामायिक पारी सांजलै ॥ ❀ ॥  
 इति पाहिकादि ( ३ ) पडिक्कमणविधिः कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ रात्री प्रतिक्रमण मांहें ठम्मासी तपचिंतन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो ठम्मासी तपहै ॥ रे जीव

ते करि सके । न करिसकुं । इम एक दिन उंओ । करि सके ( न करिसकुं )  
 इम एकेक दिन उंओ करतां । उगुण तीस दिन ऊणा ढम्मास हुवै । तिहां  
 सूधी पूढियै । पढै । ( पंचमासी ) करि सके । न करिसकुं । एक दिन ऊ  
 णी पंचमासी करि सके ( न करिसकुं ) । इम एकेक दिन उंओ करतां  
 उगुण तीस दिन ऊणी । पंचमासी लगें पूढियै । पढै । ( चउमासी ) एक  
 दिन ऊणी । दोय दिन ऊणी । इमहीज त्रिमासी । दुमासी । यावत्  
 ( एक मास करि सके ) । न करि सकुं । पढै । एक दिन ऊणो कियां । सो  
 लह दिननो चौत्रीसम तप थाइ । ते करि सके ( न करिसकुं ) । पढै । वे वे  
 जात घटावतां पूढियै । ( इम ) वत्रीसम करि सके ( न करिसकुं ) । ( इम )  
 त्रीसम । अठ्ठा वीसम । ढावीसम । चौवीसम । बावीसम । बीसम । अठार  
 सम । शोलसम । चौदसम । बारसम । दशम । अठम । ढढ । चउत्थ  
 तप करि सके । ( न करि सकुं ) । ( इम ) आंविज । निवी । एकासणो  
 पुंरिमट्ट । पोरसी । नवकारसी । ( ताई ) जो पच्चक्खाण करवो हुवै ।  
 ( सो ) मनमें धारी । काजसग्ग पारे ॥ इति ढम्मासी तप चितवन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रशस्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जुहा ॥ श्रीजिन चंद सुरिंद । नितुराजत गढ राजान । वाचक अ  
 मृत धर्म गणि । सीस कृमा कल्याण ॥ १ ॥ सय अढार अरुतीस माफि ।  
 जेशलमेरु सुथान । श्रावक विधि संग्रह कियो । मूल ग्रंथ अनुमान ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ आचार ग्रंथनामः ॥ ❀ ॥

श्रीजिनप्रज्ञसूरि कृत विधि प्रपा ॥ १ ॥ सरतर मंजुलाचार्य तरुण प्रज्ञ सूरि  
 कृत पद्मावश्यक वालाबोधं ॥ २ ॥ सामाचारी शतकं ॥ ३ ॥ वंदारुद्धति  
 ॥ ४ ॥ प्रवचन सारोद्धारवृत्ति ॥ ५ ॥ आचार दिनकरं ॥ ६ ॥ श्रीजिन प  
 तिसूरि सामाचारी पत्रं ॥ ७ ॥ शिवनिधानो पाध्याय कृत लघु विधि प्रपा  
 दि ॥ ८ ॥ ग्रंथाश्च विलोक्य अयं विधि प्रकाशो निर्मित ॥ ❀ ॥

इति श्रावक विधि प्रकाशः परि पूर्णतामगात् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ \* ॥ अथ साधू ( अने ) श्रावक । दोनुं टंक पन्तिकमणो  
करे । तेहनो हेतु ( नांव ) सुतलब लिखतेहें ॥ \* ॥

॥ \* ॥ तिहां पापसेती निवर्त्तन होणो ( ते ) पडिकमणो कहिये ॥

तथा ॥ ग्यानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्या  
चार ५ ( एपंच आचार सुधि निमित्तें ) श्रीगुरु साखें । अनें गुरु  
अज्ञावे । थापनाचार्य शाखे पन्तिकमणो करवो ( तेहना ठ अध्ययनठै )  
सामाइयं १ । चउवीसत्थउ २ । वंदणयं ३ । पडिकमाणं ४ । कानुसग्गो ५ ।  
पच्चक्खाण ६ मिति ( तिहां ) सामायिकें करी चारित्राचारनी सुधियायै ।  
चउवीसत्थें करी दर्शना चारनी सुधता थायै । वांदणें करी ग्यानादिक आ  
चार सुध थायै । पन्तिकमाणें करी ग्यानादिकना अतीचारानी सुधि थायै ।  
अनें पन्तिकमणाथी जे अतीचार शुधनथाइ ( ते ) कानुसग्गें शुधथाइ ।  
पच्चक्खाणें करी तपाचार शुधथाइ । अनें वीर्याचार इणें ठएकरी शुध थाइ  
॥ हिवै देव वांदनादि अनुक्रमें पन्तिकमणो थापै । ( तेहना हेतु कहै ) ॥  
सुध पन्तिकमणो मोहनो कारण ठे । ते मंगल विना निर्विघ्नपणें प्रमाण नचढे ।  
तिसवास्तै धुरें अवश्य मंगल करवो । तिहां मंगल तो अनेक प्रकारनो है ।  
पिण श्रीदेव गुरु वंदन सरीखो बीजो मंगल कोई नही ( तेमाटे ) प्रथम  
नमस्कार शक्रस्तव पूर्वक च्यारे थुईए देववांदी । च्यारे खमासमाणे गुरूवां  
दे ॥ लोकमें पिण पहिलां राजानें नमस्कार करी ( पठै ) प्रधान प्रमुखनें  
नमें । इहां राजा समान तीर्थकर ( अने ) प्रधानादिक समान आचार्या  
दिक ठे ( इम मंगल कर ) पन्तिकमाणानें धुरे समस्त अतीचारनो बीजक  
( सबस्सवि देवसिय ) इत्यादि कही मिठामि डुकरुं देवै । पठैं ज्ञानादिक  
मांहे । चारित्रना अधिकपणा हुंती । प्रथम चारित्राचार शुधि निमित्तें ।  
करेमि जंते सामाइयं ( इत्यादि तीन सूत्र जणें ) तिहां समता परिणामें  
सर्व धर्म कार्यकरवा ( ते माटें ) प्रथम सामायक आवश्यक कह्यो ॥ \* ॥  
पठै प्रजातनी पन्तिकेहण थी मांसी । दिवसना कीधा अतीचार गुरु आगै  
आलोइवाठै । ते धारयां विना जली रीतें आलोवाइ नही ( ते माटें ) कानुसग्ग  
करै । अतीचार मनमें धारै । पठै लोगस्स कहै ( जे माटे ) एसामायिका



दिक सुद्ध मार्ग ( इहां ) रिषजादि चउवीस तीर्थकरे आपसेव्यो ( अने ) न  
व्य जीवनें उपदिश्यो । ते कारणें । बीजै आवश्यक के चउवीस जगवंतनी स्त  
वना करवी कही ॥ ❀ ॥ पढे धर्ममाहें विनयना प्रधानपणा हुंती । गुरुनें  
वांदणा देई । अतीचार आलोइवा । अनें वांदणाढे । तेशरीर सुद्ध विना  
नदेणी ( ते माटे ) प्रथम सुहपत्ती पम्लेही । सुद्धकरी । तिणथी काया पम्नि  
लेहै ॥ तीजै आवश्यक के वांदणा देवी कही ॥ ❀ ॥ पढे गुरु आगै । अती  
चार आलोई प्रायश्चित्त मांगै ( गुरु कहै पम्निमह ) ( जे माटे ) कित  
ना इक अतीचार तो आलोयां थी सुद्ध थया । अनें कितना इक न थया  
( ते सुद्ध करवानो ) चोथो आवश्यक पम्निमणो कह्यो ॥ ❀ ॥ तिहां  
उत्तम कार्य सर्व नवकार पूर्वक करवा ( ते माटे ) प्रथम नवकार कहै । अ  
नें समजाव धारी पम्निमहुं ( ते माटे ) पढे सामायिक सूत्र कहै । तिवार  
पढे साधु श्रावक आप आपणा अतीचार पम्निमवा निमित्तें सूत्रजणें । पढे  
समस्त अतीचार रूप जार निवर्तवे करी । हलको हुवो थको । ऊजो  
थई सूत्र पूर्ण करै । इम अतीचार पम्निमी । श्रीगुरुनें विषै पोतानो कीधो  
कोई अपराध खमाइवा निमित्तें । वांदणा देवै । पढे गुरु प्रमुखनें खमावी  
काउसगग निमित्तें । फेर वांदणा देवै । ए वांदणा गुरुनें अपणो आधीन  
पणो जणाइवा निमित्तें पिण जाणवी । पढे ( श्रावक ) आयरिय उवजाए  
( इत्यादी तीन गाथा जणें ) हिवे आलोयण पम्निमकणा थी शुद्ध न थया  
( जे ) चारित्रादिकना मोटा अतीचार ( ते ) शुद्ध करवाने अर्थे पांचमो आ  
वश्यक काउसगग करै ॥ ❀ ॥ तिहां । प्रथम सामायिकादि तीन सूत्र ज  
णी । चारित्राचार शुद्धि निमित्तें दोइ लोगस्स चितवै । इहां तीजी वार  
वले सामायिक उच्चारण कीधो ( ते ) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें की  
धी सफल थाइ । ए अर्थे । पढे ज्ञान थी समकित अधिको है ( ते माटे )  
दर्शनाचार शुद्धि निमित्तें लोगस्स कही । सबलोए ( इत्यादि ) सूत्र जणी । एक  
लोगस्सनो काउसगग करै । पढे श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर  
दीवट्टे ( कही ) सुयस्स जगवउ ( इत्यादि जणी ) बीजो एक लोगस्सनो  
काउसगग करै ( इहां ) प्रथम काउसगग दोय लोगस्सनो कह्यो । ते ज्ञाना



दिक् थी चारित्रनो अधिकपणो ठे ( ते माटे ) बली । ग्यानादिकनी अपेक्षा  
 ये, चारित्रनें अतीचार घणा लागै । तेपिण कारण जाणवो । पढै ।  
 ज्ञान । दर्शन । चारित्राचार । निस्तीचार पणें आचरवाना फलचूत  
 श्रीसिद्ध जगवान, तिणारी स्तवना । सिद्धाणें बुद्धाणें ( इत्यादि जणें )  
 पढै । हिवणां उपगारी श्री महावीर स्वामीठै ( ते माटे ) जो देवाण  
 विदेवो ( इत्यादि तेहुंनी स्तवना करै ) पढै महा तीर्थपणा हुंती । उज्जित  
 शेल सिहरे ( इत्यादि तीर्थ स्तवना करै ) इम । चारित्र, दर्शन, ज्ञानाचार  
 सुद्ध करी । समस्त धर्म क्रियानो श्रुतज्ञान कारणठै ( तेमाटें ) श्रुति समृ  
 धि निमित्तें । श्रुत देवतानों काजसग्न करी स्तुति कहै । पढै जेहना क्षेत्र  
 में रहियै । क्षेत्र देवतानों काजसग्न करी । स्तुति कहै । ( सिद्धांत माहें )  
 तीजै ब्रतें निरंतर अवग्रह याचना रूप जावना कहीठै । ते साचवणें नि  
 मित्तें ए काजसग्न संजवै है । ए दोनुं काजसग्न पूर्वधारीये आचरथा ठै ।  
 ( आवश्यक वृत्ति, चूर्णि, ज्ञाप्यादिक माहे ) श्रीहरिचद्र सूरि प्रमुख मोटे  
 आचार्ये कहाठै ( ते माटें ) प्रमाण है । पढै काजसग्न थी । केई अती  
 चार सुद्ध न थया ते सुद्धकरवानें । ठठो आवश्यक पचक्खाण कह्यो ॥ ❀ ॥  
 तेपूर्वे कीयो होय ( तो ) इहां तेहनें ठामें । मंगलीक निमित्तें । नवकार एक  
 कही । सुहपत्ती ( अने ) काया पमिलेही । श्रीगुरुनें वांदणादेई । इठामो  
 अणुसठि कहै । तुह्यारी आझायें में पम्किमणो कीधो । एहबुं गुरुनें जणा  
 विवा निमित्तें । ए वांदणा कहा । इतरे पम्किमणो परिपूर्णथयो ॥ ❀ ॥  
 ( हिवै ) निर्विघ्नपणें पम्किमणो पूर्ण हुवा थकी घणो हर्ष ऊपनो । तिणें  
 करी । गुरु एक स्तुति कहां थकां । सर्व साधु श्रावक वर्धमान स्वरे । तीन  
 स्तुति कहै ( इहां गुरुना वचननें अंतें ) शिष्यादिक । नमो खमासमणा  
 णं ( एहवो गुरुनें नमस्कार कहै ) ते गुरु वचननो बहुमान रूपठे । पढै  
 शक्रस्तव कही । आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्म क्रिया श्रीदेवगुरु जक्ति  
 पूर्वक सफल थायै ( ते माटें ) पम्किमणानें प्रारंजे ( तथा ) अंतें । देव गुरु  
 वंदन कह्यो ॥ ❀ ॥ हिवै पम्किमणां माहें । चारित्रादि सुद्धि निमित्तें । पूर्वे  
 काजसग्न कीधा ठे । तोपिण बली विशेष शुद्धि निमित्तें । ज्यार लोगस्त

नो काउसग करी । मंगल निमित्तें लोगस कहै । जे साधु श्रावक आत्मा  
थीहुवै । ते ए हेतु समजी । विधि पूर्वक उपयोग सुं पन्किमणो करै ।  
ते लीलायें जवसमुद्र तरै । सिद्धि संपदा वरै ॥ ❀ ॥ आवश्यक वृत्त्यादेः । प्र  
ति क्रमण हेतवः । निबन्धा जापयोद्धृत्य । साधु श्राद्धादि हेतवे ॥ १ ॥ वा  
चकामृत धर्माणां । शिष्येणात्म हितेष्ठना । कृमाकल्याण गणिना । वीका  
नेर पुरे सुदा ॥ २ ॥ इति प्रतिक्रमण हेतवः संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधरजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ जयजय त्रिजुवन आदिनाथ पंचमगति गामी ॥ जयजय करुणा  
शांतिदांत प्रविजन हितकामी ॥ जयजय इंद नरिंदवंद सेवत सिरनामी ।  
जयजय अतिशय नंतवंत अंतर गति जामी ॥ १ ॥ पूर्व विदेह विराजताए ।  
श्री सीमंधर स्वामि । त्रिकरण सुध त्रिहुंकालमें । नित प्रति करूं  
प्रणाम ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधरजिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ पूर्वविदेह पुखलावती । जयोजगापतीरे । श्रीसीमंधरस्वामि प्रहसमनित  
नमुरे ॥ १ ॥ जमत्रय जाव प्रकाशता । प्रविप्रतिवो धतारे । उपगारी अरिहंत  
॥ प्रह० ॥ २ ॥ धन्यनयरी धन्यते नरा । धन्यते धरारे ॥ विचरै जिहां जिन  
राज । प्र० ॥ ३ ॥ धन्य दिवश धन्य तेवनी । देखसुं आंखनीरे । प्रक्तिवद्वल  
प्रगवंत । प्रह० ॥ ४ ॥ महरनिजर अवधारजो । पतित उधारजोरे । जिनहरख  
घणें ससनेह । प्रहसम नितन सुरे ॥ ५ ॥ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिवा । वीनतनी अवधारलालरे । परम पुरुष परमेसरू ।  
आतम परम आधारलालरे० ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवल ग्यान दिवाकरू । जोगे  
सादिअनंत लालरे जासक लोकालोकको । ग्यायक गेयअनंतलालरे ॥ श्री०  
॥ २ ॥ इंद्रचंद्रषकीसरू । सुरनर रहे कर जोरु लालरे । पदपंकज सेवे सदा ।  
अलहुंतें इककोरु लालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजरवसे । मुऊ मन  
इंस नितमेवलालरे । चरणसरण मोहि आसरो । जवर देवाधिदेवलालरे ॥

गुणवंत । समुद्रविजय शिवा देवीमात मति सहज उदार । सुंदर स्याम सरीर  
जोति सोहे सुखकार ॥ १ ॥ गढगिरनारइजिणें लह्योए । अमृत समतस बाण  
ध्यानधरंता एहनो । प्रगटे परम कल्याण ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

ॐ श्रीपार्श्वनाथाय । विश्वचिंतामणीयते । उँधरणेंद्र वैरोढ्या । पद्मादेवी  
युतायते ॥ १ ॥ सिताष्ट दलमध्यस्थ । वक्ष पद्मासनायते । उँअसिआजसाँश्री ।  
लब्धा लक्ष्मीं नमोनमः ॥ २ ॥ उँदिकृपाला प्रहाधीशं । यद्गुणीयद्गु सेविता ।  
प्रहायुता हूइजया । ह्वापरा जितयान्वितः ॥ ३ ॥ शांतितुष्टि महापुष्टि ।  
धृति कीर्त्ति विधायिने । विमुवाला नलवेत्ताला । सर्वाधि व्याधि नाशने ॥ ४ ॥  
श्रीशंखेश्वर मंरुण । पार्श्वजिन प्रणतिकल्प तरुकल्प । चूरयदृष्ट व्रातं । पूरय  
मे बांढितं नाथः ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ अग्निनव मंगल माला । करणं हरणं दुरंति दुरितस्य । श्री पार्श्वनाथ  
चरणं । प्रतिपन्नो प्रावतः सरणं ॥ १ ॥ आयासेन विना लक्ष्मी । विनाहेपेण  
वैज्रवं । विनै वत्तपसा सिद्धि । जपतां पार्श्वनामते ॥ २ ॥ पार्श्वजिनशा सनंते ।  
निवरु महामोह तिमर विध्वंसि । महिरत्न दीपकल्पं । तनोतु तेजो विवेकाख्यं  
॥ ३ ॥ तुरेषां चरणो जिह्वे । कुरुस्तोत्रं चरणोनमः । हर्षासु सुचितां दृष्टी ।  
आएषु परमेश्वरः ॥ ४ ॥ जवे जवांतरे वापि । दुःखेवा यदिवा सुखे । पार्श्व  
ध्यानेनमयांतु । वासुराः पुन्य ज्ञासुराः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ अमर तरु कामधेनु । चिंता मणि काम कुंज माईया । तुहसामि पास  
सेवय । गयाईं सबेवि दासत्तं ॥ १ ॥ खंनिज्जति जगंदर । ज्वर काश शास  
शूलतन निवहा । सिरि सामल पास पहु । तुह नाम पर्यं पवणेण ॥ २ ॥ जय  
धरणेंदनमंसिअ । पनुमावइ पमुह सेविअ सुपास । उँक्षी अँक्षी ममसिद्धि  
कुणसु पास ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ उँममहरजं जरं । ममहरजं विडुरं मरं । हरजं चोरारि मारिवाही ।

हरजं ममं पास तित्थयरो ॥ १ ॥ एगंतरजरं निच्चजरं । सीअजरं उएहजरं वेला  
जरं । तह तइयजरं चउत्थजरं । हरजं ममं पास तित्थयरो ॥ २ ॥ जिण  
दत्ताणा पाळण परस्ससंधस्स विहि समुग्गस्स । आरोग्ग सोहग्गं अपवग्गं ।  
कुणउपास जिणो ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

वंदुं जगदाधार सार सिवसंपति कारण । जन्म जरा मरणादिरूप ऋवताप  
निवारण । श्री सिद्धार्थ तात मात त्रिशला तनजात । सोवन वरण सरीरवीर  
त्रिजुवन विह्वात ॥ १ ॥ अमृत रूपे राजताए । चउवीसम जिनजाण ।  
दूमा प्रमुख कल्याण गुण आपोकरिसुपसाय ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ वीरस्सर्व सुरासुरेज महितो वीरं बुधा संश्रिताः । वीरेणा जिहतस्स  
कर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरास्तीर्थमिदं प्रवर्त्तमतुलं वीरस्य घोरं  
तपो । श्री वीरे धृतिकीर्ति कांति निचयः श्री वीरजद्रंदिशः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ तप गह्व विशेष विधि संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचिदिअ ॥ ❀ ॥

॥ पंचिदिअ संवरणो । तह नवविह वंजचेर सुत्तिधरो । चउविह कसाय  
सुको । इअ अठारस गुणोहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह वयजुत्तो । पंचविहायार  
पालण समत्थो । पंच समितं तिगुत्तो । ठत्तीसगुणो गुरु मज्ज ॥ २ ॥ इति ॥

❀ ॥ अथ खमासमण ॥ ❀

॥ इच्चामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीही आए मत्थएण  
वंदामि ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सुगुरुनं शातासुख पृष्ठा ॥

॥ इठकार सुहराइ सुहदेवसी सुखतप शरीर निरावाध सुख संजम जात्रा  
निर्वहोजोजी स्वामी शाताजेजी ज्ञात पाणीनो लाज देजोजी ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक पारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ सामाडय वयजुत्तो । जावमणे होइ नियम संजुत्तो । णिन्नइ असुहं

कम्मं । सामाइअ जति आवारा ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए । समणो इव  
सावत्तं हवइ जह्वा । ए ए ए कारणेणं । बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामा  
यिक विधिं लीधुं विधिं पारित्तं । विधिकरतां जे कोइ अविधि हुवो होय । ते  
सविहुं मन बचन कायार्ये करी मिठामि दुक्कमं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगचिन्तामणिचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ इठाकारेण सं० । चैत्यवंदन करुं ॥ इत्थं ॥ जगचिन्तामणि जगनाह ।  
जगगुरु जगररकण । जगबंधव जगसत्थवाह । जगज्जाव विअरकण ॥ १ ॥  
अठावय संठविअ रूव । कम्मठ विणासण । चत्तवीसंपि जिनवर जयंतु अप्पमि  
हय सासण ॥ १ ॥ कम्मचूमिहिं कम्मचूमिहिं । पढमसंवयणि उक्कोसय सत्तरिसय ।  
जिणवराण विहरंतजअइ । नवकोडिहिं केवजिण । कोमि सहस्स नवसाहु  
गम्मइ । संपइ जिणवर वीसमुणि । विहुं कोमिहिं वरणाण । समणह कोमी  
सहसहुअ । थुणिजअ निच्चविहाण ॥ २ ॥ जयउसामी जयउसामी रिसह  
सत्तुंजि । उज्जित पहुनेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरि मंरुण । चरु अत्तहिं  
मुणिसुबय । महुरि पास दुहदुरिअ खंरुण ॥ अवर विदेहिं तिठयर । चिहुं  
दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपइअ वंठुं जिण सबेवि ॥ ३ ॥ सत्ता  
णवइ सहस्सा । लरकाढप्पन्न अठकोडीउ । वत्तीस वासिआइं । तिअजोए  
चेइए वंदे ॥ ५ ॥ पनरमकोडि सयाइं । कोमी बायाललरक अडवन्ना । वत्तीस  
सहस असिआइं । सासय विंवाइं पणमामि ॥ ५ ॥ जंकिं चिनामतित्थं कहके  
नमोत्थुणं कहे ॥ जावंति चेइयाइं । जावंति केविसाहू ॥ नमोर्द्धतसिद्धा० ॥  
ज्वमग्गहरं पासं ॥ कहकै जावपूर्वक जो स्तवन बोलना होय सो बोलके दोनूं  
हाथ जोरु मस्तक चढाय जयवीयराय संपूर्ण कहै ॥

॥ ❀ ॥ अथ जयवीअराय ॥ ❀ ॥

॥ जयवीअराय जगगुरु । होउममं तुह पज्जावत्तं जयवं । जवनिवेत्त ।  
मग्गा । णुसारिया इठ फल सिद्धि ॥ १ ॥ लोग विरुद्धात्त । गुरु जण पूआ  
परत्थं करणंच । सुह गुरु जो गोतवयण सेवणा आज्ञव मखंरु ॥ २ ॥ वारि  
जइ जइ विनिआ । एबंधणं वीअराय तुह समए । तहवि ममहुज्जा सेवा  
जवे जवे तुह चलाणां ॥ ३ ॥ दुक्क रक्कत्तं कम्म रक्कत्तं । समाहि मरणंच

बौहिला भोत्र ॥ संपद्मज महएत्रं । तुहनाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व  
मंगल मांगल्यं । सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणं जैनं जयति  
शासनम् ॥ ५ ॥ पीठे ऊजाहोके ॥ अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदण वत्तिआए ।  
अन्नत्थू कहके एक नवकारको कावसग्ग करके स्तुतिकहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कल्लाण कंदं स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं । संतिंतवो नेमिजिणं मुण्णिंदं । पासं पयासं  
सुगणि कठाणं ॥ जत्तीय वंदे मिरि वद्ध माणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्वपारं  
पत्ता सिवं दिंतु सुइकसारं । सबे जिणंदा सुर विंद वंदा । कल्लाण बल्लीण  
विशाल कंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं । पणा मियासे स कुवाडदप्पं ।  
मयांजिणाणं सरणं बुहाणं । नमामि निच्चंति जगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदुगो  
हीरुत्तसार वन्ना । सरोज हत्थाकमले निसन्ना । वाए सिरी पुठ्ठय वग्गहन्ना ।  
सुहायसा अहसया पसत्था ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विशाल लोचन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल लोचन दलं । प्रोद्यहंताशुकेशरं । प्रातर्वीर जिनेन्द्रस्य  
सुख पद्मं पुनातुवः ॥ १ ॥ येषा मज्जिषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्ष जरात् सुखं  
सुंद्राः । तृणमपि गणयन्तिनैव नाकं । प्रातःसंतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥  
कलंक निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं । कुतर्क राहु असनं सदोदयं ॥ अपूर्व चन्द्र जिन  
चन्द्र आपितं । दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगवानादि वंदन ॥ ❀ ॥

॥ जगवानहं ॥ आचार्यहं ॥ उपाध्यायहं ॥ सर्वसाधुहं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अतीचारनीत्ताया ॥ ❀ ॥

॥ नाणंमि दंसणं मिय । चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि । आयरणं आ-  
यारो । इअएसो पंचहा जणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहाणे  
तहय निन्हवणे । वंजण अत्य तडुअए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥  
निस्संकिअनिकंखिअ । निव्वितिगिठा अमूढ दिछीअ । उववूह थिरीकरणे ।  
वच्छत्त पञ्जावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगच्छतो । पंचहिं समइहिं तिहिं

गुत्तीहिं । एसचरित्ता यारो । अछविहो होइ नायबो ॥ ४ ॥ वारस विहंमि  
 वितवे । अझितर बाहिरे कुशलदिष्टे । अगिलाइ अणाजीवी । नायबो  
 सोतवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मूणोअरिया । वित्तीसंखेवणं रसचाओ । काय  
 किलेसो संलीणआय । वझोतवोहोइ ॥ ६ ॥ पायवित्तंविणउ । वेयावच्चं तहेव  
 सिझोओ । जाणं ऊस्सग्गोविय । अझितरओ तवोहोइ ॥ ७ ॥ अणगूहिय  
 बलविरिओ । परिकमइ जोजहुत्तमाऊत्तो । जुंजइ अजहाथामं । नायबो  
 वीरि आयारो ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सुत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ सुअ देवया जगवई नाणा वरणी अकम्म संघायं । तेसिंखवेउ सययं ।  
 जेसिंसुअ सायरे जत्ती ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ खेत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ जीसे खित्तेसाहु । दंसणनाणेहि चरण सहिएहिं । साहंति मुरकमग्गं ।  
 सादेवी हरउ डुरिआइ ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अट्टाइजेसुमुनिवंदन ॥ ❀ ॥

॥ अट्टाइजेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्मचूमीसु ॥ जावंतकेविसाहु  
 रयहरण गुह्यपग्गिग्गहधारा ॥ पंच महवय धारा अछारस सहस्स सीलांगधारा ॥  
 अरक यायारचरित्ता, तेसवे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरकनक ॥ ❀ ॥

॥ वरकनक शंख विट्ठम । मरकत वन सन्निभं विगतमोहं । सप्ततिशतं  
 जिनानां । सर्वामर पूजितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पोसह पारवा गाथा ॥ ❀ ॥

॥ सागरचंदो कामो । चंदवर्गिसो सुदंसणोधन्नो । जेसिंपोसह पग्गिमा ।  
 अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा सुजसा आनंद कामदेवाय ।  
 जेसिंपसंसइ जयवं । दढवयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधेंलीधुंविधें पारिजं ।  
 विधिकरतां जे कोइ अविधिहुओहोइ । तेसविहुं मन बचन कायायेंकरी  
 मिठामिडुकमं ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जरहेसरनी सज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जरहेसर बाहुवली । अजय कुमारोअ ढंढण कुमारो ।  
सिरिओ अणियान्तो । अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिजदो । वयं  
ररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नोअ सुकोसल । पुंनरिओ केसि कर  
कंइ ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिजदोअ ।  
जदोअ दसन्नजदो । पसन्नचंदोअ जसजदो ॥ ३ ॥ जंबू पहु वंकचूलो । गय  
सुकमालो अवंति सुकुमालो । धनो इलाड पुत्तो । चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी  
॥ ४ ॥ अज्जागिरि अज्ज रक्खिअ । अज्ज सुहत्थी उदायगो मणगो । कालयस्सू  
रिसंबो । पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पजवो विन्हुकुमारो । अदकुमारो दढ  
प्पहारीअ । सिज्जंस कृगड्डुअ । सिज्जंजव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ  
महा सत्ता । दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जेसिं नाम ग्गहणे । पावपवंधा  
विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन बाला । मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।  
नमया सुंदरी सीया । नंदा जहा सुजहाय ॥ ८ ॥ राडमई रिसिदत्ता ।  
पनुमावई अंजणा सिरि देवी । जिठ सुजिठ मिगावई । पजावई चिह्णणा ।  
देवी ॥ ९ ॥ बंजी सुंदरी रुपिणी । रेवई कुंती मिवा जयंतीय । देवीई  
दोवई धारणी । कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पनुमावईय गोरी । गंधारी  
लप्पणा सुसीमाय । जंबूवई सच्चजाया । रुपिणी कन्हठ महिसीओ ॥  
॥ ११ ॥ जक्खाय जक्खदिन्ना । जूआ तह चैव जूअदिन्नाय । सेणा वेणा  
रेणा । जअणीओ थूलिजदस्स ॥ १२ ॥ उच्चाई महासईओ । जयंति  
अकलंक सील कलिआओ । अज्जावि वज्जाई जासिं । जस पडहो तिहुअणे  
मयले ॥ १३ ॥ इति सत्ता सतीओनी सिज्ञाय ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मन्हजिणाणं सिज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन्ह जिणाणं आणं । मिठं परिहरह धर सम्मत्तं । गविह  
आवस्सयंमि । उज्जुत्तो होई पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं । दाणं  
शीलं तवोअ जावोअ । सज्ञाय नमुकारो । परो वयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥  
जिणपूआ जिणथुणिणं । गुरुयुअ साहम्मिआण वत्तव्वं । ववहारस्सय  
सुधी । रहयत्ता तिथ्ययत्ताय ॥ ३ ॥ ज्वशम विवेक संवर । जासा समिई



ठज्जीव करुणाय । धम्मिअ जण संसग्गो । करणदमो चरिण परिणामो  
॥ ४ ॥ संघोवरी बहुमाणो । पुथ्थय लिहणं पप्पावणा तित्थे । सट्ठाण  
किच्च मेअं । निच्चं गुख्खएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड । जिनवरनामें मंगल कोरु ।  
पहेलें स्वर्गें लाख वत्तीश । जिनवर चइत्य नमुं निशिदीश ॥ १ ॥ बीजे  
लाख अठावीश कह्या तीजे बारलाख सर्देह्या । चौथे स्वर्गें अरु लाख धार ।  
पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ ठठें स्वर्गें सहस पचास । सातमें चालीश  
सहस प्रसाद । आठमें स्वर्गें ठ हज्जार । नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥  
अग्यार बारमें त्रणशे सार । नवत्रैवेयकें त्रणशे अठार । पांच अनुत्तर सर्वे  
मली । लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रैवीश सार ॥  
जिनवर जुंवन तणो अधिकार । लांबा शो जोजन विस्तार । पचास जुंचा  
बोहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी विंव परिणाम । सप्पासहित एक चैत्यें  
जाण । शो कोरु वावन कोरु संजाल । लाख चौराणुं सहस चौआल  
॥ ६ ॥ सातशे ऊपर साठ विशाल । सबी विंव प्रणमुं त्रण काल । सात  
कोरुनें बोहोत्तर लाख । जुवनपतीमां देवल जाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी  
विंव प्रमाण । एक एक चइत्यें संख्या जाण । तेरशे कोरु निव्याशी कोरु  
साठ लाख वंदूं करजोरु ॥ ८ ॥ वत्तीशैनें ओगणसाठ । तिर्गालोकमां चइ  
त्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हज्जार । त्रणशे बीश ते विंव जुहार ॥ ९ ॥  
व्यंतर योतिषीमां वली जेह । शाश्वता जिनवर वंदूं तेह । रिखज चंद्रानन  
वारिखेण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत सिखर वंदूं जिनबीश ।  
अष्टापद वंदूं चौबीश । विमलाचल नें गढ गिरनार । आवूनुपर जिनवर जुहा  
र ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारंगे श्रीअजित जुहार । अंतरीक  
वरकाणो पाश । जीरावलोनें थंजण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण  
जेह । जिनवर चैत्य नमुं गुण गेह । विहरमान वंदूं जिन बीश । सिद्ध  
अनंत नमुं निशिदीश ॥ १३ ॥ अढी घ्रीपमां जे अणगार । अठार सहस  
शीलांगना धार । पंच महाव्रत मुमती सार । पाले पत्तावे पंचाचार ॥ १४ ॥

बाह्य अप्रितर तप उज्ज्वाल । ते भुनि वंदूं गुणमणि माल । नित नित उठी  
कीर्त्ति करूं । जीव कहे जव सायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकलार्हत्यतिष्ठान । मधिष्ठानं शिव श्रियः । चूर्नुवः स्वस्वयीशान ।  
मार्हत्यं प्रणिदग्धहे ॥ १ ॥ नामाकृति द्रव्यजावेः । पुनत खिजगज्जानं । हेत्रे  
कालेच सर्वस्मि । नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं  
निःपरिग्रह । मादिमं तीर्थनार्थच । ऋषजस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हत मजितं  
विश्व । कमलाकर जास्करं । अम्लान केवला दर्श । संक्रांत जगत् स्तुवे ॥ ४ ॥  
विश्व जव्य जनाराम । कुल्या तुल्या जयंतु ताः देशना समये वाचः ।  
श्रीसंजव जगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांत मतांजोधि । समुद्धासन चंद्रमाः ।  
दद्या दमंद मानंदं । जगवान् जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरोट शाणाग्रो । तेजितां  
झि नखावलिः । जगवान् सुमतिस्वामी । तनोत्वज्जिमता निवः ॥ ७ ॥  
पद्मप्रज प्रजोर्देह । जासः पुष्पांतु वः श्रियं । अंतरंगारी मथने । कोपाटो  
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपाथंजिनैर्द्राय । महेंद्र महितांजये । नमश्चतु  
र्वर्ण संघ । गगनाजोग जास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज प्रजोश्चंद्र । मरीचि नि  
चियो ज्वला । मूर्त्ति मूर्त्तिसित ध्यान । निर्मितेव श्रियेऽ स्तुवः ॥ १० ॥ कराम  
ल कवद्रिध्वं । कज्जयन् केवलश्रिया । अर्चित्य महात्म्य निधिः । सुविधिर्वो  
धयेऽ स्तुवः ॥ ११ ॥ सत्वानां परमानंद । कंदो जेदनवांजुदः । स्याद्रादामृत  
निस्पंदी । शीतलः पातुवो जिनः ॥ १२ ॥ नवरोगार्त जंतूना । मगदंकार दर्शनः  
निःश्रेयस श्रीरमण । श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी चूत । तीर्थ  
कृत्कर्म निर्मितिः । सुरासुर नरैः पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥ विम  
ल स्वामिनो वाच । कृतकहोद सोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो । जलनै  
र्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंचूर मणस्पर्धि । करुणा रस वारिणा । अनंत  
जिदनंतांवः । प्रयच्छतु सुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्माण । मिष्टप्राप्तौ  
शरीरिणां । चतुर्धा धर्मद्वेषारं । धर्मनार्थ मुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदर  
वाग्ज्योत्स्ना । निर्मली कृत दिडमुखः । मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै । शान्तिनाथ  
जिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथो जगवान् । सनाथो निशयधिर्जिः । सुरा

ए. नृनाथाना । मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु जगवा । श्र  
 र्थारनजोरविः चतुर्थं पुरुषार्थश्री । विलासं वितनो तुवः ॥ २० ॥ सुरासु  
 नराधीश । मयूर नव वारिदं । कर्मद्रुन्मूलने हस्ति । मङ्गं मङ्गि मङ्गिष्टु  
 ॥ २१ ॥ जगन्महा मोहनिद्रा । प्रत्यूषसमयोपम । मुनि सुव्रत नाथस्य  
 शना वचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि । निर्मली कार कारिणं । वा  
 रे प्लवा इवनमेः । पातुं पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदु वंश समुद्रेंद्रुः । कर्म कहु  
 ताशनः । अरिष्टनेमि र्जगवान् । नूयाद्रोऽरिष्ट नाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धर  
 ण्द्रेच । स्वोचितं कर्म कुर्वति । प्रनुस्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्थ नाथः श्रियेऽ  
 स्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायादनुत श्रिया । महानंदासरोरा  
 ज । मरालायाहते नमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने । कृपामंथरतारयोः ।  
 ईषद्राष्यार्दयोर्जद्र । श्रीवीर जिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः ।  
 सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् । विमलस्त्रास विरहित । स्त्रिनुवन चूफामणि  
 र्जगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महिता वीरं बुधाः संश्रिताः ।  
 वीरेणानिहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरातीर्थ मिदं प्रवृत्त  
 मतुलं वीरस्य घोरं तपो । श्रीवीरे धृति कीर्त्ति कांति निचयः । श्रीवीरभद्रं  
 दिश ॥ २९ ॥ अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां । वरभुवन गतानां  
 दिव्य बैमानिकानां । इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां । जिनवर भुवना  
 नां प्रावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥ ५२ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ शान्तिकर स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संतिकरं संतिजिणं । जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि  
 न्त पालग । निवाणी गरुक्कय सेवं ॥ १ ॥ ओं सनमो विण्पोसहि प  
 त्ताणं । संतिसामिपायाणं । ओं स्वाहा मंतेणं । सवाशिव डुरिअ हरणाणं  
 ॥ २ ॥ नै संतिं नमुक्कारो । खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं । सो ङ्गो नमो स  
 वो सहि । पत्ताणं चंदेइसिरीं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअण सामिणी । सिरि देवो  
 जख्खराय गाणि पिरुगा । गह दिसिपाल सुरिंदा । सयावि रक्खंतुजिणजत्ते  
 ॥ ४ ॥ रक्खंतु ममरोहिणी । पन्नत्ती वज्जासिंखला सया । वज्जंकुसि चक्केसरी  
 नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी । महजाला माणवीअ वइ

रुद्रा । अत्रुत्ता माणसिआ । महामाणसिआओ देवीओ ॥ ६ ॥ जख्खा गोसुह  
महजख्खा । तिसुह जख्खेसु तुंवरु कुसुमो । मायंग विजय अजिओ । वंजो  
माणओ सुर कुमारो ॥ ७ ॥ ञ्मुह पायाल किन्नर । गरुजो गंधव तहय  
जख्खिंदो । कुबेर वरुणो जिननी । गोमेहो पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ  
चकेसरी । अजिआ पुरिआरी कालि महा काली । अचुअ संता जाला । सु  
तारया सोअ सिरिवट्ठा ॥ ९ ॥ चंफा विजयंकुसि पन्नइत्ति । निवाणि अचुआ  
धरणी । बर्डरुद्र वृत्त गंधारी । अंब पनुमावर्ड सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिथ्य  
रख्खण स्या । अन्नेवि सुरा सुरी चक्रहावि । व्यंतर जोइणि पमुहा । कुणंठु  
रख्खं सया अहं ॥ ११ ॥ एवं सुदिठि सुरगण । सहिओ संघस्स संति जिण  
चंदो । मझवि करेऊ रख्खं । सुणि सुंदर सूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ  
संतिनाह सम्मदिठि । रख्खं सरइ तिकालं जो । सबोवद्व रहिओ । सलहइ  
सुह संपर्य परमं ॥ १३ ॥ तव गढ गयण दिणयर । जुगवर सिरि सोम सुं  
दर गुरूणं । सुपसाय लक्ष गणहर । विज्जा सिद्धि जणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर परमात्मा । शिव सुखना दाता । पुख्खल बर्ड विजये  
जयो । सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंरुरीगिणी । नयरीयें शो  
हे । श्री श्रेयांस राजा तिहां । जविअण मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन  
निर्मल लही । सत्यकी राणी मात । कुंथु अर जिन अंतरे । श्री सीमंधर  
जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रनु जनमीया । बली यौवन पावे । मात पिता हरखें  
करी । रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसारनां । संजम मन ला  
वे । सुनिसुवत नमी अंतरे । दिह्ता प्रनु पावे ॥ ५ ॥ धाती कर्मनो द्वय  
करी । पाम्या केवल नाण । वृखज लंढनें शोचता । सर्व जावना जाण ॥  
॥ ६ ॥ चौराशी जस गणधरा । सुनिवर एक शो कोड । त्रण जुवनमां जोअ  
तां । नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कहा केवली । प्रनुजीनो  
परिवार । एक समय त्रएय कालना । जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढा  
ल जिनांतरे ए । थाशे जिनवर सिद्ध । जस विजय जिन प्रणमतां । शृज  
वंजित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जग धणी । आजरते आवो । करुणावंत करु  
णा करी । अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमें धणी ए । जो होवे अम  
नाथ । प्रवो प्रव हुं बूं ताहरो । नहीं मेळुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग  
ठंफी करी ए । चारित्र लेइशुं । पाय तुमारा सेविनें । शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥  
ए अलजो सुजने घणो ए । पूरो सीमंधर देव । इहां थकी हुं वीनबुं । अ  
वधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल केवल ज्ञान कमला । कलित त्रिचुवन हितकरं । सुर  
राज संस्तुत चरणपंकज । नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर  
शंग मंरुण प्रवर गुण गण नूधरं । सुर असुर किन्नर कोमि सेवित न  
मो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं । निर्ज  
रावली नमें अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी । को  
मि पण मुनि मन हरं । श्री विमल गिरिवर शंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥  
निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर । कोमिनंत ए गिरिवरं । मुक्ति रमणी व  
र्या रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांहीं । विमल गिरिवर तो  
परं । नहि अधिक तीरथ तीर्थप ति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गि  
रिवर शिखर मंरुण । दुःख विहंरुण ध्याइ यें । निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे  
परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विमोह निद्रा । परम पद स्थि  
ति जयकरं । गिरिराज सेवा करण तत्पर । पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शेठुंजय सिद्ध खेत्र । दीठे दुर्गति वारे । जाव धरीनें जे  
चढे । तेने प्रवपार उत्तारे ॥ १ ॥ अनंत सिध्नो एह ठाम । सकल तीरथ  
नोराय । पूर्व नवाणुं रिखजदेव । ज्यां ठवीआ प्रनुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंरु  
सोहा मणो । कवरु जहू अन्निराम । नान्निरायां कुलमंरुणो जिनवर करुं  
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्य ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री परमात्मा चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परमेसर परमात्मा । पावन परमिष्ठ । जय जगगुरु देवाधि  
देव । नयणे में दिष्ट ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार । करुणा रससिं  
धु । जगती जन आधार एक । निःकारण बंधू ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रचुता  
हरा ए । किम ही कल्याण जाय । राम प्रभु जिन ध्यानथी । चिदानंद सु  
ख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमात्म पासें जावजो । मुज  
वीनतनी प्रेम धरीनें इण परें तुमें मंजलावजो । ( ए आंकणी ) जे  
त्रण्य जुवननो नायकते । जस चौशठ ईंद्र पायकते । नाण दरसण जेहनें  
खायक ते ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन बरणी कायाते । जस  
धोरी लंठन पायाते । पुंनरीगणी नगरीनो रायाते ॥ सुणो० ॥ २ ॥  
बार पर्यदा मांहि विराजै ते । जस चौत्रीश अतिशय भाजैते । गुण  
पांत्रीश वाणीयें गाजे ते । सुणो० ॥ ३ ॥ जविजननें ते पनि बोहेते । तुम  
अधिक शीतल गुण शोहेते । रूप देखी जविजन मोहेते ॥ सुणो० ॥  
॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीओ हुं । पण जरतमां दूरें वसीओ हुं । महा  
मोह राय कर फसीओ हुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयोते  
तुम आणा खड्ग कर गहीयोते । तव कांइक मुज्जथी डरीयोते ॥ सुणो० ॥  
॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठे हवे पूरो । कहे पद्म विजय थाऊं शूरो । तो वा  
धे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आंखनीयें रे में आज । शेवुंजो दीठोरे । सवा लाख टकानो  
दहानोरे । लागे मुनें भीठोरे ( ए आंकणी ) सफल थयो मारा मननो ऊ  
माहो ॥ वाला मारा ॥ जवनो संशय जाग्योरे । नरक तिर्यंच गति दूर नि  
वारी । चरणे प्रभुजीनें लाग्योरे ॥ शेवुं० ॥ १ ॥ मानव जवनो लाहो लीधो  
वा० ॥ देहडी पावन कीधीरे । सोना रूपानें फूलडे वधावी । प्रेमें प्रदक्षिणा  
दीधीरे ॥ शेवुं० ॥ २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आ

दीश्वर पूज्यारे । श्री सिद्धाचल नयणें जोतां । पाप मेवासी धूज्यारे ॥ शेटुं०  
 ॥ ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलेरे ।  
 त्रण नुवनमां तीरथ मोटुं । नहिं कोइ शेटुंजा तोलेरे ॥ शेटुं० ॥ ४ ॥ इंद्र  
 सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चौहारे । कायानी तो कासल  
 टाले । सूरज कुंफमां नाहारे ॥ शेटुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धखेत्रें  
 वा० ॥ साधु अनंता शीधारे । ते माटे ए तीरथ मोटुं । उधार अनंता की  
 धारे ॥ शेटुं० ॥ ६ ॥ नान्निराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस  
 वूठ्यारे । उदयरतन कहे आज मारे पोतें । श्री आदीश्वर तूठ्यारे ॥ शेटुं०

### ॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमलाचल नित वंदियें । कीजै एहनी सेवा । मानुं हाथ ए  
 धर्मनो शिवतरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्जाल जिन गृह मंफली । ति  
 हां दीपे उत्तंगा । मानुं हिमगिरि विभ्रमें । आई अंबर गंगा ॥ वि० ॥  
 ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं । ए तीरथ तोले । इम श्रीमुख हरिआगलै  
 श्री सीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या । जात्रा फल  
 लहीयें । तेहथी ए गिरि जेटतां । शत गणुं फल कहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥  
 जनम सफल होय तेहनो । जे ए गिरि वंदे । सुजश विजय संपद लहे ।  
 तेनर चिरनंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्री पंच तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं श्री नान्निराजंगजं  
 वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा । तारंगे अजितं जिनं ऋगु  
 पुरे श्रीसुव्रतं स्थंजने । श्रीपार्थ प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्धमानं त्रिधा  
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तर कल्प तल्प नुवने ग्रैवेयके व्यंतरे । ज्यौतिष्का मर मंदराद्रि  
 वसतो स्तीर्थकरा नादरान् । जंबू पुष्कर धातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुं  
 डले । येचान्येपि जिना नमानि सततं तान् कृतिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥  
 श्री मघीरजिनास्य पद्म द्रुततो निर्गम्यते गौतम । गंगा वर्त्तन मेत्य या प्रवि  
 ष्ठे मिथ्यात्व वैताड्यकं । उत्पत्ति स्थिति संहति त्रिपथगा ज्ञानां बुधा  
 वृद्धिगा । सामे कर्ममलं हरत्व विकलं श्रीप्रादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र श्रंद्र

रवि ग्रहा श्र धरण ब्रह्मेश्र शांत्यंविका । दिगपालाः सकर्पादिगो मुखगणा  
श्रकेश्वरी जारती । येन्ये ज्ञानतपक्रिया व्रतिविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु । श्री  
संघस्य तुरा चतुर्विध मुरा स्ते संतु चद्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्रीपंचतीर्थ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेमराजुल सिषाय ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नदी जमुनाके तीर ऊरे दोय पंखीया ( ए देशी ) पिउजी पि  
उजीरे नाम जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश । तपे मोरी  
गतीयां । पग पग जोती वाट वालेसर कब मिले । नीर बिओह्यां मीनके ।  
तेछुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नविगमे । जिहारे वालेसर  
नाम तिहां मारुं मन जमे । जो होवे सज्जन दूर तोहि पासैं वसे । किहां  
सायर किहां चंद देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत मकरजोको  
सही । पतंग जलावे देह दीपक मनमें नही । माणसनो विजोग  
म होजो केहनें । सालेरे साल समान हडआमां तेहने ॥ ३ ॥  
विरह व्यथानी पीरु जोवन वय अति दहे । जेनो पियु परदेश ते माणस  
दुःख सहे । फुरी फुरी पंजर कीध, काया कमला जिसी । हजुअ न आ  
व्योनेम मली नयणैं हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग टाल्यो ते नवी टलै  
चकवा रयणी विजोग तेतो दिवसैं मलै । आंवा केरो स्वाद निबू ते न  
वि करे । जे नाह्या गंगा नीर ते छिहर केम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती  
फूल धचूरे केम रमे । जेहनें घीयशुं प्रेम ठे तेले केम जमें । जेहनें चतुरशुं  
नेह ते अवरनें शुं करे । नव जोवन तजी प्रेम वैरागीथै फरे ॥ ६ ॥ रा  
जुल रूप निधान के पोहती सहसावनें । जइ वांधा प्रनु नेम संजम ले  
ई ऐकमनें । पांम्यां केवल ज्ञान के पोहती मन रली । रूपविजय प्रनुनेम  
जेटे आशा फजी ॥ ७ ॥ इति ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आऊखा सिषायः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आऊखो तूटाने सांधो को नहींरे । तिण कारण मकरो जीव  
प्रमादरे । जरा आव्यानें शरणुं को नहींरे । हिसा ओमीनें दया पालरे ॥  
आऊ० ॥ १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणेरे । भूरख संच्यां बहुला पाप  
२ । चोर तणी परे ठंणी ऊशेरे । सहीश डहलोक परलोक संतापरे ॥



आ० ॥ २ ॥ ऊंचा चणाव्या मंदिर मालियारे । दे दे धरतीमें ऊंडी नींवरे  
 एक दिन अणजाण्युं ऊठी चालवुरे । सुख दुःख सहेशे आपणो जीवरे  
 आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति हरिवल राणो केशवरे । जो जो वली इंद्र सुरांनो  
 नाथरे ॥ ऊगी ऊगीनें उवेही आथम्यारे । जो जो कोइ अचरज वाली वा  
 तरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनी नीसरयारे । करता मुनि नव  
 ला विहाररे । जारं पंखीनी दीधी उपमारे । न धरे ममता नेह लगाररे ॥  
 आ० ॥ ५ ॥ चारित्र पालै रूनी रीतशुरे । देवे मुनि अपनो उपदेशरे ।  
 तीको मुनिवर सिधासी मोहनेरे । जश लेई इह लोक परलोकरे ॥ आ० ॥  
 ॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे । मकरो मुनि ज्ञेयानुं अग्निमानरे ।  
 रुषि चोथमल सूत्र देखिनेरे । जोरु कीधी जालोर मजाररे ॥ आ० ॥ ७ ॥

### ॥ ❀ ॥ पंचतीर्थी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज देव अरिहंत नमुं । समरुं तारुं नाम । ज्यां ज्यां प्रति  
 मा जिनतणी । त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ शेटुंजय श्रीआदिदेव । नेम  
 नमुं गिरनार । तारंगे श्री अजित नाथ । आवू रिखज जुहार ॥ २ ॥ अष्टा  
 पद गिरि ऊपरें । जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूर्ति मानशुं । जरतें  
 जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं । ज्यां बीशे जिन पाय । वै  
 जारकगिरि ऊपरें । श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांरुवगढनो राजियो ।  
 नामें देव सुपाश । रिखज कहै जिन समस्तां । पोहोचै मननी आश ॥ ५ ॥

### ॥ ❀ ॥ दूज तिथीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुविध धर्म जिणें उपदिश्यो । चोथा अग्निनंदन । बीजै ज  
 न्या ते प्रभु । जवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ पुविध ध्यान तुह्मे परिहरो ।  
 आदरो दोयध्यान । एम प्रकाश्युं सुमति जिन । ते चविया बीज दिन ।  
 ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष । तेहनें जवि ताजियें । मुऊ परे शीतल जिन क  
 हे । बीज दिन शिव जजियें ॥ ३ ॥ जीवा जीव पदार्थनुं । करोनाण सुजाण  
 बीज दिनें वासुपूज्य परें । लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार  
 दोय । एकांत न ग्रहीयें । अर जिन बीज दिनें चवी । एमजिन आगल क  
 हीयें ॥ ५ ॥ वर्तमान चौबीशीये । एम जिन कल्याण । बीजदिनें केई पा

मीया । प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चौवीशीयें । हुआ बहुत कल्याण । जिन उत्तम पद पढ़ने । नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ त्रिगडे वेठा वीरजिन । ज्ञाखे जविजन आगे । त्रिकरणशुं त्रि हुं लोक जन । निमुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसे । पांच म अजुवाली । ज्ञान आराधन कारणें । येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा । जाणो इण संसार । ज्ञान आराधनथी लखुं । शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही । काश कुसुम उप मान । लोका लोकप्रकाशकर । ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो सासमे । करे कर्मनो खेह । पूर्व कोनी वरसां लगे । अज्ञानेकरे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही । सर्व आराधकज्ञान । ज्ञान तणो महिमा घणो । अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी । जावजीव उत्कृष्टी । पंच वरश पंच माशनी । पंचमी करो शुभदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए । कालसग लोकास्तु करो । कुजमाणुं करो जावशुं । टाले जव फेरो ॥ ८ ॥ इण परें पंचमी आराहीयें ए । आणी जाव अपार । वरदत्त गुण मंजरी परें । रंग विजय लहोसार ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महा शुद्धि आठमनें दीने । विजया सुत जायो । तेम फागुण शुद्धि आठमें । संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें । जनम्या रूपज जिणंद । दिहा पण ए दिन लही । हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधवशुद्धि आठम दिनें । आठ कर्म करचा दूर । अजिनंदन चोथा प्रभु । पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली । जन्म्या सुमति जिणंद । आठजाति कलशें करी । न्हवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठवदि आठमें । मुनि सुव्रत स्वामी । नेम आपाठ शुद्धि आठमें । पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें । नमि जन्म्या जगज्जाण । तिम श्रावण शुद्धि आठमें । पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ जाद्रवा वदि आठम दिनें चविया स्वामी सुपास । जिन उत्तम पदपढ़नें । सेव्यांथी शिववास ॥ ७ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशन नायक वीरजी । प्रभुकेवल पायो । संध चतुर्विध थाप  
वा । महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी । सोमल द्विजयज्ञ  
इंद्रचूति आदें मल्या । एकादश विग्य ॥ २ ॥ एकादशसें चतुगुणा । तेह  
नो परिवार । वेद अर्थ अवलो करे । मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवा  
दिक संशय हरीए । एकादश गणधार । वीरें थाप्या वंदियें । जिन शासन  
जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पाश । वर चरण विलाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिव  
वास पास । अवन्नवना तोडी । एकादशी दिन आपणी । रिद्धि सगली जो  
डी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं काजनां । दैदशै कल्याण । वरस अग्यार एका  
दशी । आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें । एकादश  
पाठा । पूंजणी ठवणी विंठणी । मसी कागज काठा ॥ ८ ॥ अगीयार  
अव्रत ठाम्वा ए । वहो पस्मिमा अगियार । खिमाविजय जिन शासनें ।  
सफल करो अवतार ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहेब देव । अरिहंत सकलनी ।  
प्राव धरी करूं सेव । सकलागम पारग गणधर आखित वाणी ।  
जयवंती आणा ज्ञान विमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
ए थुई चार वखत पण कहेवायते ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर । मुनि मन पंकज हंसाजी । कुंथुअर  
जिन अंतर जनम्या तिहुअणायश परशंसा जी । सुव्रत नमि अंतर वरदी  
हा शिक्षा जगत निरासेंजी । उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु जाशे शिव  
बहु पासें जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया इग सय सठि  
उक्किठा जी ॥ चउ अरु अरु मली मध्यम कालें वीस जिनेश्वर दिठा  
जी ॥ दो चउ चार जघन्य दशजंबू धायई पुख्खर मजारें जी ॥ पूजो  
प्रणमो आचारांगें प्रवचन सार उधारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पा  
मी जिनपद खेवण निमित्तेंजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन देतां सु

एत विनीतेंजी । द्वादश अंग पूरवयुत रचिया गणधर लब्धि विकसिया  
जी । अपञ्जवसिय जिनागम बंदो अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आ  
णा रंगी समकित संगी विविध जंग व्रतधारी जी । चउबिह संघ ती  
रथ रखवाली सहु उपद्रव हरनारी जी । पंचांगुली सुरी शासन देवी  
देती तस जश रुचीजी । श्री शुभवीर कहे शिव साधन कार्य शकलमां  
सिन्धीजी ॥ ४ ॥ ❀ इति ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बीजतिथिकी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिन सकल मनोहर बीज दिवस सु विशेष । राय राणा प्र  
णमें चंद्र तणी ज्यां रेख । तिहां चंद्रविमानें शाश्वत जिनवर जेह । हु  
बीज तणे दिन प्रणमुं आणि नेह ॥ १ ॥ अग्निनंदन चंदन शीतल शीतल  
नाथ । अरुनाथ सुमति जिन वासुपूज्य शिव साथ । इत्यादिक जिनवर  
जन्म ज्ञान निखाण । हुं बीज तणें दिन प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ पर  
काश्यो बीजें दुविध धर्म जगवंत । जेम विमला कमला विउल नयन  
विकसंत । आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार । बीजें सवि  
कीजें पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल  
चीर । चक्रेसरि केसरी सरम सुगंध शरीर । कर जोनी बीजें हुं  
प्रणमुं तस पाय । इम लब्धिविजय कहे पुरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति

॥ ❀ ॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुद्धि दिन पंचमी ए । जनम्या नेम जिणंद तो । श्याम  
वरण तन शोजतो ए । मुख शारदको चंद तो । सहस वरस प्रनु आउखो  
ए । ब्रह्मचारी जगवंत तो । अष्ट करम हेलें हणीए । पोहोता मुक्ति मजार  
तो । वासुपूज्य चंपापुरि ए । नेम मुक्ति गिरनार तो । पावापुरी नगरीमां  
वली ए । श्री वीरतणुं निर्वाण तो । समेत सिखर वीश सिद्ध हुआ ए । शिर  
वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुवा ए । जाख्यो सार वचन  
तो ॥ जीवदया गुण वेजनी ए । कीजें तास जतन तो । मृपा न बोलो मा  
नवी ए । चोरी चित्त निवार तो । अनन्त तीर्थकर डम कहे ए । परहरियें  
परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जहू जलो ए । देवीश्री अंबिका नाम तो । शा

सन सानिध्य जे करे ए । करै बलि धरमनां काम तो । तपगढ नायक गुण नि  
लो ए । श्री विजय सेन सूरिराय तो । रिखन दास पाय सेवतां ए । सफ  
ल करै अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल आठ करी जस आगल जाव धरी सुरराजाजी । आ  
ठ जातिना कलश करीने न्हवरावें जिनराजाजी । वीर जिनेश्वर जन्म  
महोत्सव करतां शिव सुख साधेजी । आठमनुं तप करतां अम घर मंग  
ल कमला बाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन । अष्टापदपरे ब  
लीयाजी । आठमें आठ सरूप विचारी । मद आठे तस गलियाजी । अ  
ष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर फरस आठ नहिं अंगजी । आठमनुं तप  
करतां अम घर नित्य नित्य बाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ वि  
राजे । समवसरण जिन राजेजी ॥ आठमें आठ शो आगम जाखी । जवि  
मन संशय जांजेजी । आठे जे प्रवचननी माता पाले निरतीचारोजी ।  
आठमनें दिन अष्ट प्रकारें जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी  
पूजा करीनें मानव जव फल लीजेंजी । सिद्धाई देवी जिनवर सेवी अ  
ष्टमहासिद्धि दीजेंजी । आठमनुं तप करतां लीजें निर्मल केवल ज्ञान  
जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोडकल्याणजी ॥ ४ ॥

### ॥ ❀ अथ एकादशीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकादशी अति रूअनी । गोविंद पूजे नेम । कोण कारण ए प  
र्व मोहोडुं । कहो मुऊशुं तेम । जिनवर कल्याणक अति घणां । एकशो  
ने पंचाश । तेणें कारण ए पर्व मोहोडुं । करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ  
ग्निआर श्रावक तणीप्रतिमा । कहै ते जिनवर देव । एकादशी एम अधिक  
सेवो । वन गजा जिमेरेव । चौवीश जिनवर सयल सुखकर जैसा सुरतरु चं  
ग । जेम गंगनिर्मल नीरजेहबुं करो जिनसुं रंग । अग्नीआर अंग लखाविये ।  
अग्नीयार पाठासार । अग्नीआर कवली विंटाणां ठवणी पूंजणी सार । चावखी  
चंगी विविध रंगी शाखतणें अनुसार । एकादशी एम नुजमो । जेम पामियें ज  
वपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी कमल सुकोमल काय । नुजडंन

चक्र अखरं जेहनें समस्तां सुख थाय । एकादशी एम मन वशी गणि  
हर्ष पंक्ति शीश । शामन देवी विघन- निवारो संघ तणां निश दीश ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्नातस्याचवदशनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरुशिखरे । शच्या विभोः शेशवे । रूपा  
लोकन विस्मया हत रस आंत्या भ्रमचक्षुषा । उन्मृष्टं नयन प्रज्ञा धवलि  
तं ह्रीरोदकाशंकया । वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥  
॥ १ ॥ हंसां साहत पद्मेण कपिश ह्रीरार्णवां जो नृतैः । कुंजै रप्सरसां प  
योधर जर प्रस्पर्धन्निः कांचनैः । येषां मंदर रत्नशैल शिखरे जन्माजिपे  
कः कृतः । सर्वे सर्व सुरा सुरेश्वर गणै स्तेषां नतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्  
क्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगं विशालं । चित्रं बह्वर्ह्य युक्तं मुनिगण वृष  
त्रैर्ध्यासितं बुद्धिमद्भिः । मोहाग्रधारचृतं व्रत चरण फलं ज्ञेय ज्ञाव प्रदीपं ।  
प्रत्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुत मह मखिलं सर्व लोकैक सारं ॥ ३ ॥ निष्पंक  
व्योमनील छुतिमल सदृशं बाजचंद्राज दंष्ट्रं । मत्तं वंदारवेण प्रसूत मदज  
लं पूरयंतं समंतात् । आरूढो दिव्य नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।  
यद्गः सर्वानुच्रति दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धि ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार । गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार । ठा  
कुरराम अपार । मंत्र मांहिं नवकारज जाणुं । तारा मांहे जेम चंद्र बखाणुं ।  
जलथर मांहे जल जाणुं । पंखी मांहे जेम उत्तम हंस । कुल मांहे जिम  
रूपजनो वंश । नाजि तणो जे अंश । कृमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपशू  
रा मुनिवर महंता । शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव  
अनिनंदा । सुमतिनाथ मुख पृनम चंदा । पद्म प्रज सुख कंदा । श्रीसुपा  
र्य चंद्रप्रज सुविधी । शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धी । वासुपूज्य मति सुद्धी  
विमल अनंत जिन धर्म ए शांती । कंथु अर मखि नमुं एकांती । मुनिसुव्रत  
शुद्ध पंथी । नमी पाशने वीर चौवीश । नेम विना ए जिन त्रेवीश । सिद्ध  
गिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ जतराय जिन सार्थे बोले । स्वामी शत्रुंजय गिर  
कुण तोले । जिननुं वचन अमोले । रूपज कहे सुणो जतराय । ठहरी पा

लंता जे नरजाय । पातिक चूको थाय । पशु पंखी जेइण गिरि आवे । जव  
 त्रीजे ते सिध्ज थावे । अजरामर पद पावे । जिनमतमें शेवुंजो वखाण्यो ।  
 ते में आगम दिलमांहे आण्यो । सुणतां सुख उरआण्यो ॥ २ ॥ संघ पति  
 जस्त नरेसर आवे । सोवन तणां प्रासाद करावे । मणिमय मूरति ठावे । ना  
 जिराया मरुदेवी माता । ब्राह्मी सुंदरी बहेन विख्याता । मूर्ति नवाणुं आता  
 गोमुखनें चक्रेसरी देवी । शेवुंजय सार करे नित्य मेवी । तपगह्व ऊपर हेवी  
 श्रीविजय सेन सूरेश्वर राया । श्री विजयदेवसूरी प्रणमी पाया । रुषज दास  
 गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महाविदेहखेत्रे सीमंधर स्वामी सोनाना सिंहासणजी । रूपानां  
 कोशीशा विराजे रत्नना दीवा दीपेजी । कुंकुमवर्णी गहुंली विराजे मोतीना  
 अद्भुत सारजी । त्यां बेठा सीमंधर स्वामी बोलै मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥  
 केशर चंदन जरीरे कचोली । कस्तूरी वरासजी । पहलीरे पूजा अमारीरे  
 होजो जगम ते परजातजी ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक लेवा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुंकीनें । श्रावक, श्राविका, कटा  
 सणुं । मुहपत्ती, चरवलो लई । शुद्ध वस्त्रपहरी । जग्या पुंजी । कटासण ऊपर  
 बेशी, मुहपत्ती मावा हाथमां मुख पासैं राखी । जमाणो हाथ थापना जी सन्मुख  
 राखी । एक नवकार गणी ( पंचिंदिअ ) कह्यो । इत्थामि खमासमण देई । इरि  
 या बहिया । तस्सउत्तरी । अन्नत्थ ऊससिएणं । कह्यो । एक लोगस्सनो ( अथवा )  
 चार नवकारनो कानसग कौ ( पारी ) प्रगट लोगस्स कह्यो । खमासमण  
 देई । इत्थाकारेण संदिसह जगवन् सामायक मुहपत्ती पन्निजेहुं ॥ इत्थं ॥  
 इमकही । मुहपत्ती, तथा, अंगनी पन्निजेहणना पंचाश बोल कह्यो । मुहपत्ती  
 पन्निजेहीऐं । पत्ती खमासमण देई । इत्थाकारेण संदिसह जगवन् सामायक  
 संदिस्सानं ॥ इत्थं ॥ वली खमासमण देई । इत्था० ॥ सामायक ठानुं ॥ इ  
 त्थं ॥ एम कह्यो । बे हाथ जोसी । एक नवकार गणी । इत्थकार जगवन्  
 पसाय करी सामायक दंरुक उच्चरावोजी । पत्ती गुरु प्रमुख बनेल करेमि

जंते कहे । पढी खमासमण देई । इच्छा० वैसणो संदिस्सालं ॥ खमा०  
इच्छा० ॥ वैसणो ठाजं ॥ खमा० इच्छा० ॥ सिझाय संदिस्सालं ॥ खमा०  
इच्छा० ॥ सझाय करं । इच्छा० एम कही । त्रण नवकार गणवा । पढी वे  
धनी सझाय धर्म ध्यान करुं । इति सामायक लेवानी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायिक पारवा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरिया वही पम्किमाथी (यावत्) लोगस्स सूधी  
कही ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपत्ती पम्किहेहुं (एम कही) मुहपत्ती पम्कि  
ही । खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारं । यथाशक्ती । वजी खमास  
मण देई ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारयुं तहत्ती कही । पढी जमणो हाथ  
चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी । एक नवकार गणी (सामाईय  
वयजुत्तो०) कहिए ॥ पढी जमणो हाथ थापना सामो सबजौ राखीने एक  
नवकार गणीअं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सामायिक लीजें । पाणी वावरुं होय (तो) मुहप  
त्ती पडि लेहवी । अने आहार वावरयो होय (तो) वांदणां वेदेवा । तिहा बी  
जा वांदणांमां (आवसीआए) ए पाठन कहेवो । पढी यथा शक्ति पंचख्वा  
ए करवुं । पढी खमासमण देई । इच्छा० कही । वमेरायें (अथवा) पोतें ।  
चैत्यवंदन कहेवुं । पढी जंकिचि० । नमोऽथ्युणं० कही । ऊजाथईने । अरिहंतचे  
इयाणं कही । एक नवकारनो काऊस्सगं करी । नमोऽर्हतं० कहीने । प्रथम  
थुई कहेवी ॥ पढी । लोगस्स० सबनोए अरिहंत चेइयाणं कही । एक नवकार  
नो काऊस्सगं पारीने । बीजी थुई कहेवी ॥ पढी पुखखरवदी० कही । सु  
अस्स जगवओ केरेमि काऊस्सगं । वंदण० कही । एक नवकारनो काऊ  
स्सगं पारी । त्रीजी थुई कहेवी । पढी सिघाणं बुघाणं कही । वेयावच्च ग  
राणं० केरेमि काऊस्सगं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो काऊस्सगं  
पारी । नमोऽर्हतं० कही । चोथी थुई कहेवी ॥ पढी वेशीने नमोऽथ्युणं कहेवुं  
(पढी) चार खमासमण देवापूर्वक । जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व सा  
धुभ्यः । प्रतं थोज वंदन करीये । पढी इच्छाकरेणं ॥ (दैवसिक प्रतिक्रमण



ठानं ) एम कही । जमणो हाथ, चवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने । इहं  
 सबस्सवि देवसिअं ॥ कहेवुं ॥ पढी ऊजा थई । करेमि जंते । इहामि ठामि  
 कान्सग्गं । जोमे देवसिअो ॥ तस्स उत्तरी० कहीनें ॥ अतीचारनी आठ  
 गाथानो कान्सग्ग करवो । आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो का  
 न्सग्ग करवो ॥ ते कान्सग्ग पारीनें लोगस्स कहवो । पढी बेसीनें । त्रीजा  
 आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीनें । वांदणा बे देवां ॥ पढी ऊजा थईनें । इह  
 करे० ॥ देवसिअं आलोचं ॥ इहं आलोएमि जोमे देवसिअो ॥ कहीने  
 सात लाख कहेवा । पढी अठार पापस्थानक आलोइनें । सबस्सवि देवसि  
 अ । कहीने बेसवुं । बेसीनें एक नवकार गणी । करेमि जंते । इहामि पमि  
 कमिचं कहीने ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पढी वांदणां बे देवा । पढी । अष्टुठिअोहं ।  
 अङ्घ्रितर देवमिअं खामीनें । वांदणां बे देवा । पढी ऊजा थई आयारिय उ  
 वझाए, कहीने । करेमि जंते० ॥ इहामि ठामि० जोमे देवसिअो० ॥ तस्स  
 उत्तरी० ॥ कही । बे लोगस्स, अथवा, आठ नवकारनो कान्सग्ग करवो । ते  
 पारीनें लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत चेइयाणं । वंदण० कही । एक लोग  
 स्स ( अथवा ) चार नवकारनो कान्सग्ग पारीनें । पुखवरवरदी० ॥ सुअस्स  
 जगवअो करेमि० ॥ वंदण० करीनें । एक लोगस्स ( अथवा ) चार नवका  
 रनो कान्सग्ग करवो । ते पारीनें । सिघाणं बुघाणं० कही । सुअ देवया  
 ए करेमि कान्सग्गं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो कान्सग्ग  
 करवो । ते पारी । नमोऽर्हत० कही । ( पुरुषे ) सुय देवयानी पहेली  
 थुई कहेवी ( अने ) स्त्रीयें, कमल दलनी पहेली थुई कहेवी । पढी  
 खेत्र देवयाए करेमि कान्सग्गं० ॥ एक नवकारनो कान्सग्ग पारी ।  
 नमोऽर्हत० कही । क्षेत्र देवतानी बीजी थुई । स्त्रीयें ( तथा ) पुरुषे बन्नेनें  
 कहेवी । पढी एक नवकार प्रगट गुणी ( बेसीने ) ठा आवश्यकनी मुह  
 पत्ती पडिलेहीने । बे वांदणां दीजे ( पढी ) सामायक, चऊवीसथ्यो, वंदनक, प  
 ण्णिमणं, कान्सग्ग, अने पच्चखाण, करुंजुनी । एम ए ठ आवश्यक संजा  
 र्वा । पढी इहामो अणुसठिं । नमो खमासमणाणं० । कही । नमोऽर्हत०  
 कहीनें पुरुष । नमोस्तु वर्धमानाय । कहे । अने स्त्रीयां संसार दावानी थुई त्रण

कहे । पत्नी नमोऽर्थुणं कही स्तवन कहेवुं (पत्नी) वरकनक कही जगवान् आदे  
वांदवा । पत्नी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । अट्टाइजोसु कहेवुं । पत्नी दे  
वसिअ पायवित्तनो कानसग्ग चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो क  
रवो । ते कानसग्ग पारी । प्रगट लोगस्स कही । वेसीने । खमासमण देइ । इ  
ट्ठा० । सिज्जाय संदिसाजं । विज्जं खमासमण देई । इट्ठा० सिज्जाय जणुं । एय  
सिज्जायनो आदेश मांगी । एक नवकार गणी । सिज्जाय कहवी । पत्नी एक  
नवकार गणी । खमासमण देई दुःखस्खस्खओ कम्मस्खस्खओ नो कानसग्ग ।  
चार लोगस्सनो संपूर्ण (अथवा) शोल नवकारनो करवो । ते एक वेरें  
(अथवा) पोतें पारीने । नमो ऽर्हत कही । लघुशांति कहीनें । प्रगट  
लोगस्स कहै (पत्नी) डरिया वही० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही ॥ एक  
लोगस्स (अथवा) चार नवकारो कानसग्ग करी । प्रगट लोगस्स  
कहेवो । पत्नी चउकसाय० ॥ नमुऽर्थुणं कही ॥ जावति, वे । क  
हीने । ज्वसग्ग हरं० ॥ जयवीयराय० कही । सुहपत्ती पडिलेहवी । पत्नी  
इट्ठामि० ॥ इट्ठा० सामायिक पारं यथाशक्ति । इट्ठामि० । इट्ठा का० ॥  
सामायिक पास्सुं, तहत्ति कही पत्नी जमणो हाथ उपधी ऊपर स्थापी । ए  
क नवकार गणीने सामाइअ वयज्जुत्तो कहेवुं । पत्नी थापोलि स्थापना  
होय तो एक नवकार गणी उठे । एवं प्रतिक्रमण विधि कह्यो । वा  
की अंतरविधि मोहोटाथी समजवो । इति देवसी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवूं । पत्नी । इट्ठा० । इट्ठा० । कही  
कुसुमिण दुसमिणनो कानसग्ग चार लोगस्सनो (अथवा) शोल नव  
कारनो करी । पारी । प्रगट लोगस्स कहेवो । पत्नी खमासमण देई ।  
जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन, जय वीयराय सुधी कहेवुं । पत्नी चार खमा  
सण पूर्वक । जगवान् । आचार्य । उपाध्याय । अनें सर्व साधु । प्रत्येकें  
वांदवा । पत्नी खमासमण वे देइ । सज्जायनो आदेश मांगी । एक नवकार  
गणीनें । जरहे सरनी सज्जाय कहीने (परी) एक नवकार गणवो । पत्नी इट्ठ  
कार सुहराईनो पाठ कहेवो । पत्नी इट्ठाका० । राई प्रतिक्रमण ठाऊं । क

हीने । जमणो हाथ उपधी ऊपर थापीने । पढी । इहं सबस्सवि राइय दु  
 च्चितिय० ॥ कही । नमोत्थुणं ( तथा ) करेमि जंतें कही । इहामि ठामि कान  
 सगं० ॥ तस्स उत्तरी० कही ॥ एक लोगस्स ( अथवा ) चार नवकारनो का  
 नस्सग । पारीने । प्रगट लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत० । कही । एक  
 लोगस्स ( अथवा ) चार नवकारनो कानसग करवो । पढी । पुख्खर  
 वरदी० ॥ सुअस्स० ॥ वंदण० ॥ कही । अताचारनी आठ गाथानो ( अथवा )  
 न आवमे तो । आठ नवकारनो कानस्सग पारी । सिधाणं बुधाणं कही  
 ने । त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पफिलेही । वांदणां वे देवा । ( तिहांथी  
 लेने ) अण्णुठिओ खामि । वांदणां वे दीजें ( तिहां सुधी ) देवसीनी रीतें  
 जाणवुं । पण ( जे ) ठेकाणे देवसिअं आवे ( ते ) ठेकाणे राइयं कहेवुं ।  
 पढी आयारिअ उवझाए० ॥ करेमि जंतें० ॥ इहामि ठामि० ॥ तस्स उ  
 त्तरी० कही ॥ तपचिंतामणि करतां न आवमे तो । चार लोगस्स ( अथवा )  
 शोल नवकारनो कानस्सग करवो । ते पारी प्रगट लोगस्स कही । ठा  
 आवश्यकनी मुहपत्ती पफिलेही । वांदणां वे देवा । ( पढी ) सकल तीर्थ वंदन  
 करीने । यथाशक्तियें पञ्चखाण करवुं । पढी इहकारेण संदिसह जगवन् ।  
 सामायिक, चन्वीसथो, वंदन, पफिकरण, कानसग, पञ्चखाण, क  
 र्खुं ठे जी । एम ठ आवश्यक संजारवा । पढी पञ्चखाण करखुं होय तो  
 करखुं ठे जी ( अने ) धारखुं होय तो धारखुं ठे जी । एम कहेवुं । पढी इह  
 मो अणुसंठि० नमो खमासमणाणं० ॥ नमोऽर्हत्० । कहीने । विशाल  
 लोचन० ॥ नमोत्थुणं० ॥ अरिहंत चेइयाणं० ॥ कही । एक नवकारनो  
 कानसग पारी । नमोऽर्हत् कही । कल्याणकंद नी प्रथम थोय कहेवी  
 पढी लोगस्स० । पुख्खरवरदी० ॥ सिधाणं बुधाणं० कही ॥ अनुक्रमें चार  
 थोयो कहीए ठीए ( तिहां सुधी ) सर्व कहेवुं । पढी नमोत्थुणं० कही । जग  
 वान् आदि चारने । चार खमासमाणें वांदवा । पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर  
 थापी । अट्ठाइजेसु कहेवुं । ( पढी ) सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन जयवीय  
 राय० ॥ कानसग, थोय, पर्यंत कहीये । तिहां सुधी करवुं ॥ पढी खमासमाण  
 पूर्वक श्रीसिधाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, कानसग० ॥

अने थोय कहीयें, ङियें । तिहां सुधी करुं । पणी सामायक पारवानी विधि  
नीरीते सामायक पारुं ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमण विधि ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहियें ( तिहां सुधी )  
सर्व कहेवूं । पण चैत्यवंदन, सकलां हतनुं, कहेवूं । अने थोयो, सातस्यानी  
कहेवी । पणी खमासमण देईनें । इच्छाकारेण संदिसह जगवान् । देवसिअं आ  
लोईअं पम्किंता । इच्छाकारेण ॥ पक्खि मुहपात्ति पम्जिहुं । एम कही सुह  
पत्ती पम्जिहिये । पणी वांदणां बे दीजे । पणी इच्छाकारेण संबुद्धा खामणे  
णं अप्पुठ्ठिओहं अप्पितर । पक्खिअं खामेजुं इहं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस  
दिवसाणं । पन्नरस राइयाणं । जंकिंचि अपत्तियं ० कही । इच्छाकारेण सं ॥  
पक्खिअं आलोएमि इहं आलोएमि । जो मे पक्खिअो अईआरोकओ  
कही । इच्छाकारेण सं ॥ पक्खी अतीचार आलोऊं ( एम कही ) वृद्धअतीचार  
कहियें । पणी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकित मूल बारत्त । एकशो चो  
वीश अतीचार मांहे । जे कोई अतीचार । पक्क दिवस मांहे । सूक्ष्म बादर  
जाणतां अजाणतां हुओ होय तेमवे हुं मने वचने कायायें करी मिठामि  
डुक्कं ॥ सबस्सर्वि पक्खिअ डुच्चित्तिअ । डुप्पासिय । डुच्चिठ्ठिअ । इच्छाकारेण  
सदिसह जगवन् तस्स मिठामि डुक्कं ॥ इच्छाकारे जगवन् पसाओ करी प  
क्खीय तप प्रसाद करोजी । एम उच्चार करी आवी रीतें कहिए ॥ चउत्थेण  
एक उपवास । बे आविज । त्रण नीवि । चार एकासणा । आठ बे आसणा  
बे हजार सप्पाय । यथाशक्ति तपकरी प्रवेश करयो होय ( तो ) पइठ्ठा कहीए  
करवो होय ( तो ) तहत्ति कहीयें । न करवो होय ( तो ) अण बोल्या रही  
अैं । पणी वांदणा ( बे ) दीजे । पणी इच्छाका ॥ पत्तेअ खामणेणं अप्पुठ्ठि  
ओहं अप्पितर । पक्खिअं खामेजुं । इहं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं ।  
पन्नरस राइयाणं । जंकिंचि अपत्तियं ० ॥ पणी वांदणा ( बे ) दीजे । पणी दे  
वसिअं आलोईअं पम्किंता । इच्छाका ॥ जगवन् पक्खिअं पम्किमुं । स  
म्मं पम्किमामि ॥ इहं ॥ एम कही । करेमिजंते सामाड्यं कही ॥ उठामि  
पम्किमिजुं । जोमे पक्खिअो कहेवो । पणी खमासमण देई । इच्छाकारेण

संदि० ॥ पक्खिस्सूत्रपटुं । एम कही । त्रण नवकार गणी । साधु न होय तो  
 त्रण नवकार गणीने । श्रावक वंदित्तु कहे । ( पढी ) सुअ देवयानी थुई कहेवी  
 पढी हेठा बेसी । जमणो ढिंचण ऊजो राखी । एक नवकार गणी । करेमि  
 जंतो० ॥ इत्तामि पडि० कही ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पढी करेमिजंतो० इत्तामि  
 ठामि कान्सग्गं । जोमे पक्खिओ० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ अन्नथ्य० ॥ कहीने  
 बार १२ लोगस्सनो कान्सग्ग करवो ( ते लोगस्स ) चंदेसुनिम्मलयरा, सूधी  
 कहेवा ॥ ( अथवा ) अमृतालीश नवकारनो । कान्सग्ग करी पारवो ॥  
 पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । सुहपत्ती पमिलोहिनें । वांदणा बे दीजे । पढी  
 इत्ताका० ॥ समाप्ति खामणेणं । अप्रुठिओहं अप्रितर० ॥ पक्खिअं  
 खामेज्ज । इहं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइ  
 याणं । जिक्किंचि अपत्तियं० कही । पढी खमासमण देईनें । इत्ताका० ॥  
 कही । पक्खि खामणा खामुं । एम कही खामणा चार खामवां ॥ पढी देव  
 सी प्रतिक्रमणामा वंदित्तु कहा पढी । बे वांदणां देईनें ( तिहांथी ) ते सामा  
 यक पारीये । तिहां सर्व सूधी देवसीनी पेठें जाणवुं । पण । सुअ देवयानी  
 थुईनें ठेकाणें, ज्ञानादिनी थोयो कहेवी । स्तवन अजित शांतिवुं कहेवुं ।  
 सज्जायनें ठिकाणें ज्वसग्गहरं ( तथा ) संसारदावानी थुई । चार कहेवी ॥  
 अनें लघुशांतिनें ठेकाणे मोहटी शांति कहेवी ॥ ❀ ॥ इति पक्खी प्रति० ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौमासी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ये ऊपर कहा मुजब पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं ( पण ) एटलुं  
 विशेष । जे बार लोगस्सना कान्सग्गने ठेकाणे ( वीश ) लोगस्सनो कान्स  
 ग्ग करवो ( अनें ) पक्खिना आगारनें ठिकाणे । चउमाशीना केहवा । यथा ।  
 तपनें ठेकाणे । ठठेणं बे उपवास । बार आंबिल । ष निवी । आठ एकाश  
 णा शोल बे आसणा । चार हजार सज्जाय । ए रीते कहीए ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एणऊपर जख्या मुजब । पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं  
 ( पण ) बार लोगस्सना कान्सग्गने ठेकाणे । चालीश लोगस्स ( अथवा ) ए  
 कशोनें शाठ नवकारनो कान्सग्ग करवो ( अनें ) तपनें ठेकाणे । अठम जंत

( एटले ) त्रण उपवास ठ आंबिल । नवनीवि । बार एकासणां । चौवीस वेआं सणां अने ठ हजार सझाय ( ए रीते कहेवुं ) अने पखिखना आगारने ठेकाणें संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति पंच प्रतिक्रमेण विधिः संपूर्णः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवकार पंचिदिअ कही । इरीयावही पम्किमवी । थापना होय तो नवकार पंचिदिअ न कहेवुं । पढी तस्सउत्तरी कही । एक लोगस्स (अथ वा ) चार नवकारनो काजसग करी । प्रगट लोगस्स कही । ऊजे पणें बेसी सुहपत्ति, चरवलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीजं, कंदोरो, आदिनो पम्किलेहण करवुं । पढी काजो काढी । जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं । पढी काजो कहान्नार थापनाजी सन्मुख ऊजो रही । इरिया वही पम्किमें । पढी । का जो परठववा जग्या शोधी । त्रणवार अणुजाणह जस्सगो कही । काजो परठवे । पढी त्रण बार, वोसिरे, कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पञ्चखाण पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावहियाए पम्किमीयें ( पढी ) जगंचितामणिनुं चइत्यवंदन । जयवीराराय सुधी करवुं ( पढी ) मन्हजिणाणंनी सझाय कही सुहपत्ती पम्किलेही । इठामि ० ॥ इठामि ० ॥ पञ्चखाण पारुं । यथाशक्ति इठामि ० ॥ इठामि ० ॥ पञ्चखाण पारवुं । तहत्ति । एम कही । जमणो हाथ, कटासणां ( अथवा ) चरवला ऊपर थापी एक नवकार गणी । पञ्चखाण करवुं होय ते कहेवुं । ते जखीयें तीयें ॥ उग्गएसूरे नमुकार सहिअं । पोरिसिं साढपोरिसिं । गंठिसहिअं सुंठिसहिअं पञ्चखाण करवुं चउबिहार । आंबिल, नीवि, एकासणुं, वे आसणुं, करवुं तीविहार । पञ्चखाण फासि अं । पालिअं । सोहिअं । तीरिअं । किट्ठिअं । आराहिअं । जंच न आरा हिअं । तस्स मिठामि डुकमं । एमकही । एकनवकार गणवो ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीरजिन उंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो । अरिकोधनें मन्नथी दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं । राग द्वेषथी दूर थाओ उठ्ठाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी । मनु जन्म

पामी वृथा कां गमोढो । जैन मार्ग ठंभी नुलाकां जमोढो ॥ २ ॥ अलो  
 जी अमानी नीरागी तजोढो । सलोजी समानी सरागी जजोढो । हरी ह  
 रादि अन्यथी शुं रमोढो । नदी गंग मूकी गलीमा पडोढो ॥ ३ ॥ केइ देव  
 हाथें असि चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुं माला । केइ देव  
 उत्संगें राखे छे वामा । केइ देव साथें रमें वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे ले  
 ई जपमाला । केइ मांसजही महाविकराला । केइ योगिणी जोगिणी जोग  
 रागें । केइ रुद्रणी गगनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश  
 राखे । तदा मुक्तिनां सुःखने केम चाखे । जदा लोभना थोकनो पार ना  
 व्यो । यदा मधनो बिंदुओ मन्नजाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवजां आपणी आ  
 श राखे । तेह पिंमनें मन्नशुं लेअ चाखे । दीन हीननी जीम ते केम  
 जाजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता जजो  
 मोह दाता । अलोजी प्रचूने जजो विश्वख्याता । रत्न चिंता म  
 णि सारिखो एह साचो । कलंकी काचना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद  
 बुद्धी जेह प्राणी कहेछे । सवि धर्म एकत्व चूलो जमेछे । कीहां सर्ववाने  
 कीहां मेरु धीरं । कीहां कायरानें कीहां शूरवीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं  
 कीहां कुंजखंमं । कीहां कोद्रवानें कीहां खीरमंडं । कीहां खीरसिंधु कीहां  
 द्वारनीरं । कीहां कामधेनु कीहां गगखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा की  
 हां कूडवाणी । कीहां रंकनारी कीहां रायराणी । कीहां नारकीनें कीहां  
 देव जोगी । कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती  
 कीहां कर्म धारी । नमो वीर स्वामी जजोअन्य वारी । जिसी सेजमां स्व  
 मथी राज्यपामी । राचे मंदबुद्धि हरि जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुःख सं  
 सारमां मन्न माचै । जना मूढमा श्रेष्ठशुं इष्ट बाजे । तजो मोह माया ह  
 रो दंजरोशी । सजो पुण्य पोशी जजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार सं  
 सार अपार पामी । आव्या आश धारी प्रचू पाय स्वामी । तुहीं तुहीं तु  
 हीं प्रचु पर्मे रागी । जव फेरनी शृंखला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीर  
 जी अर्जते एक मोरी । दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी । पुण्य उदय हुओ  
 गुरु आज मेरो । विवेकें लह्यो में प्रचु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥❀॥



॥ ❀ ॥ अथ नवकारनो बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ वंजित पूरे विविधं परें । श्री जिन शासन सार । निश्चै  
 श्रीनवकार नित । जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अरुशठ अह्वर अधिक  
 फल । नव पद नवे निधान । वीतराग श्रीमुख वदे । पंच परमेष्टि प्रधान  
 ॥ २ ॥ एकज अह्वर एक चित्त । समरथां संपति थाय । संचित सागर सा  
 तनां । पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट माणि । सद्गुरु जोषि  
 तें सार । सो ज्ञावियां मन शुद्ध ॥ नित जपीयें नवकार ॥ ४ ॥ ( बंद हाटकी )  
 नवकार थकी श्रीपाल नरेश्वर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध । समशान विषे शिव  
 नाम कुमरने सोवन पुरिसो सिद्ध । नवलाख जपता नरक निवारे पामें  
 जवनो पार । सो ज्ञावियां जेतें चोखें चित्तें नित जपीयें नवकार ॥ ५ ॥  
 बांधी वरुशाखा ठीकें वेसी हेठल कुंरु हुताश । तस्करनें मंत्र समर्थो  
 श्रावके उड्यो ते आकाश । विंधिरीतें जप्यां विषधर विष टाले टाले  
 अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर दुष्ट  
 विरोध । जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यहु प्रतिबोध । नवलाख जपतां  
 थाये जिनवर इस्योढे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शीख्यो  
 मुनिवर पासें महा मंत्र मन शुद्ध । परजव ते राजसिंह पृथिवीपति पाम्यो  
 परिगल रिद्ध । ए मंत्रधकी अमरापुर पोहतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥  
 ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले । दीठो श्रीपास  
 कुमारे पन्नग अधवलतो ते टाले । संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्र  
 जुवन अवतार ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ मनुशुद्ध जपतां मयणासुंदरी पामी प्रिय  
 संयोग । इण ध्यानें कुष्ट टल्युं जंमजुं रगत पित्तनो रोग । नि  
 श्रेंशुं जपतां नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि  
 कृष्ण जुजंगम घाल्यो । घरणी करवा घात । परमेष्टि प्रजावें हार फूलनो  
 वसुधा मांहि विख्यात ॥ कमलावतीये पिगल कीधो पाप तणो परिहार  
 ॥ सो० ॥ ११ ॥ ग्यणांगण जाती राखी गिहिणी पानी वाण प्रहार । पद  
 पंच सुणतां पांडुपति घर ते थड कुंतानार । ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर  
 जवदुःख जंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंवल संवलें कादव काढ्यां शकट



पांचशै मालं । दीधे नवकारें गया देवलोके विलसे अमर विमान । ए मं  
 त्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 आगे चोवीशी हुई अनंती । होशे वार अनंत । नवकार तणी कोइ आद  
 न जाणे एम जाखै अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें समस्यांसंप  
 तिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी सुरपद ते पण पामे जे कृत कर्म क  
 ठोर ॥ पुंरगिरिऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधरनें एकमोर । सह गुरु सन्मुख  
 विधियें समरतां सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ सूजीकारोपण तस्कर  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहांसेठें नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्ध ।  
 शेठनें घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि  
 ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र ॥ पंच सिंहाय महा व्रत पंचहु पंच सुमति  
 समकित्त । पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ ॥ सो० ॥  
 ॥ १७ ॥ कलश ( ढण्य ) नित जपीयें नवकार सार संपति सुखदाय  
 क । सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्री जगनायक । श्री अरिहंत सुसिद्ध  
 शुद्ध आचार्य जणीजें । श्री उवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजें । नव  
 कार सार संसारखे । कुशल लाजवाचक कहे । एक चित्तें आराधतां विधि  
 रुद्धि वंछित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः नवकार बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुख कारण जवियण समरुं श्रीनवकार । जिन शासन आगम  
 चनुदै पूरवसार । इण मंत्रनी महिमा कहितां नजहुं पार । सुरतरु जिम  
 चितित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करै करजोर ।  
 नुइ मंरुल विचरै तारै जवियण कोरु । सुरबंदै विलसै अतिसय जास अनंत ।  
 पहिले पद नमियै अरि गंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरै जेदै सिद्ध थया  
 जगवंत । पंचमि गति पुहता अष्ट करम करिहंत । कल अकल सरूपी  
 पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं बीजैपद बलि एह ॥ ३ ॥ गच्छ  
 जार धुरंधर सुंदर ससिहर सोम । करि सारण वारण गुणवत्तीसे थोम । श्रुत  
 जाण शिरोमणि सागर जेस गंजीर । तीजै पद नमियै आचारज गुण धीर  
 ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सुत्र जणवैसार । तप विध संयोगे जाषै अरथ

विचार । मुनिवर गुण युक्ता ते कहियै ज्वजाय । चौथै पद नमियै अह  
निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टालै पालै पंचाचार । तपशी गुण धारी  
वारी विषय विकार । तस थावर पीहर लोक मांहै जे साध । त्रिविधै ते  
प्राणसुं परमारथ गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण नायण नूत  
वेत्ताल । सवि पापपणासै थास्ये मंगल माल । इण समरचां संकट दूरटलै  
तत्काल । जंपै जिण गुण इम सुखर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति नवकार स्त०

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनवकार मंत्र आत्म रक्षा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं । सारं नव पदात्मकं । आत्मरक्षा करं वज्र  
पंजरार्जं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिर सिस्थितं  
। ॐ नमो सब सिद्धाणं । मुखे मुख पटवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरि  
याणं । अंगरख्या तिशायिनी । ॐ नमो ज्वझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ।  
ऊँमोलोए सबसाहूणं । मोचके पादयो सुजे । एसो पंच नसुंकारो । शिजा  
वज्रमईतले । सब पावपणासणो । वप्रो वज्र मयोवही । मंगलाणंच स  
बेसिं । खादि रंगार घातका । स्वाहां तंच पढं ग्येयं । पढमं हवइ मंगलं ।  
वप्रो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे । महाप्रजावा रक्षेयं । हृद्रो पद्रव नाशनी  
परमेष्ठी पदोद्वज्जता । कथिता पूर्व सूरिभिः । यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्ठी पढै  
सदा । तस्यनस्या ज्ञयं व्याधी । राधिश्चापि कदाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः

॥ ❀ ॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन बंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो पाश संखेसरो मन शुद्धं । नमो नाथ निश्चै करी एक बु  
द्धं । देवी देवतां अन्यनें शुं नमो गो । अहो जव्यलोको जुजा कां  
जमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोकना नाथने शुं तजो गो । पड्या पाशमां नूतने कां  
जजो गो । सुरधेनु बंभी अजा शुं अजो गो । महापंथ मूकी कुपंथे ब्रजो  
गो ॥ २ ॥ तजे कोण चितामणी काचमाटें । अहे कोण रासजने हस्ति  
साटें । सुरद्रुम उपार कुण आक वावे । महा मूढ ते आकुला अंत पावे  
॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं  
किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तें प्रजु पाश सेवा ॥ ४ ॥  
पूजो देव प्रजावती प्राणनाथं । सह जीवने जे करे ठे सनाथं । महा तत्व

जाणी सदा जेह ध्यावे । तेहनां दुःख दारिद्र दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मा  
नुषोने वृथा कां गमो ढो । कुशीलें करी देहनें कां दमो ढो । नहीं मुक्तिवासं  
विनां वीतरागं । जजो जगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न ज्ञाखे स  
दा हेत आणी । दयाज्जाव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे  
मेह वूठा । प्रभु पाश शंखेश्वरो आपतूठा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक वंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणोसर केरो शीश । गौतम नाम जपो निशदीश । जो  
कीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर बिलसै नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गि  
रिवर चढे । मनवंडित लीला संपजे । गौतम नामें नावे रोग । गौतम नामें  
सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक्रमा । तस नामें नावे हूक्रमा । जूत  
प्रेत नविमंमे प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल  
काय । गौतम नामें वाधे आय । गौतम जिनशासन शणगार । गौतम ना  
मैं जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घत गोळ । मनवंडित कापड  
तंबोल । घरेसुघरणी निर्मल चित्त । गौतम नामें पुत्र विनीत्त ॥ ५ ॥ गौत  
म उदयो अविचल ज्ञाण । गौतम नाम जपो जग जाण । मोहोटा मंदिर  
मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोड  
वारू बिलसै वंडित कोड । महीयल मानें मोहोटा राय । जो तूठे गौतमना  
पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी संगत मले । गौतम  
नामैं निर्मल ज्ञान । गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु ।  
गुरु गौतमना गुण ठे बहु । कहे लावाण्य समय कर जोरु । गौतम  
तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥ १०९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शोल सतीनो वंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी । सफल मनोरथ कीजियें ए ।  
प्रजातें ऊठी मंगलीक कामें । शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल  
कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी जस्तनी बेहेनमी ए । घट घट व्यापक  
अह्वर रूपें । शोल सतीमांहि जे वसी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय  
शिरोमणि । सुंदरी नामें रिषज सुता ए । अंग स्वरूपी त्रिनुवन मांहे । जे

ह अनोपम गुणलता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला बालपणायी । शीयलवती शुद्ध  
 आविका ए । अरुदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या । केवल लही व्रत आवि  
 का ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन बुआ धारिणी नंदनी । राजिमती नेम बल्लजा ए ।  
 जोवन वेशे कामनें जीत्यो । संजम लेइ देव दुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच नर  
 तारी पांख नारी । द्रुपद तनया बखानीयें ए । एक शो आठे वीर पूराणां  
 शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम । कौ  
 शल्या कुलचंद्रिका ए । शीयल सल्लणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालिका  
 का ए ॥ ७ ॥ कोशविक्रम शतानिक नामें । राज्य करे रंग राजीयो ए ।  
 तस घर घरणी मृगावती सती । सुरनुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुजसा  
 साची शीयलें न काची । राची नही विषयारसें ए । सुखडुं जोतां पाप पु  
 लाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । ज  
 नकसुता शीता शती ए । जग सहु जाणे धीज करंतां । अनल शीतल थ  
 यो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी । कूवाथकी जल  
 काढीयुं ए । कलंक उतारवा सतीय सुजद्रा । चंपा वार उवाढीयुं ए ॥  
 ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंभित । शिवा शिवपद गामिनी ए । जेह  
 ने नामें निर्मल थडयें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पां  
 क्रायनी । कुंतानामें कामिनी ए । पांख माता दशे दशारनी । बहेन पति  
 व्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रिविधें  
 तेहनें वंदीयें ए । नाम जपंतां पातिक जाए । दरिशाण दुर्गि निकंदियें ए  
 ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी । दमदंती तस गेहिनी ए । संकट पडतां  
 शीयलज राख्युं । त्रिशुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अर्जाताजग  
 जन पूजित । पुष्पचूला नें प्रजावती ए । विश्व विख्याता कामितदाता । शो  
 लमीसती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें आखी शान्नें साखी । उदयरनन आखे सु  
 दा ए । बाहाणुं वातां जे नर नणशे । ते जेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शेषजय अग्र समोसरथा । जला गुण नरचारे । सीधा साधु  
 अनंत । तीर्थ ते नसुरे । तीन कल्याणक तिहां थया । सुगते गयारे । ने

मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरि सेहरोरे । जस्तें  
 जराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबू चौमुख अतिजलो । त्रिजुवन तिलोरे । विम  
 ल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो । रत्नीयामणोरे ।  
 सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये । हीये हरखीयेरे । सीधा  
 श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी । रुद्धें जरीरे । मुक्ति गया  
 महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें । दुःख वारीयेरे । अरिहंत बिंब अ  
 नेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरज वंदीयें । चिरनंदीयेरे । अरिहंत देहरा आ  
 ठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो । पंचासरोरे । फलोधी थंजणपाश ॥  
 ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीजरोरे । जीरावलो जगनाथ ॥  
 ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा करोरे । राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥  
 ॥ ६ ॥ श्रीनामोलाई जादवो । गोमी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० ॥  
 नंदीश्वरनां देहरा । बावन जलारे । रुचक कुंमले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥  
 शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमा ठतीरे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा  
 फल तिहां । होजो मुज इहांरे । समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीराणपुरो रत्नीयामणुरे लाल । श्री आदीसर देव । मन मो  
 हुरे । उत्तंग तोरण देहसुरे ला० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ च  
 नवीश मंरुप चिहुं दिशेंरे ला० ॥ चतुमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिजुव  
 नदीपक देहरेरे ला० ॥ समोवरु नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥  
 देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें  
 जुहारया जौयरांरे ला० ॥ सूतां ऊठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥  
 ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहसुरे ला० ॥ मोटो देश मेवारु ॥ म० ॥ लख्ख  
 नवाणुं लगावि यारे ला० ॥ धन धनो पोरवारु ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ख  
 स्तर वसई खांतशुरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्राशाद बी  
 जा वलीरे ला० ॥ जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृता  
 स्थ हुं थयोरें ला० ॥ आज जयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर  
 तणीरे ला० ॥ दूरें गयुं दुख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोज

ठियंतरे ला० ॥ मागशिर माश मजार ॥ म० ॥ राण पुं यात्रा करेरे  
ला० ॥ समयसुंदर सुखकार म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ पुक्खजवड विजयें जयेंरे । नयरी पुंफरीगणी सार । श्री  
सीमंधर साहिवारे । राय श्रेयांस कुमार । ( जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह )  
॥ १ ॥ ( आंकणी ) ॥ मोहोदा न्हाना अंतरोरे । गिरुआ नवि  
दाखंत । शशि दारिण सायर वधेरे । केख वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥  
ठाम कुठाम न लेखेरे । जग वरसंत जजधार । करदोय कुष्ठमें वासियेरे ।  
आया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणें रे । उद्योतें श  
शि सूर । गंगाजल ते विहु तणा रे । ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥  
सरिखा सहने तारवा रे । तिम तुगे ठो महाराज । सुजथुं अंतर किम क  
रो रे । बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे । ते न  
वि होय प्रमाण । सुजरो माने सवि तणो रे । साहिव तेह सुजाण ॥ जि०  
॥ ६ ॥ वृषजलंठन माता सत्यकी रे । नंदन रुक्मणी कंत । वाचक जश  
इम वीनवे रे । जयजंजन जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिकुं प्रारंज ॥ ॥

॥ ॥ माता त्रिशला कुत्रावे पुत्र पालणे । गावे हालो हालो हालखानां  
गीत । सोना रूपानें वली रत्नं जमिठं पाजणुं । रेशम दोरी घूघरी वागे ठुम  
ठुम रीत । हालो हालो हालो हालो मारा नंदन ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्व प्रनुथी  
वरस अदीशें अंतरे । होशे चोवीशमो तीर्थकर जिन परमाण । केशी स्वा  
मी मुखयी एवी वाणी सांजली । साची साची हुड ते मारे अमृत वाण ।  
हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्रीके जिनराज । वीना वारे चक्री नहि  
हुवे चक्री राज । जिनजी पाश प्रनुना श्री केशी गणधार । तेहने वचनें  
जाण्या चोवीशमा जिनराज । मारी कूखें आव्या तारण तरण जिहाज ।  
मारी कूखें आव्या त्रण्य सुवन शिर ताज । मारी कूखें आव्या संव तीर  
थनी लाज । हुंनो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ मुजनें ठो  
होलो उपन्यो जे वेसुं गज अंवाणीयें । सिंहासन पर वेसुं चामर ठव थ

राय । ए सह लक्षण सुजने नंदन ताहरा तेजना । तेदिन संप्रारुने आन  
 द अंग न माय ॥ हा० ॥ ३ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारने आ  
 ठ ठे । तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश । नंदन जमणी जंगे  
 लंछन सिंह विराजतो । में पहले सुपने दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥  
 नंदन नवला बंधव नंदीवर्धनना तमे । नंदन प्रोजाइयोना देवरठो सुकुमाल  
 हसशे प्रोजाइयो कही देवर माहरा लामका । हसशे रमशेने वली चुंटी  
 खणशे गाल । हशशे रमशे ने वली वुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥  
 नंदन नवला चेना राजाना प्राणेजठो । नंदन नवला पांचशे मामीना प्राणे  
 ज ठो । नंदन मामलिआना प्राणेजा सुकुमाल । हशशे हाथे उ  
 ढाली कहीने नाहना प्राणेजा । आंख्यो आंजी ने वली ट्वकुं करशे  
 गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां ।  
 रतने जमीआ जालर मोती कशवी कोर । नीला पीलाने वली राता स  
 खे जातिनां । पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन  
 मामा मामी सुखमली सह लावशे । नंदन गजुवे प्ररशे लाडू मोती  
 चूर । नंदन सुखमां जोइने लेशे मामी प्रामणां । नंदन मामी कहेशे जीवो  
 सुख प्ररपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती । मा  
 री प्रत्रीजीने बेन तमारी नंद । ते पण गुंजो प्रखा लाखणसाई लावशे ।  
 तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे  
 लावशे लाख टकानो घूघरो । वली शूना मेनां पोपट ने गजराज । सार  
 स हंस कोयल तीतरने वली मोर जी । मामी लावशे रमवा नंद तमारे का  
 ज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्पन कुमरी अमरी जलकलशे नवरावीआ ।  
 नंदन तमने अमने केलीघरनी मांहे । फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने  
 मंमले । बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तम  
 ने मेरू गिरिवर सुरपतिये नवराविआ । निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ।  
 सुखमां ऊपर वारं कोटी कोटी चंद्रमा ॥ हा० ॥ १३ ॥ वारं ग्रह गणानो स  
 मुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ पण मूंकशुं । गजपर  
 अंबानी बेसानी मोहोटे नागरखेलशुं ।

सुखमली लेशुं नीशाली आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहो  
 टायाशोने परणावशुं । बहूवर सरखी जोनी लावशुं राजकुमार । सरखा  
 वेवांइ वेवाणुंने पधरावशुं । वर बहू पोखी लेशुं जोइ जोइने दीदार ॥ हा० ॥  
 ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेहु पहा नंदन ऊजला । माहरी कूखें  
 आव्या तात पनोता नंद । माहरे आंगण वूठा अमृत दूधे मेहुला । मा  
 हरे आंगण फलिआ सुतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गा  
 युं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं । जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ।  
 बलीमोरा नगरें वरणव्युं बीरुं हांलरुं । जय जय मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निंदावारक सशाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निंदा मकरजो कोइनी पारकीरे । निदानां बोल्या महा पापरे  
 वयर विरोध वाधे घणोरे । निंदा करतां न गणे माय बापरे ॥ नि० ॥ १ ॥  
 दूर बलंती कां देखो लुहरे । पगमां बलती देखो सहु कोयरे । परना मेला  
 में धोयां लूगडांरे । कहो केम ऊजला होयरे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप सं  
 जालो सहुको आपणोरे । निंदानी मूको परी टेवरे । थोने घणे अवगुणे  
 सहु जरयारे । केहनां नलिया चुए केहनां नेवरे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे  
 ते थाये नारकी रे । तप जप कीडुं सहु जायरे । निंदा करो तो करजो आ  
 पणी रे । जेम बूटकवारो थायरे ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको  
 तणोरे । जेहमां देखो एक विचाररे । कृष्णपरें सुख पामशोरे । समयसुं  
 दर सुखकारे ॥ नि० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ इति॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आनंदधनजी कृत स्तवन सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ कृष्णजिनेश्वर प्रीतम माहरोरे । कर्न चाहुरे कंत । रीज्यो  
 साहेब संग न परिहोरे । जांगे सादि अनंत ॥ कृष्ण० ॥ १ ॥ प्रीत स  
 गाईरे जंगमां सहु करे रे । प्रीत सगाई न कोय । प्रीति सगाईरे निरुपाधि  
 के कहीरे । सोपाधिक धन खोय ॥ कृष्ण० ॥ २ ॥ कोई कंत कारण  
 काष्ट जहाण करैरे । मिलसुं कंतने धाय ए मेलो नवि कहीये संजोवरे ।



मेलो ठाम न ठाम ॥ रुषज० ॥ ३ ॥ कोई पति रंजन अति वणो तप  
करैरे । पति रंजन तन ताप । ए पति रंजनमें नवि चित्त धरुंरे । रंजन  
धातु मिलाप ॥ रुषज० ॥ ४ ॥ कोई कहे लीलारे अलख अलख तणीरे ।  
लख पूरे मन आस । दोष रहित ने लीला नवि घट्टेरे । लीला दोष वि  
लास ॥ रुषज० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नैरे पूजन फल कहूंरे । पूज अखंफित  
एह । कपट रहित थई आतम अरपणारे । आनंद घन पद एह ॥ रुष० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मारुं मन मोहूंरे श्रीविमलाचलें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

पंथडो निहालुं रे बीजा जिनतणोरे । अजित २ गुण धाम । जे तें जीत्यारे  
तेणे हुं जीतियोरे । पुरुष किस्सुं सुऊ नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी  
मारग जोवतोरे । नूलो सयल संसार । जेणे नयणे करी मारगजोइयेंरे । नयण  
ते दिव्य विचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे । अंधो अंध पु  
लाय । वस्तु विचारैरे जो आगमें करी रे । तो चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ०  
॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे वाद परं परारे । पार न पहोचे कोय । अन्निमते वस्तु  
वस्तुगतें कहे रे । ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य  
नयण तणोरे । विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगेरें तरतम वासनोरे । वा  
सित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लवधि लही पंथ निहालसुंरे ।  
ए आस्या अबिलंब । ए जन जीवैरे जिनजी जाणजोरे । आनंद घन मत  
अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संजवजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रातनी रमीनें किहां थी आवियारे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संजवदेव त धुर सेवो सेवरे । लही प्रभु सेवन जेद । सेवन का  
रण पहेली नूमिकारे । अजय अद्वेश अखेद ॥ संजव० ॥ १ ॥ जयचंच  
लताहो जे परिणामनी रे । द्वेष अरोचक जाव । खेद प्रवृत्तीहो करतां  
थाकीयें रे । दोष अबोध लखाव ॥ संजव० ॥ २ ॥ चरमावर्त्तहो चरम  
करण तथा रे । जव परिणति परि पाक । दोष टले वली दृष्टी खुले जलोरे  
आपति प्रवचन वाक ॥ संजव ॥ ३ ॥ परिचय पातिक धातिक साधसूं

रे । अकुशल अपचय चेत । अथ अध्यात्म श्रवण मनन करीरे । परीशी  
 लन नय हेत ॥ संजव० ॥ ४ ॥ कारण जोगेंहो कारज नीपजेरे । एमां  
 कोई न वाद । पण कारण विण कारज साधीर्ये । ए जिन मत उनमाद ॥  
 संजव० ॥ ५ ॥ सुगंध सुगम करी सेवन आदरेरे । सेवन अगम अनूप  
 देजो कदाचित सेवक याचनारे । आनंदधन रस रूप ॥ संजव० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अग्निनंदन जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निनंदन जिन दरिशाण तरसीये । दरिशाण दुर्लभदेव । मत २ जेदेरे  
 जो जई पूगीये । सहु थापे अह मेव ॥ अग्नि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिशाण दोह  
 लूं । निरणय सकल विशेष । मदमें घेरयोरे अंधो किम करे । रवि शशि रूप  
 विलेख । अग्नि० ॥ २ ॥ हेतु विवादें हो चित्त धरी जोईये । अति दुरगम नय  
 वाद । आगमवादें हो गुरुगमको नही । ए शक्ती विषवाद ॥ अग्नि० ॥ ३ ॥  
 घाती डूंगर आना अतिघणा । तुज दरिशाण जगनाथ । धीठाई करी मार  
 ग संचरूं । सेंगू कोई न साथ ॥ अग्नि० ॥ ४ ॥ दरिशाण २ रटतो जो फरूं  
 तो रण रोज समान । जेहने पीपासा हो अमृत पाननी । किम चाजे विष  
 पान ॥ अग्नि० ॥ ५ ॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो । सीजे जो  
 दरिशाण काज । दरिशाण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी । आनंदधन महाराज  
 ॥ अग्नि० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत ( तथा ) केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा । दरपण जिम अविचार ।  
 सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणियें । परिसरपण सुविचार ॥ सु  
 ग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा । बहिरात  
 म धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो । परमातम अविच्छेद ॥  
 सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ आतम बुद्धें हो कायादिक ग्रहो । बहिरातम अ  
 वरूप । सुग्यानी । कायादिकनो हो साखी धर रह्यो । अंतर आतम रूप  
 ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदेवो पूरण पावनो । वरजित सकल

उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरु । इय परमात्म  
साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ वहिरात्म तज अंतर आतमा । रूप थई  
थिर जाव ॥ सु० ॥ परमात्मनुं हो आत्म जाववूं । आत्म अरण दाव  
सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आत्म अरण वस्तु विचारतां । अरमटले मति  
दोष ॥ सु० ॥ परम पदार्थ संपति संपजे । आनंदघन रस पोष सु० ॥  
सुमति० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलजिनस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी । विविध जंगी मन मो  
हेरे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता । उदाशीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥  
सर्व जंतु हित करणी करुणा । कर्म विदारण तीक्ष्णारे । हाना दाना रहित  
परणामी । उदाशीनता विक्ष्णारे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख वेदन इच्छा  
करुणा तीक्ष्ण पर दुख रीजेरे । उदाशीनता उन्नय विजक्ष्ण । एक ठामें  
केम सीजेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अन्नयदान ते मलक्षय करुणा । तीक्ष्णता  
गुण जावेरे । प्रेरण विण कृत उदाशीनता । इम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥  
॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता । निग्रंथता संयोगेरे । योगी जोगी व  
क्ता मौनी । अनुपयोगि उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जंग त्रि  
जंगी । चमत्कार चित्त देतीरे । अचरिजकारी चित्र विचित्रा । आनंदघन  
पद लेतीरे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागगुर्जरी अंबरदेहो मुरारी हमारो० ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनहुं किमही न बाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम  
जतन करीनें राखुं । तिम तिम अलखुं जाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वास  
र वसती ऊजरु । गयण पायालें जाय । साय खायने सुखकुं थोथुं । एह  
उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ सुगतितणा अमिल्लाषी तपीया । ज्ञानने  
ध्यान अभ्यासें । वयरीहुं कांइ एहकुं चिते । नाखे अवलें पासें हो ॥ कुं०  
॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हार्थे । नावे किरणविध आंकुं । किहां कणे

જો હઠકરી હંદકું । તો વ્યાજ તાણી પરે વાંકું હો ॥ કું૦ ॥ ૪ ॥ જો ઠગ  
કહું તો ઠગતો ન દેહું । સાહુકાર પણ નાહી । સર્વ માંહેને સહુથી અલ  
ગું । એ અચરિજ મન માંહી હો ॥ કું૦ ॥ ૫ ॥ જે જે કહું તે કાન ન ધારે ।  
આપમતે રહે કાલો ॥ મુર નર પંક્તિ જન સમજાવે । સમજે ન મહા  
રોસાલો હો ॥ કું૦ ॥ ૬ ॥ મેં જાણ્યું એ લિંગ નપુંસક । સકલ મરદને ઠેલે ।  
વીજી વાતે સમરથ બે નર । એહને કોડન જેલે હો ॥ કું૦ ॥ ૭ ॥ મન  
સાધ્યું તેણે સગલું સાધ્યું । એહ વાત નહીં છોટી । એમ કહે સાધ્યું તે નવી  
માનું । એ કહિવત્તે મોટી હો ॥ કું૦ ॥ ૮ ॥ મનહું ડુરારાધ્ય તે વસ આણું ।  
તે આગમથી મતિઆણું । આનંદધન પ્રજુ માહરું આણો । તો સાચું કરી  
જાણું હો ॥ કું૦ ॥ ૯ ॥ ઇતિ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ અથ દેવ વાંદવાનો વિધિ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ પ્રથમ ડરિયાવહી પઢિકમવાથી માંનીને (યાવત્) લોગસ્સ કહી  
પઢી ઉત્તરાસણ કરી । ચૈત્યવંદન । નમુત્યુણં કહી, અનુધું જયવીઅરાય ।  
આજવ મલંકા સૂધી હાથ જોમી । કહે । (વલી) ચૈત્યવંદન, કહીને । નમુત્યુ  
ણં । કહી, (યાવત્) ચાર થોયો કહીયે ઠીયેં તિહાં સૂધી વધું કહેહું । પઢી નમુ  
ત્યુણં કહી । (વલી) ચાર થોયો કહીયેં ત્યાં સૂધી વધું કહેહું । પઢી નમુત્યુણં  
(તથા) બે જાવંતી કહી । સ્તવન કહી । અનુધું જયવીઅરાય આજવમલં  
કા સૂધી કહી । પઢી ચૈત્યવંદન કહી । નમુત્યુણં કહી । (આલો) જય વીય  
રાય કહેવો ॥ ઇહાં સવારે દેવ વાંદવાં । (તેમાં) મન્હ જિણાણં ની સજ્ઞાય  
કહેવી । અને મધ્યાન્હે (તથા) સાંજે દેવ વાંદવામાં સજ્ઞાય ન કહેવી ॥  
ઇતિ દેવ વાંદવાનો વિધિ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ જ્ઞાન વિમલજી કૃત, ચઠમાશી દેવવંદન વિધિ: ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ પ્રથમ ડરિયાવહી પઢિકમી કાનસગ્ગ કરી । લોગસ્સ૦ કહી  
એક સમાસમણ દેઈ । ડઢાકા૦ શ્રી ક્ષુબ્ધજિન આરાધનાર્થ ચૈત્યવંદન કરું ।  
એમ કહી ચૈત્યવં કરે ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ શ્રી આદિ જિન ચૈત્ય વંદન ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ પ્રથમ જિનેસર ક્ષુબ્ધ દેવ । સવ્વઠ્ઠી ચવિયા । વદિ ચઠ્યે

आषाढनी । शक्रे संस्तविया । अष्ठमी चैत्रह वदि तणी । दिवसें प्रनुजा  
या । दिहा पण तिणहीज दिने । चनुनाणी थाया । फागण वदि इग्या  
रसी ए । ज्ञान लहे शुभ ध्यान । महा वदि तेरशें शिव लह्या । परमानंद  
निधान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां नमुत्थुणं । अरिहंत चेइयाणं । वंदण वत्तिया कही ।  
एक नवकारनो कावसग्ग पारी । ४ थुई कमसें कहियें । ते लिखिये ठीयें ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय जोनो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषभ जिन सुहाया श्री मरुदेवी माया । कनक वरण का  
या मंगला जासजाया । वृषभ लंठन पाया देवनर नारी गाया । पण  
सय धनु ठाया ते प्रनु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवी  
श उदार । एक नेम विना सवि समवसरया निरधार । गिरि कमणें आ  
वी पोहता गढ गिरनार । चैत्री पूनम दिनें ते वंदूं जय कार ॥ २ ॥  
ज्ञाता धर्म कथांगें अंत गरु सुत्र मजार । सिद्धा चले सीधा बोलया  
बहु अणगार । ते माटें ए गिरि सवि तीरथ शिरदार । जिन जेठे थावे ।  
सुख संपति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेश्वरी शासननी रखवाल । ए ती  
रथ केरी सानिध करे संचाल । गिरुओ जस महिमा संपति कालें  
जास । श्रीज्ञान विमल सूरी नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां । नमुत्थुणं जावंती (वे) कही नमोर्हतं कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ललनानी देशी ) आदि करन अरिहंतजी । जुलगमी अवधार  
ललना ॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीयें । वंजित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥  
आदिकरण अरिहंतजी ( ए आंकणी ) उपगारी अवनी तले । गुण अनंत  
जगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षयकला । वरते अतिशय धाम ॥  
ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासें पण जेहनें । अमृत फलनो आहार ॥ ल  
लना । ते अमृत फलनें लहै । ए जुगतुं निरधार ॥ ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश  
इहाग ठे जेहनो । चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ जस्तादिक थया केवली  
अनुभव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नात्रिराय कुल मंरुणो

मरु देवी सर हंस ॥ ललना ॥ रुषजदेव नित वंदियें । ज्ञान विमल अवतं  
स ॥ ललना ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीरुषज जिन स्त० ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पत्नी जय वीरराय अर्धो कहवुं । एक खमासमण देई । इच्छा०  
श्री अजितनाथजी आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित नाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुद्धि वैशाखनी तेरशें । चविया विजयंत । माह शुद्धि आठमे  
जनमिया । बीजा श्री अजित । माहशुद्धि नवमें थया । पोषी इग्यार  
स । उज्ज्वल उज्ज्वल केवली । थया अक्षय कृपास । वैशाख शुक्ल पंचमी  
दिने ए । पंचम गति लह्याजेह । धीर विमल कविरायनो । नय प्रणमे धरी  
नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पत्नी नमोत्थुणं अरिहंत चे० कही । एक नवकारको  
कावसग करके । शुईकी गाथा कहै ( इसी तरै सब ठिकाणें विध करवो ) ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित जिन पतीनो । देह कंचन जरीनो । चविकजन नगीनो  
जेहथी मोहलीनो । हुं तुज पदलीनो । जेम जलमांहे मीनो । नवि होय  
ते दीनो । ताहरे व्यानै पीनो ॥ १ ॥ इति अजित नाथ थोय ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संजवनाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तम त्रैवेयक थकी । चविया श्री संजव । फागुण शुद्धि आ  
ठम दिने । शुद्धि चउदसी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासै जनमीया । त  
णी पूनम संजम । कार्तिक वदी पंचमी दिने । लहे केवल निरूपम । पंच  
मी चैत्रनी उज्जली ए । शिव पोहोता जिनराज । ज्ञान विमल प्रभु प्रणम  
तां । सीजे सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन संजववार । लंअनै अश्वधार । चवजलनिधि तार । काम  
गद तीव्र दार । सुरतर परिवार । दूसमाकाल मार । शिव सुख किरता  
र । तेहना ध्यान सार ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अग्निनंदन जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जयंत विमान थकी चव्या । अग्निनंदन राया । वैशाख शुदि चौथें  
माघ सुदि बीजे जाया । माहाशुदि वारशें ग्रहिय दिख्ख । पोषशुदि चउदस ।  
केवल शुदि वैशाखनी । आठमे शिव सुख रस । चउथा जिनवरनें नमी ए ॥  
चउगाति भ्रमण निवार । ज्ञान विमल गणपति कहे । जिन गुणनो नही पारा ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निनंदन वंदो । साम्य माकंद कंदो । नृप संवर नंदो । व  
र्षिता शेष कंदो । तम तिमिर दिणंदो । लंठनें वानरिंदो । जस आगल  
मंदो । सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या । मेहलीनें जयंत । पंचमी गति दाय  
क नमुं । पंचम जिन सुमति । शुदि वैशाखनी आठमें । जनम्या तिम सं  
जम । शुदि नवमी वैशाखनी । निरुपम जस शम दम । चैत्र इग्यारस कुज  
ली ए । केवल पामें देव । शिव पाम्या तिणे नवमीयें । नय कहे करो तस  
सेव ॥ १ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति सुमति आपें दुःखनी कोमि कापे । सुमति सुजन  
व्यापे । बोधिनु बीज व्यापे । अविचल पद थापे । जाप दीप प्रतापें ।  
कुमति कदही नावें । जो प्रनु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति सुमति जिन ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पद्म प्रज्ञ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम ग्रेवेयकथी चव्या । माहावदि षष्ठ दिवसें । कातीवदि बा  
रसें जनम । सुर नर सवि हरषे । वदि तेरस संजम ग्रहे । पद्मप्रज्ञ स्वामी  
चैत्री पूनम केवली । वलि शिवगति पामी । मृगशिर वदि इग्यारसें । रक्त  
कमल समवान । नय विमल जिन राजनुं । धरीयें निरमल ध्यान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पद्मप्रनु सोहावे । चित्तमां नित्य आवे । सुगति वधु मनावे ।

रक्त तनु कांति पावे । दुःख निकट नावे । संतती सौख्य पावे । प्रभु  
गुणगण ध्यावे । अष्ट महा सिद्धि थावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गढा ग्रैवेयकथी चवी । जिनराज सुपास । जादरवा वदि आठ  
मे । अवतरिया खास । जेठ सुक्ल बारसी जणया । तस तेरसे संजम । फा  
गुण वदि गढे केवली । शिव लहे तस सत्तमि । सत्तम जिनवर नामथी ए ।  
साते ईति समंत । ज्ञान विमल सूरि निहु लहे । तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फले कामित आशे नामथी दुःख नाशे । महिम महि प्रकाशे सा  
तमा श्री सुपासे । सुरनर जस दास । संपदानो निवास । गाय जवि गुणरास  
जेहना धरी उखास ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चंद्र प्रजजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रज जिन आठमा । चंद्रप्रज सम देह । अवतरीया विजयं  
तथी । वदि पंचमी चैत्रेह । पोष वदि बारसें जनमीया । तस तेरसे साध  
फागुण वदिनी सातमे । केवल निराबाध । जाद्रव सातम शिव लह्या ए ।  
पूरी पूरण ध्यान । अष्ट महासिद्धि संपजे । नय कहे जिन अजिधान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ्र नरगति पामी उद्यमें धर्मधामी । जिन नमो शिरनामी  
चंद्र प्रज नाम स्वामी । मुक्त अंतरजामी जेहमां नहिय खामी । शिवगति  
चरगामी सेवना पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोरा सुविध जिणंद नाम । बीछं पुष्प दंत । फागुण वदि नव  
में चव्या । मेहली सुर आनंत । मृग शिर वदि पंचमें जणया । तस गढें  
दिह्या । काती शुद्धि त्रीजे केवली । दिये बहु परें शिह्या । शुद्धि नवमी जा  
द्रवा तणी ए । अजर अमर पद दोय । धीर विमल सेवक कहे । ए नमतां  
सुखहोय ॥ १ ॥ इति स्तवर्न ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुविधि जिन ऋदंत । नाम बली पुष्प दंत । सुमति तरुणि  
कंत । संतथी जेह संत । कीयो कर्मदुरंत । लहि लीला वरंत । नव ज  
लधि तरंत । तेनमीजे महांत ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ❀ ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत कल्पथकी चव्या । शीतल जिन दशमा । वदि वैशा  
षनी ठठे । जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ महावदि बारस जनम दिख्या । तस  
बारसें लीध । वदि पोष चउदश दिने । केवली परसिध । वदि बीजे वै  
शाखनी ए । मोहू गया जिनराज । ज्ञान विमल जिनराजथी । सीजे स  
गला काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण शीतल देवा बालही तुझ सेवा । जेम गज मन रेवा ।  
तुंही देवाधि देवा । पर आण वदेवा शमठे नित्यमेवा । सुख सुगति लहे  
वा हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अच्युत कल्पथकी चव्या । श्रेयांस जिणंद । जेठ अंधारी दि  
वस ठठें । करत बहु आनंद । फाणुण वदि बारसें जनम । दीक्षा तस ते  
रस । केवली माह अमावसि । देसना चंदन रस । वदि आवण त्रीजे ल  
ह्या ए । शिव सुख अखय अनंत । सकल समीहित पूरणो । नय कहे ए  
जगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सविजिन अवतंस । जास इख्याग वंश । विजित मदन कंस  
शुद्ध चारित्रहंस । कृत जय विध्वंस । तीर्थनाथ श्रेयांस । वृषज ककुद अं  
श । ते नमुं पुण्य वंश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वासु पूज्य चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणतथी इहां आविया । ज्येष्ठ शुदी नवम । जनम्या फाणु

ए चौदशी । अमावसी संजम । माह शुद्धि बीजे केवली । चौदशि आषा  
ढी । शुद्धि शिव पास्या कर्म कष्ट । सवि दूरे काढी । वासुपूज्य जिन वारमा  
ए । विद्रुम रंगे काय । श्री नयविमल कहे इस्थुं । जिन नमतां सुख थाय ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वसुदेव नृप तात । श्री जयादेवी मात । अरुण कमलगात ।  
महिष लंछन विख्यात । जसगुण अवदात । शीत जाणे निवात । होय नित  
सुखशात । ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या । माधव शुद्धि वारस । शुद्धि महात्रीजे  
जाया । तस चोथे व्रत रस । शुद्धि पोष ठेठे लह्या । वर निर्मल केवल ।  
वदि सातमि आषाढनी । पास्या पद अविचल । विमल जिणेसर वंदिअं  
ए । ज्ञान विमल करी चित्त । तेरसमो जिन नितु दिये । पुण्य परिघल  
वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल विमल जावे वंदतां दुःख जावे । नव निधि घर आ  
वे विश्वमां मान पावे । सुवर लंछन फावे जोगिजर स्वेद थावे । मनु  
विनति जणावे । स्वामितुं ध्यान ध्यावे ॥ १३ ॥ इति विमलनाथ स्तुति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत थकी चविया उहां । आवणवदि सातम । वैशाखवदि  
तेरसी दिनें । जनम्या चउदस रातम । वदि वैशाखे चउदसि । केवल पुण्य पा  
म्या । चैत्रशुद्धि पंचमीदिने । शिववनिता काम्या । अनंतजिनेश्वर चउदमा  
ए । कीधा दुष्मन अंत । ज्ञानविमल कहेनामथी । तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनंत जिन नमीजें कर्मनी कोट ठीजें । शिव सुख फल ली  
जें सिद्धि लीला वरीजें । बोधि बीज मोह दीजें एतुं काज कीजें । सुज  
मन अति रीजे स्वामितुं कार्य सीजे ॥ १ ॥ ❀ ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाख सुदि सातमे । चविया श्री धर्म । विजय थकी माह मास  
नी । शुदि त्रीजें जनम । तेरस माहिं ऊजली । लीयें संजम जार । पोषि  
पूनमे केवली । गुणना जंडार । जेठी पांचमि ऊजली ए । शिवपद पाम्या  
जेह । नय कहे ए जिन प्रणमतां । वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धर्म जिन पतीनो ध्यान रस मांहे जीनो । वररमाण शचीनो ।  
जेहने वर्ण लीनो । त्रिनुवन सुख कीनो लंठने वज्र दीनो । नवि होय ते  
दीनो जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञाद्रवा वदि सातम दिने । सब्बथी चविया । वदि तेरस जेठ  
जाया । दुःख दोहग समीया । जेठि चउदस वदि दिने । लीये संजमवेम ।  
केवल उज्जल पोसनी । नवमी दिन खेम । पंचम चक्री परवडा ए । शोल  
मा श्रीजिनराज । जेठ वदि तेरशें शिव लह्या । नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन पति जयकारी पंचमो चक्रधारी । त्रिनुवन सुखकारी सप्त  
जय ईतिवारी । सहस चउसठनारी चउद रत्नाधिकारी । जिन शांति जीतारी  
मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली मांहे कर्पूर चोली । पेहरी सीत  
पटोली वासियें गंधधूली । जरी पुष्पपटोली टालीयें दुःख होली । सवि  
जिनवर टोली पूजीयें जाव लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार तेम उपांग  
बलि बार । मूल सुत्रते चार नंदी अनुयोगप्रार । दशपयन्न उदार ठेदखद व्रत्ति  
सार । प्रवचन विस्तार ज्ञाप्य निर्युक्तिसार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा जैन  
दृष्टी सुरिंदा । करे परमानंदा टालता दुःखछंदा । ज्ञानविमल सुरिंदा साम्य  
माकंद कंदा । वरविमल गिरिंदा ध्यानथी नित्य जहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( मोतीमानी देशी ) सकल समीहित सुरतरु कंदा । शांति कर

श्री शान्ति जिणंदा । साहिवा जिनराज हमारा । मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ ( ए आंकणी ) त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो । पलक मात्र न रहूं हिवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे । तूं ह्यो पण तुहें नवि ठंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुहें कोइशुं नेह न लावो । वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समजे पण गोरु दीधायी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले । जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्तिखांची मन मांहे आयो । सहज स्वभावें पण में जाय्यो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची । तुम पदसे वा अंके जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कवजे आव्यातो वूदीजें । जेह सुह मांगे तेहज दीजें ॥ सा० ॥ अजेद पण जो मनमां मलशो । कवजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अखख्य जाव निधी तुम पास । आपी दासने पूरो आश । ज्ञान विमल समकित प्रभुताई । दीधी साहेव एह वडाई ॥ सा० ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें सव्वथी चविया । वदि चउदश वेशा खनी जिन कुंथु जणीया । वदि पंचमी वैशाखनी लीये संजम चार । शुद्धि त्रीजें चैत्रहतणी लहे केवल सार । पडवा दिन वैशाखनीए पाम्या अविचल ठाण । ठठा चक्री जयकरु ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुंथु दयाला नाग लंठन सुहाला । जस गुण शुद्ध मा ला कंठे पेहरो विशाला । नमति भवि त्रिकाला मंगल श्रेणि माला । त्रिभुवन तेजाला ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति कुंथुनाथ जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अरुनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरस्वत्यथी आविया फागुण शुद्धि बीजें । मृगशिर शुद्धि दशमी जणया अरदेव नमीजे । मृगशिर शुद्धि एकादशी संजम आदरीयो काती उज्ज्वल वारसैं । केवल गुण वरीप्रो । शुद्धि दशमी मृगशिर तणी ए शिवपद लहे जिननाथ । सत्तम चक्रीनें नमुं नय कहे जोमी हाय ॥ १८ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरजिन ए जुहारुं कर्मनो क्लेश वारुं । अहनिश संजारुं ताह  
रुं नाम धारुं । कृत जय जय कारुं प्राप्त संसार सारुं । नविहोय ते सारुं  
आपणो आप तारुं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चव्या जयंत विमानथी फागुण शुदि चतुर्थे । मृगशिर शुदि  
इग्यारसें जनम्या निग्रंथे । ज्ञान लह्या एकणदिनें कल्याणक तीन । फागु  
ण सुदि बारसें लहे शिव सदन अदीन । मल्लिजिणेसर नीलमाए । उगणी  
शमा जिनराज । अणपरण्या अणचूप पद । नवजल तरण जहाज ॥ १९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन मल्ली महिला वानठे जेहनीला । ए अचरिज लीला स्त्री  
तणें नाम पीला । दुशमन सवि पील्या स्वामि जोठे वसीला । अविचल  
सुख लीला दीजियें सुणि रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लिजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । श्रावण शुदि पूनम । आठम जेठ  
अंधारनी । थयो सुव्रत जनम । फागुण शुदि बारस व्रते । वदि बारसें ज्ञान  
फागुणनी तेम जेठनी । नवमी कृष्ण निर्वाण । वर्ण श्याम गुण उज्ज्वा । ति  
हुयण करे प्रकाश । ज्ञान विमल जिनराजना । सुरनर नायक दास ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुनि सुव्रत स्वामी हुं नमुं शीश नामी । मुज अंतर जामी का  
मदाता अकामी । दुःखदोहग वामी पुण्यथी सेव पामी । शम्या सर्व दा  
रामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ २० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आशो शुदि पूनम दिने प्राणतथी आया । श्रावणवदि आ  
ठम दिनें नमी जिनवर जाया । वदि नवमी आषाढनी थया तिहां अणगा

र । मृगाशिर शुद्धि इग्यारसें वर केवल धार । वदि दशमी वैशाखनी ए । अ  
खय अनंता सुख । नय कहे श्री जिननामथी । नासे दोहग दुख ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमी जिनवर मानो जेह नही विश्वगानो । सुत वप्रा मानो  
पुण्य केरो खजानो । कनक कमल वानो कुंज ठे जे कृपानो । सविजुवन  
प्रमानो तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवन्दन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । काती वदि वारस । श्रावण शुद्धि पंचमी  
जएया । यादव अवतंस । श्रावण सुद्धि ठे संजमी । आसोज अमावस नाण ।  
शुद्धि आपाढनी आठमे । शिवसुख लहे प्रमाण । अरिष्ठ नेमि अणपरणीया ए ।  
राजिमतीना कंत । ज्ञान विमल गुण एहना । लोकोत्तर व्रतंत ॥ २२ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गया शस्त्रागारें शंख निज हाथ धारें । कियो शब्द प्रचारें वि  
श्व कंथो तिवारें । हरि संशय धारे । एहनी कोड सारे । जयो नेम कुमारे ।  
बालथी ब्रह्म चारे ॥ १ ॥ चार जंबू द्वीपें विचरंता जिन देव । अरुधात  
की खंने सुरनर सारे सेव । अरु पुष्कर अरथें उणिपरें वीस जिनेश । संप्र  
तिए सोहे पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम प्रवजल नि  
धिने तारे । कोहादिक मोटा मन्त्रतणा प्रय वारें । जिहां जीवदया रस स  
रस सुधारस दाख्यो । प्रवि प्राव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन  
शासन सान्निध्य कारी विघन विरारे । समकित दृष्टी सुर महिमा जास वधारे ।  
शेजुंज गिरि सेवो जिम पामो प्रवपार । कवि धीर विमलनो शिष्य कहे  
सुखकार ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहो रहोरे यादव दो घनीया । दोघनीयां दोचार घनीयां । रहो  
रहोरे यादव० ॥ ( ए आकणी ) । मोज महिराण शिवादेवी जाया । तुमें जो  
आधार अम्वडीयां ॥ १ ॥ रहो० ॥ नाह विवाह चाह करीआए । क्युं जावत

फिर रथ चमीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा । गोमदी  
 ए पशुपंखी चमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद विठानं में बली जानं । करुं वीन  
 ति चरणे पमीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहते वरिस समोवड । न गमे  
 स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी बिलपति जोवन । बानी  
 वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टजवांतर नेह निवाहत । नवमे जवते वीळ  
 मीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि  
 चमीयां ॥ रहो० ॥ पियुकर निजशिरें हाथे देवा । ब्रतचाखे चारित्र शेलडीयां ॥  
 रहो० ॥ ५ ॥ जादववंश विनूषण नेमजी । राजुल मीठी बेलमीयां ॥ रहो० ॥  
 ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंख मीयां ॥ रहो० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी ज  
 नम त्रिनुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर  
 उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण  
 नूर । श्रावण शुदि आठमें लह्या । अविचल सुख जरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य बल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे वि  
 धननें जे विनारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडि वारे । मुळ प्राणाधारे  
 मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुजव  
 लयलावे केवल ज्ञान पावे । षट्जे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सवि जिनवर  
 प्राण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार  
 दश सत्य प्रकार पंचखाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेजया जिहां  
 उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाला  
 जे महा लोग पाला । सुरनर महिपाला शुद्ध दृष्टी कृपाला । नय विमल  
 विशाला ज्ञान लह्मी मयाला । जय मंगल माला पास नामें सुखाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारे माथे पचरंगी पाव सोनेरो ढोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

प्रभुपासजिणेसर जुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिबजी ॥ ली  
ला अलवेसर धीरम मंदर जूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत  
शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुं भवि निरमल जलधरो ।  
सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे  
जोगी तुमगुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्चयवासी  
निजमते ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमते ॥ सा० ॥  
॥ २ ॥ षट् दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासने ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशा  
ले सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानने ज्ञाने आतम ध्याने आत  
मा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥  
एक अनेके बहुत विवेके देखिये ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अ  
कामी लेखिये ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी जो बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥  
आपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयत चारी नि  
यत विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥  
सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणे ॥ सा० ॥ मोहारि विना  
शी तुं जित काशी कविजणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक गुणमणी  
लायक नाथ ठे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक गुणनिधि दायक हाथ ठे ॥  
सा० ॥ जित मन मथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति  
एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगे पुदगल जोगे ते  
दद्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नविरह्या ॥ सा० ॥ तुंहेतु  
समीयो सुरवर नमियो सहकहे ॥ सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कृणालहे  
॥ सा० ॥ ७ ॥ इम तुम गुण शुणीये कर्मने हणीये पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि  
अवगणिये सेवक गणीये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिजुवन उंदा सं  
थुणे ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिदा तुमपय वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ शुद्धि आपाढ षष्ठ दिवसे प्राणतथी चवीया । तेस चैत्रह शुद्धि  
दिने त्रिशलाये जणीया । मृगशिर वदि दशमी दिने आपे संजम आराधे



शुद्धि दशमी वैशाखनी वर केवल साधै । काती कृष्ण अमावसीए । शिव  
गति करे उद्योत । ज्ञान विमल गौतम लहे । पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लह्यो जवजल तीर धर्म कोटीर हीर । दुरति रज समीर मोह  
मूसार सीर । दुरित दहन नीर मेरुथी अधिक धीर । चरम श्री जिनवीर  
चरण कल्पद्रु कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला पुण्य नीर प्रवाला । जग  
जंतु दयाला धर्मनी शास्त्र शाला । कृत सुकृत सुगाला ज्ञान लीला विशाला  
सुरनर महिपाला वंदता ठे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी द्वादशांगी  
रचाणी । सगुण रयण खाणी पुण्य पीयूष पाणी । नवम रस रंगाणी सिद्धि  
सुखनी निशाणी । दुह पीलण वाणी सांजजोन्नाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत  
रखवाला जे वली लोग पाला । समकित गुणवाला देव देवी कृपाला । करो मं  
गल माला टालिने मोह हाला । सहज सुख रसाला बोध दीजें विशाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज गर्ईथी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदो वीर जिणेंसर राया । त्रिशला माता जायाजी । हरि लंठन कंचन  
वनकाया । सुज मन मंदिर आयाजी ॥ वंदो वीर ० ॥ १ ॥ दुषम समये शासन जे  
हना । शीतल चंदन ढायाजी । जे सेवतां जविजन मधुकर । दिन दिन होत स  
वायाजी ॥ वंदो ० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी । जस मनमां जिन  
आयाजी । वंदन पूजन सेवन कीधी । तेकाजननी मायाजी ॥ वंदो ० ॥ ३ ॥ कर्म  
कठिन जेदन बलवत्तर । वीर विरुद जिन पायाजी । ए कल मल अतुली बल  
अरिहा । दुशमन दूर गमायाजी ॥ वंदो ० ॥ ४ ॥ वंजित पूरण संकट चूरण  
तुं मात पिता तुं सहायाजी । सिंहपरें चारित्र आराधी । सुजश निशान ब  
जायाजी ॥ वंदो ० ॥ ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजे । वर्धमान जिनराया ।  
जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे । शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥ वंदो ० ॥  
॥ ५ ॥ इति ॥ इहां । पूरण जय वीरराय कहेवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल मंगलकार एही । सिद्ध सकल पयछाण । स्याद्वाद सा

धन पद एही अध्यात्म गुणगण ॥ १ ॥ (सहीए नमो जिणाणं) ॥ २ ॥ ए  
 (आंकणी) ॥ बिहुं तेरलख्ख सग्ग कोमि जवणवडं । सासय जिणहरमाणं ।  
 तेरशें नव्याशी कोमो भग्गसठि बिबह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही० ॥ मेरु  
 वैतादय वखारा कंचन । यमक कुंभद्रह जाणुं । एकत्रीश ओगएयासी  
 जिनवर । मानवलोके वखाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ त्रिलख डक्यासी सहस चारसो  
 त्र्याशी अधिक बिब जाणुं । रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें । सुंदर अशी चेइया  
 णुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अरुशत शय सहसा चालीसा । बिबनणुं परिमाणं ।  
 सरवाले बत्रीशसें गुण सठी । तिर्यक् लोके चेइयाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा  
 त्रण लख सहस एकाणुं । चउसय तेवीस परिमाणं । साठ चौवारा अवर  
 त्रिवारा । रुचक कुंड नंदीगणं ॥ स० ॥ बार देवलोके नवत्रेवेयके । अ  
 नुत्तर पंच विमाणं । लाख चोराशी सहस सत्ताणुं । त्रेवीश चेई जाणुं  
 ॥ ७ ॥ स० ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं । सहस जुमालीस  
 आणुं । सातशें साठ ऊपर उर्ध्व लोके । जिन पन्निमा मन आणुं ॥ ९ ॥  
 ॥ स० ॥ त्रिजुवन मांहे सासय जिनहर । सगवन्न लख्ख वसें व्याशी । आठ  
 कोमि अथ प्रतिमा संख्या । सुणजो सम कित वासी ॥ १० ॥ स० ॥ पन्न  
 रशें कोडी बैतालीश कोमो । तेम अछावन्न लख्खा । ठत्रीश सहस अशी व  
 लि साधिक । सासय बिबनी संख्या ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिवारें  
 प्रतिमा । चोमुखें शत चौवीश । पांच सजा तिहां साठ वधारो । एकशत  
 अशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ ऋष्य चंद्रानननें वर्धमान । वारिखेण  
 चउनामैं व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या । जिन घर पन्निमा मानें ॥ १३ ॥  
 स० ॥ सकल सुरासुर जावना जावे । समकित गुण दीपावे । परित्त संसार  
 करी शिव जावे । कुमति तेम न जावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पातालेनें तिर्यक  
 लोके । पणसय धणु परिमाण । कर्णे सग्गकर पणसय धणु माणुं । सासय  
 असासय जाण ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु । शेठुंजा  
 दिकें बहुला । ते सविहूने त्रिविधें नमनां । पातक जाये सगला ॥ १६ ॥  
 स० ॥ ज्ञानविमल प्रनुनाम जपंता । लहीये कोडि कट्याण । मनह  
 मनोरथ सगला सीजे । जनम सफल सुविहाण ॥ १७ ॥ स० ॥ जयहर

जगवंताणं जयतुर । नमो जिणाणं सहीए । नमो अविचल आदि गराणं ।  
सहीए नमो अरिहंताणं ॥ १८ ॥ सही० ॥ इति श्री सर्वजिन नमस्कारः ॥  
( इहां ) एक लोगस्सनो कानुस्सग्ग “चंदेसु निम्मज्जयरा” सूधी एक जण करे  
ते कानुस्सग्ग पारी । पढी चार थोयो कहेवी ( ते लखीयें नीयें. ) ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषजदेव नमुं गुण निर्मला । दूध मांहे जिम जेजी सीतोपला ।  
विमल शील तणा सिणगारब्बे । जवजव भुज्जे चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत  
थया जिनकेवली । जेह हसे विचरंतां जेवली । जेह असासय सासय त्रिहुं  
जगें । जिन पफिमा प्रणमुं नित जगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम क्षीर महोदधी  
त्रिपदी गंग तरंग करी वधी । जविक देह सदा पावन करे । दुरित ताप  
रजो मल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनप शासन ज्ञासन कारिका । सुर सुरी जिन  
आणा धारिका । ज्ञान विमल प्रचुतायें दीपता । दुरित दुष्ट तणा जय जीप  
ता ॥ ४ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिन स्तुति ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां एकजण मोटी शांति कहे ( अने ) बीजा सर्व कानु  
सग्गमां सांजलै । पढी सर्वे जणा कानुसग्ग पारीने । प्रगट एक लोगस्स  
पूरो कहै । पढी बेसीनें, एकवीश नवकार, प्रगटपणे सर्व जण गणे ( पढी )  
सर्वेजण, सुख थकी आवी रीतें कहेः—श्रीशेडुंजायनमः ॥ १ ॥ श्रीपुंमरीकाय  
नमः ॥ २ ॥ श्री सिद्ध क्षेत्राय नमः ॥ ३ ॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥ ४ ॥  
श्री सुरगिरये नमः ॥ ५ ॥ श्री महागिरये नमः ॥ ६ ॥ श्री पुण्यराशये न  
मः ॥ ७ ॥ श्रीपर्वताय नमः ॥ ८ ॥ श्री पर्वतेंद्राय नमः ॥ ९ ॥ श्री महा  
तीर्थाय नमः ॥ १० ॥ श्रीशाश्वताय नमः ॥ ११ ॥ श्रीदृढशक्तये नमः  
॥ १२ ॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥ १३ ॥ श्रीपुष्पदंताय नमः ॥ १४ ॥  
श्री महापद्माय नमः ॥ १५ ॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः ॥ १६ ॥ श्री सूरज  
द्र गिरये नमः ॥ १७ ॥ श्री कैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्री पातालमू  
लाय नमः ॥ १९ ॥ श्री अकर्मकत्रेय नमः ॥ २० ॥ श्री सर्वकामपूर

णाय नमः ॥ २१ ॥ ० ॥ ए सिद्धगिरीनां (२१) नाम सर्वने मुखे प्रगट कही  
ने (पत्नी) पांच तीर्थना पांच स्तवन कहेवां ते लेखीये जीये ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीलमी रायण तरुतले । साहेलमीयां । पीलमा प्रभुजीना पाय  
गुण मंजरीयां । ऊजले ध्याने ध्याइये ॥ सा० ॥ 'अहीज सुगति' उपाय ।  
गुण० ॥ १ ॥ शीतमी गायारे वैसीये ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गु  
ण० ॥ १ ॥ नाही धोर्ड निर्मल थई ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण०  
॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे ॥ सा० ॥ नेह धरीने अहे ॥ गु० ॥ ते त्री  
जे जवे शिवलहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्र  
दक्षिणा ॥ सा० ॥ दीअे अहेने जे सार ॥ गुण० ॥ 'अनंग प्रीति होअे  
जेहने ॥ सा० ॥ जवजव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल  
मंजरे ॥ सा० ॥ शाखा थरुने मूल ॥ गुण० ॥ देवतणा वासा अहे ॥ सा० ॥  
तीरथने अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मने ॥ सा० ॥ सेवो  
एहने उवाहि ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुरु जाखियो ॥ सा० ॥ शेवुंजा  
महातम मांहि गुण० इति श्री शेवुंजा स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री गिरनार तीर्थस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी कामनी दोयके कामें व्यापीयो हो० के का० ॥ ए चाल ॥  
॥ ❀ ॥ नेमनिरंजन देवके सेव सदा करूं हो लालके ॥ से० ॥ अहनिश  
ताहरू ध्यानके दिल माहे धरूं हो लाल ॥ दिल० ॥ शंख लंछन गुणखाणके  
अंजन वानडे हो० के ॥ अं० ॥ राजिमतीना कंतके पराया विणु अहे हो० ॥  
पर० ॥ १ ॥ तुंहीज जीवन प्राणके आतमरामडेहो० के ॥ आत० ॥ माहरे परमा  
धारके ताहरू नामडे हो० के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना नंदन नितुनित वंदता  
होके० नित० ॥ कीजीये करुणा वंतके कर्म निकंदना हो० के ॥ कर्म० ॥  
॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढेऊपरै हो० के ॥ रही० ॥ पहेरी शीज स  
नाह उदास ऐसी धरे हो० उदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुहें अ  
धिकं करचुंहो० ॥ तुहें० ॥ कुमरपणें धेरी धीर महाव्रत उच्चस्या हो० के ॥  
महा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेहजे तेह जेखीने होला० ॥ तेह० ॥ कर

णा कीधी केवल पशुवां देखीनेहो० के ॥ पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज  
 नारनेहो० ॥ वली० ॥ आपी संजम चार पोहोंचानी पारने हो० ॥ पो० ॥ ४ ॥  
 जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणाहो० ॥ करे० ॥ निखाहे धरी नेहके ते  
 विरजा सुण्या हो० ॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत वखाणे कविजना हो० ॥  
 वखा ॥ तुहेतो दीधो ढेहके तेहना थिरमना हो० के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादव  
 नाथ सनाथ करो मुज्जने सदाहो० ॥ करो० ॥ दिआ मुज शिर हाथ होवे जेम  
 संपदा हो० ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग दीवानें मन नही हो० ॥  
 दीवा० ॥ नाणें मन असवार, वोडो दौमे सहीहो० ॥ वोडो० ॥ ६ ॥ सवजा  
 साथे प्रीत, निवलनें नवि कही हो० ॥ निवल० ॥ पण लागीजे थोमी, किहां  
 जात्रे वही हो० ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते प्रीत न प्रंजीयेहो० के ॥  
 प्रीत० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होत्रे तो, कर्मनें मंजीयेहो० के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥  
 तो दुशमन होय दूर, कोणे नविगंजीयेहो० ॥ कोणे० ॥ प्राणाधार पवित्रके, द  
 रशन दीजीयेहो० के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीनें कीजीये हो०  
 म० ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आवृतीर्थ स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो चालोने राज गिरिधर रमवा जइयें ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ आवो आवोने राज श्री अर्बुद गिरिवर जइयें ॥ श्री जिनवर  
 नी प्रीति करीनें आतम निर्मल थइयें ॥ आवो० ॥ आंकणी ॥ विमल व  
 सहीना प्रथम जिणेसर । सुख निरखें सुख पइयें । चंपक केतकी प्रमुख  
 कुसुम वर । कंठे टोकर ठवियें ॥ आवो ॥ १ ॥ जिमणे पासे छुणग वसही  
 श्री नेमीसर नमीयें । राजि मती वर नयणें निरखी । दुःख दोहग सवि गमी  
 यें ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री ऋषभ जिणेसर । रैवत नेम समरी  
 यें । अरे दो वसिनी यात्रा करता । विहुं तीरथ चित्त धरीयें ॥ आवो० ॥ ३ ॥  
 मंरुप मंरुप विविध कोरणी । निरखी हियडै ठरियें । श्री जिन वरना बि  
 व निहाजी । नरप्रव सफलो करीयें ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ  
 आदीश्वर प्रणमी । अशुभ करम सवि हरीयें । पाश शांति निरखी जब  
 नयणें । मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम

वाधे । जेम घोडे पाखरीयें । सकल जिनेसर पूजी केशर । पाप पडल सवि  
हरीयें ॥ आवो० ॥ ६ ॥ अेकण ध्यानं प्रनुने ध्यातां । मनमांहि नवि मरीयें  
ज्ञान विमल कहे प्रनु सुपसायें । सकल संव सुख करियें ॥ आवो० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टापद गिरि यात्रा करणकुं । रावण प्रतिहरी आया । पुष्प  
क नामें विमानें वेशी । मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीयें लाल ।  
समकित निर्मल कीजें । नयणें निरखी हो लाल । नरजव सफजो कीजें ।  
हीयरे हरखी लाल । समता संग करीजे । ( आंकणी ) चउमुख चउगति ह  
रण प्रसादें । चउवीसे जिनवैठा । चउदिशि सिंहासन समनासा । पूर्वदिशि  
दोय जिछा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संजव आदें दक्षिण चारे । पश्चिमे आठ सुपासा ।  
धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो । एवं जिनचउवीशा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बैठा सिंह  
तणें आकारै । जिन हर जस्ते कीधा । स्यण विव मूरति थापीनैं । जगजश  
वाद प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ करेमंदोदरी राणी नाटक । रावण तांत बजावे । मादल वी  
णा ताल तंबूरो । पगरव ठम ठम कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जक्ति जावें एम नाटक  
करतां । तूटी तंती विचालें । साधी आप नसा निज करनी । लघु कजाशुं  
ततकालें ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य जावशुं जक्ति न खंडी । तो अह्य पद साध्युं  
समकित सुरतरु फल पामीनैं । तीर्थकर पद लाध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणि  
परें जविजन जे जिन आगें । बहुपरें जावना जावे । ज्ञान विमल गुण तेह  
ना अह निश । सुर नर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री समेत शिखर स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समेत शिखर गिरि जेदीयेंरे । भेटवा जवना पास । आत  
म सुख वरवा जणीरे । ए तीर्थ गुण निवासरे ॥ १ ॥ जवियां से  
वो तीर्थ अेह । समेत शिखर गुण गेहरे ॥ जवि० ॥ से० ॥ ( ए आ  
कणी ) ॥ समेत शिखर कलपें कह्योरे । वीश टुंक अधिकार । वीश तीर्थकर  
शिव वर्यारे । बहु सुनिनैं परिवाररे ॥ ज० ॥ २ ॥ से० ॥ सिद्ध खेत्र मांहे व  
स्यारे । जाखे नय व्यवहार । निश्चय निज स्वरूपमारै । दोय नय प्रनुजीना  
सार ॥ ज० ॥ ३ ॥ से० ॥ स० ॥ आगम वचन विचारतारै । अति दुर्ग

मनयवाद । वस्तु तत्व जिणे जाणीयेरे । ते आगम स्यादवादरे ॥ ज० ॥ ४ ॥  
 से० ॥ स० ॥ जय रथ राय तणी परेरे । जात्रा करो मनरंग । जव दुःखने  
 देइ अंजलीरे । थाये सिद्धि वधूनो संगरे ॥ ज० ॥ ५ ॥ स० ॥ समकित युत  
 जात्रा करैरे । तो शिव हेतु थाय । जव हेतु किरिया त्यागथीरे । आतम गुण  
 प्रगटायरे ॥ ज० ॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समयें सम कित थयोरे । तेह समयें  
 होय नाण । ज्ञान विमल गुरु ज्ञाखीयोरे । आवश्यक ज्ञाप्यनी वाणरे ॥  
 ज० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति चौमाशी देववंदन विधिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पर्युषणपर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें स्नात्रमहोत्सव कीजैजी । ढोल द  
 मामा जेरी नफेरी जलरिनाद सुणीजैजी । वीरजिन आगल जावना जावी  
 मानवजव फल लीजैजी । परब पजूसण पूरव पुण्ये आव्या इम जाणी  
 जैजी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम पुवालस चत्तारी अठ कीजै  
 जी । ऊपर वलि दशदोय करीनें जिन चौवीश पूजीजैजी । बरु कल्पनो  
 ठठकरीनें वीरवखाण सुणीजैजी । परवाने दिन जन्म महोत्सव धवल मं  
 गल वरतीजैजी ॥ २ ॥ आठ दिवसलगे अमर पलावी अठमनुं तप कीजै  
 जी । नागकेतुनी परै केवल लहियै जो सुजजावे रहियैजी । तेलाधर दिन  
 त्रय कल्याणक गणधर वाद वदीजैजी । पास नेमीसर अंतर ब्रीजै रुषज च  
 रित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ बारशै सुत्रनें समाचारी संवत्सरी पम्किमियेजी ।  
 चैत्यप्रवानी विधिसुंकीजै सकल जंतुनें खामीजैजी । पारणाने दिन सामीव  
 त्सल कीजै अधिक वरुईजी । मान विजय कहै सकल मनोरथ पूरो देवी  
 सिद्धाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेम राजीमती बारमाशो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीयालै खाह जलीरे लाल ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरणथी रथ फेरीयोरे लाल । नीतुर नेम कुमार । प्रेमविलूधी प  
 दमणी हो लाल । वीनवै राजुलनार ॥ १ ॥ ( हो रंगीला नेम, सुणमांहरी अर  
 दास ) । सहीयांसुं राजुल कहै हो लाल । मगसिर नायो पीउ । प्रीतम विण  
 हिवमाहरो हो लाल । धीरज न धरै जीव ॥ २ ॥ हो० ॥ पोसमहीनो आ

वीयो हो जाल । आयो मोडुख दैण । तो सूरतने सांजलाहो जाल । देखण  
तर्सैनेण ॥ ३ ॥ हो० ॥ माहमहीनो सीपमैहो जाल । प्रीतसंग पोढै नारि  
प्रीतम बिणहुं एकजी हो जाल । केमरहुं निरंधार ॥ ४ ॥ हो० ॥ होली  
खेलै हेतसुरे जाल । फागुणमें नरनारी । हुं किणसुं खेलूं हिवै हो जाल । पास  
नही जरतार ॥ ५ ॥ हो० ॥ चैतमहीने चांदणीरे जाल । संजोगण, सुख  
दैण । विरहणने बालम विनारे जाल । रोवत जावै रेण ॥ ६ ॥ हो० ॥ वन  
हरीया वैसाखमेंरे जाल । मांजररही महकाय । अरजसुणी अबला तणी हो  
जाल । तपत मिटावो आर्ड ॥ ७ ॥ हो० ॥ जेठ तपै लु आकरो हो जाल ।  
दाऊ कोमल गात । ससनेही साहिब विनारे जाल । कृण पूढै मुज्वात ॥ ८ ॥  
हो० ॥ आसाढै काली घटा हो जाल । उनमि आयो मेह । कंत मिला नि  
ज नारसुरे जाल । धरती मिलीया मेह ॥ ९ ॥ हो० ॥ श्रावण चमकै दाम  
नी हो जाल । धनवरसै ऊरुजाड । उण रत सूतां एकजी हो जाल । क्युं क  
रि रेण विहाड ॥ १० ॥ हो० ॥ काली काजाहण मिली हो जाल । जाद्र  
बडै वरखंत । अरज सुणीने साहिवा हो जाल । पूरो मोमन खंत ॥ ११ ॥  
हो० ॥ आशोजे आंसूजरे हो जाल । नाह विना निसि दीस । सारन पूढी  
साहिबे हो जाल । राखिरह्यो मनरीस ॥ १२ ॥ हो० ॥ काती द्रिढ गती  
करैरे जाल । जाइ मिली गिरनार । देखी सुख निज नाहनो हो जाल । सफ  
ल गिणें अवतार ॥ १३ ॥ हो० ॥ संयमले पीत सें हथै होजाल । पांमै न  
वनो पार । उणपर पालै प्रीतनी हो जाल । धन धन ते नरनारि ॥ १४ ॥ जे  
कीधी पसुऊपरे हो जाल । मो परिकरिज्यो देव । चंदनणी थोकरि दयाहो  
जाल । प्रभुचरणारी सेव ॥ १५ ॥ हो० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥  
इति श्री नेमिराजुल बारै मासो संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ अजीमगजे नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्त० ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ केशरियाने ज्याजको० ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ आज सखि प्रभु दर्शण में पायो । मेरो रोम रोम हुलसायो



आ० ॥ अनंत काल जब जल माहि जमतां । मिथ्या मत जमायो । कुमति  
 नारसंग इतउत मोलत । चेतन बहु दुःख पायो ॥ आ० ॥ १ ॥ पुन्य संयो  
 गै नरजवपामी । सुमति नार संग चायो । हीनपुण्यते मोह पकरकै । विषय क  
 षाय रमायो ॥ आ० ॥ २ ॥ सुगुरु प्रसादै प्रजुगुण महमा । श्रवण सुणी  
 हरषायो । अवसर पाय नेम पद पंकज । अलि जिम चित्त लुजायो ॥ आ०  
 ॥ ३ ॥ समुद्र बिजै सिवादेवीके नंदन । सहु सुर नर दिल जायो । इंद्र इं  
 द्राणी मंगल गावत । मोतियन चोक पुरायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य  
 धनी धन्यजाग हमारो । आनंद आज सवायो । तारण तरण बाल ब्रह्मचारी  
 नेम जिनंद वधायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूरव देश अजीमगंजमें । श्री संघ  
 चित्त जमायो । स्थापना चैत्य विंव की करने । जिनधर्म जगदीपायो ॥ आ०  
 ॥ ६ ॥ सिखि सागर रजनीस नंद सन् । माधव सुद मुनि जायो । श्री जिन  
 चंद सुरिंदके श्री बर । हितप्रिय मोहन गायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ १९४३, वै । सु ।  
 ७ ॥ अजीमगंजे पंचायती श्री नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ नवपद स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ जी० ॥ नवपद  
 महिमा जगमें मोटी । गणधर पारन पायरे जी० ॥ १ ॥ कर्म निकाचित  
 दूर करणकों । सुंदर सुध उपायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां  
 अजरामर सुखपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए जिनजए आगामी होयगे । नवप  
 द संग पसायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ परम कृपा शिव रमणी वरके । शमर श  
 मर गुणगायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सकल शाश्वता अशाश्वता चैत्य नमस्कार स्त० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सद्भक्त्या देवलोकै रवि शशि जुवने व्यंतराणां निकाये । नक्ष  
 त्राणां निवाशे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेंद्र स्पुटिक  
 मणिकणे ध्वस्तसांद्रां धिकारे । श्री मत्तीर्थ करणां प्रति दिवस महं तत्र चै  
 त्यानिबंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचक गिरवरे कुंभले हस्तिदंते । वहारे  
 कुट नंदीश्वर कनक गिरौ नैषधे नीलवंते । चित्रेशैले विचित्रे यमक गिरवरे  
 चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ २ ॥ श्री० ॥ श्री शैले वंध्य शृंगे विमल गिरवरे अर्बुदे पाव

के वा । सम्मते तारकेवा कुलगिरि शिखरे षापदे स्वर्ण शैले । सह्याद्रौ चोङ्क  
यंते विपुल गिरिवरे गुह्ये रोहणाद्रौ ॥ ३ ॥ श्री० ॥ आषाढे मेदपाटे हित  
तट मुकटे चित्रकोटे त्रिकोटे । लाटे नाटेच धाटे विकट घन तटे देवकूटे  
विराटे । कर्णाटे हेमकूटे निकट तरकटे चित्रकोटेच जोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥  
श्री माले मालवेवा मलपति निखले मेखले पिम्बलेवा । नेपाले नाह  
लेवा कुवलय तिलके सिंघले मेखलेवा । डाहले कोशलेवा विगलित  
सलिले जंगलेवा तवाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कर्लिंगे सुगत जनपदे  
सुप्रियागे तिलंगे । गौमे चौमे मुरेंद्रे वर तर द्रविमे उद्रीयाणे पुरेंद्रे । आद्रे  
माद्रे पुरिंद्रे द्रवियल कुवले कर्त्ति कुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥  
चंपायां चंद्र मुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोङ्कयिन्यां । कौशंब्यां कौशला  
यां कनक पुरवरे देवगिर्यां सकाश्यां । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे ऋद्वले  
तामलिप्यां ॥ ७ ॥ श्री० ॥ स्वर्गे मर्त्यत रक्षे गिरि शिखर द्वाद्रे स्वर्नदी  
नीरतीरे । शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलने चूल्हाणां निकुंजे । ग्रामे राये  
वनेवा स्थल जल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इत्थं  
श्री जैन चैत्यं स्तुति मति मनसा भक्तिभ्राजां प्रसिधात् । प्रोद्यत्कल्याण  
हेतुः कज्जि मलि हरणे ये पठंते विशिष्टं । तेषां श्री तीर्थ यात्रा फल मति  
मत्तुलं जायते मानवानां । कार्यं सिद्धिं स्तवोच्चैः प्रभवति सततां चित्त मानंद  
कारी ॥ ९ ॥ इति श्री तीर्थ माला स्तुति संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदिजिन आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपहरा करती आरती जिन आगे । हारे जिन आगेरे जिन  
आगे । हारे एतो अविचल सुखमा मांगे । हारे नाजीनंदन पाश ॥ अप  
हरा० ॥ १ ॥ तार्येई नाटक नाचती पाय ठमके । हारे दोयचरणे जांऊर  
ऊमके । हारे सोवन घूघरी घमके । हारे लेती फूदनी वाल ॥ अप०  
॥ २ ॥ तालमृदंगने वांशली रुफवीणा । हारे रूमा गावती स्वरजीणा ।  
हारे मधुर सुरा सुर नयणां । हारे जोती मुखसुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥  
धन्य मल्लदेवी मातनें प्रभुजाया । हारे तोरी कंचन वरणी काया । हारे मेंतो  
पूखपुन्ये पाया । हारे तोरी देख्यो दीदार ॥ अप० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन

परमेश्वर प्रभुप्यारो हारे प्रभु सेवक हुं बुं तारो । हारे जवो जवना दुख  
ना वारो । हारे तुमे दीनदयाल ॥ अप० ॥ ५ ॥ सेवकजाणी आपणो चित्त  
धरजो । हारे मोरी आपदा सगली हरजो । हारे मुनि माणक सुखीज क  
रजो । हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अप० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य ( तथा ) देव वंदन जाण्यमें  
मंदर जाणेंकी पूजन करनेकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घनी रात्ररहते उठके ( प्रथम ) दिलमें न  
वकार मंत्रका स्मरण करै ॥ में कोणहुं, क्या मेरी जातिहै, क्या मेरा कृत्य  
है, क्या मेरा धर्महै ( इत्यादि ) धर्म जागरणासें दिलकों सावचेत करै ( पीठे )  
मलमूत्रकी बाधा दूर करके, अंगशुचीनूत करै ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि  
करके, विधिसंयुक्त घरदेराशरकी पूजाकरै ( पीठे ) यथाशक्ती अढा वस्त्र  
आचूषण पहरके, घोना, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, चाई, बंधु  
( इत्यादि ) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख, उत्तम, द्रव्य हाथ  
में लेके । जव्यजीवोंकों मोक्ष मार्ग दिखाता हुआ, जिनशाशनकी प्रज्ञाव  
ना करता हुआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि  
शाचवन करै ( सो १० त्रिक लिखतेहै ) ( पहिला त्रिक ) ३ निस्सही )  
कहणेंका ( जिसमें ) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैशतेही कहै ( कहे पीठे )  
संसार घर संबंधी कुठजी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ ( दूसरी ) निस्सही,  
प्रदक्षिणा तीन दिये पीठे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीककरानेंकी  
सारसंज्ञाल रक्खीथी सोजीठोमै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही  
॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीठे, निकेवल जाव पूजा करै । पिण द्रव्य  
पूजा न करै ॥ ❀ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूसरा त्रिक ) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेकों प्रचूके द  
क्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ❀ ॥ ( तीसरा त्रिक ) मूल नायकजीके  
बिंबकों पंचांग मिलाके, तीन बेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ ( चौथा त्रिक ) प्र  
चूकी अंग १ । अग्र २ । जाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ ( अब  
निस्सही किये पीठे । कृत्य, अकृत्य ( तथा ) पूजा विधि, संक्षिप्त लिखते हैं ॥

निस्सही किये पीठे, मनोगुप्ती, बचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहे । पां चो इंद्रियांको बशमें रखै । गमनां गमनमें उपयोगी रहे । गीतादिक अन्य का सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखे । कुञ्जी देव कार्यकों ठोरके और कार्यकी विचारणा न करे । राज कथादि संपूर्ण विकथा ठोमे । जन्म ( और ) कर्मके अनुगत वचन न बोले ( अर्थात् ) कोईके माता पितादिक का किया था, खोटा कार्यकों प्रगट न करे ( तथा ) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोलैकों गोला ( इत्यादि वचन ) नबोलै ॥ निस्सही किये पीठे, जिन मंदरमें धर्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बोलना चाहिये ॥ ( जिसने ) मन, वचन, कायाके, खोटे व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासे कियाहे ( उसके जावसें ) निस्सही होय ( और ) जिसने दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय ( इसवांस्ते ) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठतहके उज्जल वस्त्रसें सुखकोश बांधे । धूपादिकसें अंग अपना सुध करे । जावसें, दूशरी निस्सही कहते, मुलगुंजोरैमें प्रवेश करे । जयणा संयुक्त पूजा करे । पूजा करते हुए, शरीरमें खाज न खुणें । खेल खंखार न करे । निकेवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे । प्रथम सुगंधयुक्त जेल पंचाशतसें स्रात्र करावै । सुं कमाल अठा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें जगवानका अंगलूहे । कपूर कस्तूरी मिश्रित सुध केशर चंदनका विलेपनकरै ॥ सुजवर्ण, सुजगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस, गुलाब, चंपा, चंपेली, केवना, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करे । अष्टांग धूप अगरवत्ती खेवै ॥ मंगलदीप करे । अखंरु उज्जल अद्भुतासें प्रचूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै ॥ दर्पण १ । चद्रास २ । वर्धमान सरावसंपुट ३ । श्रीवत्स ४ । मन्त्रयुग ५ । कलश ६ । स्वस्तिक ७ । नंदावर्त्त ८ । ( ऐसा ) अष्ट मंगलकी रचना करे । पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजे । सुंदर कुंकम मिश्रित चंदनसें हथोदेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अठा खाद्य फल चढावै । ( इत्यादि ) पूजाकीविधि, आरती पर्यंत । राय प्रशेणी, ग्याताधर्म कथा, जीवाजिगमादि, सिद्धांतोंमें लिख्ये सुजव करे ( पीठे ) अंतरंग जत्तीसें प्रचूके सन्मुख नाटक करै ॥ ( जैसें )

देवेंद्र, दानवेंद्र नारद, इनोंने ( तथा ) उदाई राजाकी, राणी प्रजावतीनें  
द्रोपदीनें नाटक किया ( और ) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि  
ऊपर नाटक करके, तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया ( तैसें ) प्रचूके सन्मुख  
शंकारहित होके । उत्तम पुरुष नाटक करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अब ) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै ( सो ) अंगपूजा  
॥ १ ॥ प्रचूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै ( सो ) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्र  
चूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै ( सो ) जाव पूजा  
॥ २ ॥ ( यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भिर्नत चोथा त्रिक कहा ) ॥ ❀ ॥  
( अब पांचमा त्रिक ) ॥ ❀ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिरुस्थ ( १ ) प  
दस्थ ( २ ) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिरुस्थ अवस्थाके तीन जेद ॥ जन्मा  
वस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ ( और ) केवल अ  
वस्थाको विचार करणा ( सो ) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार ( सो )  
सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ❀ ॥ ( अब षष्ठात्रिक )  
तीन दिशा ओरके प्रचूके सामनें निजर रखै । उर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिर  
गी ३ ॥ दहणी । वांइ । पिठानी । निजर नही करै ॥ ❀ ॥ ( अब सातमा  
त्रिक ) तीन बेर धरती प्रमार्जकैं । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ ❀ ॥  
( अब आठमा त्रिक ) ॥ ❀ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उ  
च्चारण करै ( सो ) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रखै  
( सो ) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रखै ( सो )  
मन शुद्धि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( अब नवमात्रिक ) ॥ ❀ ॥ तीन मुद्रा  
करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ ( इसमें )  
जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगु  
ली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा ( सो )  
जिन मुद्रा २ ॥ ( और ) दोसीपका जोना तिस आकार हाथ रखना । ( सो )  
मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान ( जय वीरराय ) इत्यादि करै  
( अब दशमात्रिक ) ॥ ❀ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन बंदन प्रणिधान १ ॥  
मुनि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें ( जो ) जावंति चे

इयाई ( इत्यादि ) इहसंतो तत्थ संताई ( तक ) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥  
जावन्ति केवि साहु ( इत्यादि ) तिविहेण तिदंन विरियाणं ( इहां तक ) सु  
नि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें ( लेके ) आज्ञवम खंमा तक । प्रा  
र्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ ❀ ॥ ( ऐसे दशत्रिकका पहला द्वार कहा ) ॥❀॥  
( अब पांच अजिगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहैं ) ॥ ❀ ॥ सचित्त  
द्रव्य कुशमादिक अपनेपास होय, उसकुं अलग रख देना १ ॥ ( और )  
राज चिन्ह, मुगट, छत्र, खमूग, चामर, पादुका, अचित्त वस्तू गोमना । आ  
चूषण प्रमुख पहस्था रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट्ट उत्तरासंग  
करना ४ ॥ जिन विंव देखतेही ( नमो जुवण वंधुणो ) ऐसे नमस्कार करना  
॥ ५ ॥ ❀ ॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥ ❀ ॥ ( अब तीसरा द्वार दो दिशीका )  
पुरष दहणी दिशा बैठा । जगवंतकों वांदे ॥ स्त्री वांड दिश बैठके जगवंत  
को वांदे ॥ ❀ ॥ ( अब चौथा द्वार तीन अजिग्रह ) ॥ ❀ ॥ अजिग्रह देव  
वांदणामें कहाहे ॥ ( जघन्य ) नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १ ॥ ( मध्यम )  
नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ ( उत्कृष्ट ) ६० हाथ दूर बैठके  
देव वांदे ३ ॥ ( अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका ) ॥ ❀ ॥ ( सो ) जघन्य १॥  
मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन जेद हे ( तिहां ) एमो अरिहंताणं ( इत्या  
दिक कहके ) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना  
( ए जघन्य चैत्य वंदन १ ) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंरुक ।  
नमोत्थुणंसें ( लेके ) अरिहंत चेइयाणं ( इत्यादिक संपूर्ण कही ) एक  
स्तुति कहै ( सो ) ॥ मध्यम चैत्यवंदन ( तथा ) कोई आचार्य कहै ॥ पांच  
दंरुक सहित । थूई गाथा ( ४ ) कहै ( सो ) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ ( तथा )  
विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंरुक । जय वीयराय पर्यंत । आठे थुई ए  
देव वांदे । ( सो ) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहिये ॥ ❀ ॥ ( अब छठा द्वार  
पंचांग प्रणिपात करै । दो जानु । दो हाथ ( और ) मस्तक ( ए ) पांच  
अंग मिलायके जमीनमें लगावै ॥ ❀ ॥ ( अब सातमा द्वार ) ॥ ❀ ॥ जय  
न्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक ( तथा ) काव्यसें प्रचू  
की स्तवना करै ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



## ॥ ❀ ॥ अथ मोटी पंचतीर्थ आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली रे आरती प्रथम जिणंदा । शत्रुंजय मंगण रुषन जिणं  
दा ॥ जय जय आरती आदिजिणंदकी ॥ दूसरी आरती मरुदेवी नंदा ।  
जुगला धरम निवार करंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ तीशरी आरती त्रिभुवन मो  
हे । रत्न सिंघासन मारा प्रभुजीनें सोहे ॥ जय० ॥ चौथी आरति नित्य  
नवी पूजा । देव रुषन देव अवर न दूजा ॥ जय० ॥ २ ॥ पांचमि आर  
ति प्रभुजीनें आवे । प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ ❀ ॥  
आरती कीजें प्रभु शांति जिणंदकी । मृगलंठनकी में जानुं बलिहारी ।  
जय जय आरती शांति तुमारी । विश्वसेन अचिराजीको नंदा । शांति  
जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरति कीजें प्रभु नेम जिणंद  
की । शंख लंठनकी में जानुं बलिहारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिव  
देवीको नंदा । नेमि जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरति  
कीजै प्रभु पाश जिणंदकी । फणिंदलंठनकी में जानुं बलि हारी ॥ आ० ॥  
अश्वसेन वामा देवीको नंदा । पाश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०  
॥ ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिणंदकी । सिंह लंठनकी में जानुं ब  
लिहारी ॥ आ० ॥ शिंघारथ त्रिशलाको नंदा । वीरजिणंद मुख पूनम  
चंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरति कीजें प्रभु चोवीश जिणंदकी । चोवीश  
जिणंदकी में जानुं बलिहारी । चरणकमल नित सेवत इंदा । चोवीश जिण  
द मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कर जोमी सेवक इम बोले । नहि  
कोइ माहरा प्रभुजीनें तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥



